पद्मावतीखण्ड

अर्थात्

दिल्ली के राजा पृथ्वीराज ने अत्यन्त युद्ध कर
रानी पद्मावती के साथ
विवाह किया

और

आल्हखण्ड

जिसमें

आल्हा ऊदल का सङ्ग्राम पृथ्वीराज से
अति उत्तम छन्द प्रबन्ध में रचित है

श्रीयुत मुन्शी नवलकिशोर अवध समाचार
सम्पादक ने अति प्रबन्ध से शुद्ध कराय

स्थान लखनऊ
स्वकीय यन्त्रालय में छपवाया

अप्रैल सन् १८७५ ई
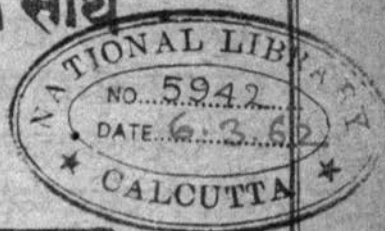
श्रीगणेशायनमः

॥ अथ पद्मावती खंड लिख्यते ॥ दोहा ॥

पूरब दिशि गढ़ गढ़नि पति समदि सिखबि गढ़ दंग।
विजे पाल राजा रहत जद्दव कुलहि अभंग ॥१॥ हय
वितुंड जांके बहत पातशाहि जिमि चाल ॥ प्रबल
भूप सेवत रहत कहत करत सो हाल ॥ छप्पै ॥
घन निसांन बहु साथ नाद सुर बजत पंच दिन ॥
दस हजार हय चढ़त हेम नग जटित साज तिन।
गज अनेक सत पांच प्रबल सेना तहं लक्खिव्व ॥
इक नायक जहं दलन चलन सामंत सुर किव्व ॥
दस पुत्र एक दारा विमल दया धरम चौकस सुघर ॥
भंडार लक्ष मालिक अधिक पद्मसेन कुंमर सुघर
दोहा ॥ पद्मसेन कुंमर सुघर ता घर नारि सुजान ॥
ताघर इक पुत्री प्रगट मनहु कला शशिभान ॥२॥
छप्पै ॥ मनहु कला शशिभानु कला की मनौ कला
भय ॥ ताल बैस चित चतुर बिमल सुंदर सुचाल
गय ॥ बदन कमल कल कलित नैन खंजन मृग
लुट्टिव ॥ अलक उरग दुति मिलित मुनिन लब मुख
पर छुट्टिव ॥ कवि चंद देह हाटक हटक बिधि बि-
चारि सांचैं सचिय ॥ पद्मि निय रूप पद्मा वती मनो काम
कामिनि रचिय ॥ दोहा ॥ मनहु काम कामिनि रचि
य सची रूप की रासि ॥ पसु पक्षी सब मोहनी सुर नर
मुनि हिय पासि ॥ सामुद्रिक लक्षण सकल चौसठ
ठि कला सुजान ॥ षोडस रति मैं अति निपुन ऋतु
बसंत परिमान ॥ सखिनु संग खेलति फिरति दो-

लति बाग निवास ॥ बरस बैस षट ऋतु पलटि ज
नम बसंत प्रकास ॥ छप्पै ॥ दिवस एक चहुं आन
कीर आयो तिहि देसह ॥ सरस बुद्धि गुण वलित
बहुत विद्या इति वेसह ॥ नगर मध्य इक बाग सघ
न सुंदर अवास जहें ॥ कोकिल कें कीकल कपोत
कोइल बोलति तहें ॥ तिहि बाग जाय बैठ्यो चतुर
जिहि कुमारि खेलति अछन ॥ सह चरित्त सहित
हिय हेरि लिय देखत भयो हुलास मन ॥१॥ मन
अति भयो हुलास विगसि जनु कोटि कमल वन ॥
अरुण चौंच अति अमल पोंख सुंदर सुढार तन ॥
इह चाहत चित चकित कहति अब पकरि कोरि कर
चुगन लोभ दे पकरि कुमरि जब गहिव अपु कर॥
हरषित अति हि सुवाल वह हुलसि ले जु भीतर ग
इय ॥ पिंजर अनूप पन्नग जटित तिहीं महल र-
क्खत भइय ॥ दोहा ॥ तिहीं महल रक्खत भइय ग
इय खेल सब भूल ॥ चित चहुं औया कीर तें राम प-
ढावत इल ॥ कीर कुंवरि तन निरखि कै नख सिख
भेष अनूप ॥ करता करी वनाय कें इह पद्मिनी सरू
प ॥ हरषि कीर मन हुलसि कै पायो सुख जिहि ठांम ॥
दिय असीस पृथी राज वर मिलो पद्मिनी वाम ॥४॥
छप्पै ॥ मुख सरोज पग पान अंग हाटक समान हद
॥ कमल गंधवय संध हंस गति चलति मंद मंदासे
त वस्त्र सों हेत अंग नख सिख सोभित अस ॥
भ्रमै भ्रमर भूले सु वास मकरंद वास रस ॥ नैंन
नि विलोकि इह रूप अस दिय असीस अज्ञानकर

उभया प्रसाद हरि हेरि हिय सु तोहि मिलिय पृ-
थी राज वर ॥ अरिल्ल ॥ पुच्छन्ति बैन सुवालं ॥ उच्च-
रि कीर संचि संचालं ॥ कौन देश पृथी राज नरेसं ।
कौन गोत को कुल उप देसं ॥ कौन राज राजा रज
पूतं ॥ को कल पूर कौन को पूतं ॥ कैसो बल कैसी-
संग सेना ॥ को जीत्यौ राजा सु कहेना ॥ तव उच्चरि
कीर सु वैनं ॥ हिंद मान दिल्ली गढ ऐनं ॥ अनहुं इंद्र
अवतार ॥ प्रथी राज चहुआन सुभार ॥ छंद पद्धरी ॥
पद्मा वती कुवरि सुनिये सुगात ॥ द्विज कथा कहत
सुनि सुनि सुवात ॥ हिंद मान थान उत्तम सुदेस ॥
जहां उठति दुग्ग दिल्ली असेस ॥ संभरि नरिंद चहु
आन थान ॥ प्रथी राज राज राजै सुभान ॥ वैसं वरी
स षोडस नरिंद ॥ अज्जान बाहु जिमि लोक इंद ॥
सामंत सूर सवही अपार ॥ भुज्जान भीम जिम सा
रधार ॥ जिन पकरि साह साह्य वहीन ॥ तिहि वेर
पकरि तिहि वेर कीन ॥ सिंधिनि सुनाय गुन चढि
जे वीर ॥ चूकैन शब्द भेदंत तीर ॥ वलि वेन करन
जिमि दान पान ॥ सत्तहि सलीन हरि चंद समान ॥ स-
हस्स सुधा विक्रम सुवीर ॥ दानव समन अवतार
धीर ॥ दह सुनो राज की कथा रूप ॥ कंदर्प जिमि
अवतार भूप ॥ दोहा ॥ काम देव अवतार हुव सुनि
सोमे सुर नंद ॥ सहस किरन सुख रूल सुल हिं अ
तु वसंत वर चंद ॥ सुक समीप मन कुंवरि को लग्या
बचन सों हेत ॥ अति विचित्र पंडित सुआ कथ्थत
कथा अनेक ॥ वैसं वरि सत त्रास करि अगिरा कि

यो बसंत ॥ मात पिता चिंता भई सोधि जुगति को कं-
त ॥ छपै ॥ सोधि जुगति को कंत चित्त जब कियो
चहूं दिस ॥ लियो बिप्र गुरु बोलि कही समझाइ बात
अस ॥ नर नरिंद गढ़पति बड़े गढ़ दुंग असेसह ॥
सील वंत कुल सुद्ध देहु कन्या सुनरेसह ॥ तब च-
लिव देव द्विज लगुन धरि सगुन अनेक बिचारि मन।
आनंद उछाह सु मंद मंद स्वरे बजत आनंद घन ॥ दो
हा ॥ फिरयो देस देस नि भिसुर गयो. कमाऊं कूल ॥
तहां एक राजा रहत धरम जीत रन झूल ॥ सवा ला
ख सेना प्रबल गढ़ उतंग बहु दंग ॥ राजन राज कमो
दमनि हय गय भंग अभंग ॥ जहां जाय दीनी लग-
न सुंदर बर सुकुमार ॥ रीझि बिप्र मन हुलसि कैं-
आनंद मानि अपार ॥ छंद भुजंगी ॥ बिहंसि बार-
लगुन लीनी नरिंदा ॥ जहां बाजिये द्वार आनंद दुंदा।
हयं पांच पीलं उभे सोस तंगं ॥ कुहर पांच से माल
मोती उतंगं ॥ बड़े थान खासेन कें बाफता के ॥ दुदा
मी सरस डोरिया नाम जाके ॥ ऐसे साज आये लगुन
साथ भारी ॥ लये भर्म जीते सबै सो संभारी ॥ दिये दा
न बहु ते बड़ो हर्ष कीयो ॥ भई ब्याह त्यारी बड़ो काम
लीयो ॥ बिदा बिप्र कीसो सबेरै कराई ॥ दई द्रब्य एके
हजारं सुहाई ॥ दई एक घोरी चरचि चंचलाई ॥ स
रसि सुंदरी चंद्र मानो कलासी ॥ दिये दान कपड़ा न कें
पांच आछे ॥ किये सो बिदा बिप्र संअर्पि साछे ॥ च
ले सुकल पाई बिदा बिप्र ह्वै कै ॥ सबै सौज कों सगहीसा
जु लैं कै ॥ गये धाम अपने पदम सेन पैकूं ॥ कही जा

य बातें बड़ा सुक्ख पैकूं ॥ गये पत्र कोले फिरे देश दे-
शं ॥ मिल्यो नाहि कोई सुघर सो नरेशं ॥ लख्यो ए
क राजा हमनि है कमाऊं ॥ बड़ी फ़ौज जाके बड़ो
सूर साऊ ॥ बड़े देश में राज राजा बिराजे ॥ सबै देश जा
नैं धरम जीत राजे ॥ दई जाय हम ने लगुन सो जहांही ॥
बड़ो कोट जाको कह्यो है लखाही ॥ सुनी बात राजा ब
ड़ो सुक्ख पायो ॥ सबै ब्याह को साज हाले करायो ॥
इतें ह्यां बराती सजें खूब खासा ॥ भई ब्याह त्यारी स
बै सो हुलासा ॥ सबै देश से संसुन्यो ते पठाये ॥ किते
राज राजा बराती बनाये ॥ गढ़ों के पती भूप आये
सबैही ॥ बनी हैं भली सो बरातें जबैही ॥ दोहा ॥ जु-
री बरात हजार दस सुंदर बर सु अनूप ॥ हाथी सा-
जे डेढ़से चले पचीस क भूप ॥ छंद मोती दाम ॥ च
ले सब भूप बरात बनाय ॥ सजी सब फौज हिये धरि
चाय ॥ सजे सब रंग अनेक बरंग ॥ लिये कर शस्त्र स
बै सु अभंग ॥ लई किर वान कमान जु वान ॥ लई सं
ग तोप बंदूक ममान ॥ सज्यौ बरना कर कंकन बांधि ।
धस्यो सिर मौर अनूप समाधि ॥ भयो अस बार गयंद
नि पीठि ॥ चले संग साजि बरात सुनीठि ॥ सजी संग
सो सह नारि समाज ॥ बजे तुरही मह नारि अवाज ॥
चले नर सिंह अरब्बी अनेक ॥ घेरे सुर होत गही इह
टेक ॥ तबै पहुंचे दिशि पूरब जाय ॥ लख्यो गढ़ आपुस
बै सुख पाय ॥ दोहा ॥ सम दसि खबर आये निकट दे-
ख्यो गढ़ सु बरात ॥ खेत लियो डेरा दियो सबै संग हर
पात ॥ छंद भुजंगी ॥ सुनी सो बिजै राज राजा सु जानं ॥

मिल्यो आय आगें बरातें अमानं ॥ कियो खेत आदं भये सो खुस्यालं ॥ बजें दुंदुभी और बाजे सुहालं। नचें पातुरें सो बराती न आगे ॥ कहूं डोम डाढ़ी क रें राग रागें ॥ कहूं भांड नकलें करें सो बनाई ॥ हंसा वें बराती रिझाई रिझाई ॥ कहूं तोप छूटें सला के भ डाके ॥ कहूं खेल खेलें लड़ा के लड़ाके ॥ पदमा व- ती बिरहिनी बाल बेली ॥ कही कीर सों बात हूं के अ- केली ॥ जाहु तुम कीर दिल्ली सुदेशं ॥ बरं जो चहूं आन आन्यो नरेशं ॥ दोहा ॥ आन्यो वर चहुं आन नर कहियो यही संदेश ॥ स्वासरीर इह तो रहे पिय पृथी राज नरेश ॥ छपै ॥ पिय पृथी राज नरेश जो- ग लिख कागद दीनव ॥ लगुन बार गुर रची वदी द्वा दशी जु लीनव ॥ ग्यारह से चाली ससारिख सु मुद ह परि मानह ॥ जो सत्रिय कुलीन बरति बर राखो मा नह ॥ देखंत देश बड्डु घरिय पल एक पल बिरम न- करिय ॥ अलगा देरेनि दिन पंचमी ज्यों रुकमिनि कं- न्हर बरिय ॥ दोहा ॥ ज्यौं रुकिमिनि कन्हर बरिय त्यों बरि संभरि कंत ॥ सिव मंडप पच्छिम दिसा पूजि समे सामंत ॥ पत्री ले करि सो चल्यौ उड्यौ गगन गहि वा हु ॥ जहां दिल्ली पृथी राज बर आठ जाम में जाहु ॥ दिय कागद नृप नाथ कर खोलि बंचि पृथी राज ॥ सूआ देखि मन में बिहंसि कियो चलन को साज ॥ छपै ॥ वहे घरी पल वहे वही दिन वही बेर सजि ॥ सकल सूर सामंत लिये सब बोलि बंब बजि ॥ अरु कवि चंद अ- नूप रूप सर सै गर कंठह ॥ अमर सेनि से पांच सहस

सेना तहाँ अंठइ ॥ चामुंड राय दिल्ली धरइ गढ पति-
करि गढ भार दिय ॥ अलगार रैनि पृथी राज जब पू
रब दिसि पर गवन किय ॥ दोहा ॥ आठ सहस अस
वार सजि परस्थान नृप कीन ॥ पूरब दिसि पर गवन
किय सुआ बचन सुनि लीन ॥ जहिन सिखरि
बरात गई तहिन गये पृथी राज ॥ ताही दिन पति
साह पर भई सु आनि अवाज ॥ छपे ॥ भई सु आ
न अवाज चढ़िब साहा वदी नगजि ॥ खुरा सान सु
ल तान कास काबि लिय मीर सजि ॥ जंग जुरि ब जा
लिम ह जुकार भुन सार भार ह्रुअ ॥ घर घक वर सेंस
घन गगन रविंलो पर ने भुअ ॥ उलटि व प्रवाह जर
सिंधु सर रोक राह आंगें रहिव ॥ तिहि घरिय राज पृ-
थी राज वर चंद बचन इहि बिधि कहिव ॥ निकट न
गर जब गये बजाय वर वंधु उभय भय ॥ समद सिख
र गढ़ दुंग देवि बहु सोर घोर गय ॥ अगमानी अ
गमान कुमर बरनी वर साजत ॥ देखन कों गग धव
ल चढ़त छाजत छवि राजत ॥ बिलखति अवास
सुंदरि बदन मनहु सूर छाया जुरय ॥ देखंत पंथ दि-
ल्ली दिसा लखिय फौज पृथी राज पथ ॥ छंद पद्धरी ॥
देखंति पंथ दिल्ली दिसान ॥ सुखभयो कीर आयो सु-
थान ॥ संदेश सुनत आनंद मन ॥ उमंगि मंग भग म-
त्य नैन ॥ तन चिकटि चीर डारो उतार ॥ मंजनि
मयंक करि सत सिंगार ॥ भूषन मंगाय नख सिख
अनूप ॥ सज्जिय सेंनि सब बाल भूप ॥ सोवरण था-
र मुतियन भराय ॥ रूल मल करत दीपक जराय ॥

संग सखिय लई सुंदर अपार ॥ चलि गवरि पूजि वे कों करार ॥ दासी अनेक संग सहस बाल ॥ पद्मिनिय चाल साज ति मराल ॥ गई शिव के थान मन मन खुस्याल ॥ पृथी राज फौज लखि नैंन बाल ॥ पूजियो गवरि शंकर मनाइ ॥ दक्षिणा मयंक करि लगी पाइ ॥ कर जोरि कहति पद्मिनि सुभाइ ॥ पृथी राज मोहि बर देहु माइ ॥ शिव पूजि निकसि वाहिर सु बाल ॥ चितई सु नैंन चंचल विशाल ॥ पृथी राज देखि पद्मिनी ओर ॥ भये च्यारि नैंन आनंद बोर ॥ हय गय भगाय. जहां बीच नारि ॥ डर नेंक नाहि मन में विचारि ॥ चहूं ओर देखि पृथी राज राय। हय पकरि पीठि लीनी चढ़ाय ॥ लै चल्यो नारि दिल्ली सुराय ॥ भई खबरि नगर बाहिर सुनाय ॥ पद्मावती सुइह लिये जाय ॥ सगरी बरात पाछे पराय ॥ वाजी सु बंध हय गय पलानि ॥ दौरे जु, सूर चढ़ि दसवि सानि ॥ तुम लेहु लेहु मुख चंपि जोध ॥ सन्नाह सुनत सब पहरि क्रोध ॥ आगें जुराज पृथी राज राज ॥ पाछें सुभाय सब सेनि साज ॥ पृथी राज लोग रख पूत सूर ॥ सब जात चाल सूधे सहूर ॥ पहूंचे जु जाय ताते तुरंग ॥ भुव भिरन भूप जुरि नेध जंग ॥ उट्ठी जु राज पृथी राज वाग ॥ पलटे जु सूर धर धसक लाग ॥ कम्मान वान छूटत अपार ॥ लागंत तीर जि मिसार धार ॥ सामंत सूर सब काल रूप ॥ गहि लोह छोह वाहत अनूप ॥ लेकरि कृपान गहि देत कंध ॥ कटि जात मुंड डोलत कबंध ॥ कहुं मारु मारु हुइ सब्दहो

त ॥ कहूं पकरि पकरि मारत उद्योत ॥ कहुं बान
चलत कहुं सांगि सेल ॥ कहूं तीर वीर कहं रेल पेल ॥
कहूं रुंड मुंड धरनी परात ॥ कहुं सूर बीर धीरें लरात ॥
भई मारू मार रुंरि दुहूं ओर ॥ बाजंत लाग दम दम
रुकोर ॥ घम सान घान भयो वीर खेत ॥ घन ओरण
वहत जहां रक्त रेत ॥ मारे बरात के जोध जोड़ ॥ भ-
ये रुंड मुंड अति क्रोध होड़ ॥ दोहा ॥ परे रहसि रण खे
त अरि कवि दिल्ली रुख सुकख ॥ जीति भई पृथी राज
की सकल सूर भयो सुक्ख ॥ पद्मावति अवंले चल्यो
हरषि राज पृथी राज ॥ एते पर पति साह पर भई सुआ
नि अवाज ॥ छप्पै ॥ भई सु आनि अवाज चढ़ि वसा
हाव दीन सुर ॥ आजु गहूं पृथी राज वोलियो वोल ग
जुं धुर ॥ क्रोध सूर पृथी राज उतह साहाव अनी सजि ॥
वान तोप तरवारि तुपक अरु तीर वीर गजि ॥ है-
अगार चहुं आन कें भरन खुप गज सेन छल ॥ आ
यो हंकारि किल कारि कें खुरा सान सुल तान दल ॥
छंद भुजंगी ॥ खुरा सान सुल तान खंधार भीरं ॥
बढ़ कसी वली तेंग औ अचुर चीरं ॥ रुहंगी फिरंगी
तिलंगी मसानी ॥ ठटी ठट्ठ वाली चढ़ी लेनि सानी ॥
सुजारं चखी वीच उज वक कलारी ॥ हजारं हजारं
हके जोध भारी ॥ तिनें पाखरं पीठि हय जीन सालं ॥
फिरंगी कती फास कन्ना सलालं ॥ रुहेले बड़े ज्वा
न पट्ठा नवीरं ॥ मुगल शेख सैयद भये क्रोध धीरं ॥
जहां वाघवा खंवरी अरर फौरें ॥ घमं सान संधान १
मं चीर ढौरें ॥ हयं रंग रंगं अनेकं वखाने ॥ अनेकं

कुली खूब खासा ममाने ॥ ऐराकी अरब्बी पंठ ते-
ज ताजी ॥ तुरक्की कुही और कुम्मैत वाजी ॥ खुरा
सान के और मग सीखरेई ॥ सुमहती सुनहरी बदा-
मीहरेई ॥ हरे हांसुला हंस सुरखा समाजें ॥ बने बो-
र अबरख सुकच्छी बिराजें ॥ ऐसे अश्व असवार अ-
गोल गोलं ॥ भये भूप जेते ति ताता तमोलं ॥ दिसा
वाम साही ममेरेज पायं ॥ दलं दूबि दौरी हफे कोह-
कायं ॥ दस सहस असवार अग्गोल गोलं ॥ दिसा
दाहिनी बीर तातार मोलं ॥ किये गोल ज्वानं सबै जो
धधाये ॥ महा क्रोध ह्वै कें सु आयुध चलाये ॥ चहूं
घेरि पृथी राज राजा सुराजं ॥ चहूं ओर घन घोरनी
सानवाजं ॥ छप्पै ॥ बजे घोर नीसान रण पर आनि
चहूं दिशि ॥ सकल सूर सामंत रहे बलवंत मंत्र
मिशि ॥ उठि राज पृथी राज बाग मनु वीर छटा नटि
काढ़ति तेग अति वेग बहति जहौं श्रोण नदिय कटि
थकि रहिव सूर कौतुक गगन रंगन मगन भयो सू
रभर ॥ पचरंग रंग भयो खेत तस हूर वरंग निवरति
बर ॥दोहा॥ हूर सब बर तिनि बरति बर भये जोध अ
ति चिन्न ॥ निसा सूर समरुक परेन को हारौं कोजि
न्न ॥छप्पै॥ नको हार्यो कोजिन्न रहे रण वीर सूर
नर ॥ घायल बहुत अचेत बिहति जनु श्रोण भनहु
सर ॥ कहुं कबंध कहुं कंध कहूं कर चरन अंतपुर
कहुं कण्ठीव लगितेग कहुं सिर टुट्टि फुट्टि उर ॥ कहुं
दंत सुंडि कहुं धर परयो कहूं अनेक है बर बहर ॥ खे
त भयो पंचरंग जहां लाल लाल भई श्रोण धर ॥ दो-

हा॥ लाल लाल भई श्रोण धार जुरे मीर खाँ बेग॥ पृथी राज संभरि धनी गही फेरि कर तेग॥ जुरी रारि फिरि जुग दलनि छूटति तोप कमान॥ चाहू आन फिरि पलटि कें गही हाथ किर वान॥ छंद भुजंगी॥ गही तेग चहू आन हिंद मान राना॥ गजू जोध परि कोपि के हूरि समाना॥ करै मारु मारु लडें सूर सूरं। करं ले कटारी लडें चूर चूरं॥ किते ले बरच्छी हनें हीक आई॥ किते खाय छाती गिरें भूर छाई॥ किते सूर मुगदर फिरावें लगावें॥ किते फूटि मुंडं परे सो सभा मैं॥ किते वीर कम्मान ले खैंचि मारें॥ किते सूर बीरं सिरं तेग मारें॥ लगै खंजरं खैंचि ही कंपि धावें॥ मनों माठ जावक तलूली चलावें॥ लगै सीस गुरजं सिरं चूर होई॥ परें टूट धरनी लगै जामें सोई॥ किते खैंचि तेगं लगावें संभारी॥ गिरें मुंड धरनी सचें रुंड भारी॥ किते बान रानं चला मंत जानं॥ किते तोप आपें चला में अमानं॥ किते एवा कों एक पकरंत वीरं॥ फिरामें पकरि खैंचि मारें सुधीरं॥ किते कायरं खाय भे आद भाजें॥ लडें सूर केते रणं लाज लाजें॥ उतैं मीर खां बेग हरि बल पठानं॥ इतै कन्ह चहू आन सेना सुजानं॥ दुहूं ओर तें सूर पठान धाये॥ गर्द तें गगन भान लोपं लुकाये॥ उतै आद पठान नें तीर मारयो॥ कुंवे कन्ह खरगं सिरं जाय रायो॥ गिर्यो मुंड पठान को रंड मुंडं॥ पर्यो जाय धरनी भयो वीर दुंडं॥ तबै साहि की फ़ौज नें घात खायो॥ पृथी राज राजा रणं रोष आयो॥ लयो दौरि कें

न्हं भज्यौ शाह जातो ॥ चढ्यौ सो गयंद गह्यो कंन्ह हातो ॥ दई सागि पीलं गयो बैठि ह्वांहीं॥ लियो साहि कंन्हं पकरि कै जब्बोंहीं ॥ धर्यौ पीठि हय कीपकरि साह लीयो ॥ पृथी राज के पासही आय दीयो ॥ पकरि साह कों कूंच कीयो जँवेई ॥ परे खेत रजपूत ए पान सेई ॥ पठानं परे सात हज्जार जंगं ॥ गये भाजि के नेकं अल्ला वदंगं ॥ दोहा ॥ भई जीति पृथीराजकी पकरि साह लियो संग ॥ दिल्ली पति मारग चले उतेर घाट सुजंग ॥ वरि गोरी पदमा वती गहि गोरी सुलतान ॥ पृथी राज आयो दिली छत्र भुजा चढ्ढ आन ॥ छपै ॥ वोलि विप्र दिन सोधि लगन सुभ घरी विचारिव ॥ हरे बास मंडप बनाय करि भामरि पारिव ॥ ब्रह्म बेद उच्चरिय समद चौरी रचि पानह॥ दुलहनि पद्‌मिनि परम धरम दूलह चढ्ढ आनह॥ बहु दान दीन जाचक जननि हय गय मनि मानिक सुरहि ॥ कबि चंद राज पृथी राजनें या प्रकार पदमिनि बरहि ॥ दोहा॥ घायल परे अचेत रण अरु गुण संजवि जानि ॥ भये चेत जेते रहे दिल्लि हि चले बिहान ॥ सोमग भूले परि गये बाट गहोवे माहि ॥ विकल बहुत मोंहे सु नर कछू भई सुधि नाहि ॥ बाग मध्य डेरा कियो राज वरे परिमाल ॥ बरजे मालीनें जहों पत्थर दियो कराल ॥ लग्यो आय रजपूत के रिस करि दीनी तेग ॥ गिरो सीस कटि झुकि धरा मर्‌यो सुमाली वेग ॥ इति श्री सुकवि चंद विरचिते श्री आल खंड की सूचिका की भूमिका श्री पद्मा वती खंड संपूर्णम् ॥

श्रीगणेशायनमः

अथ आल खंड लिख्यते॥दोहा॥

कहत चंद गुण छंद पढ़ि क्रोध चदंगलसोइ॥चहूं आ
न चंदेल कुल कंदल उप जन होइ॥चहूं आन पूछ-
त वगदि कौंन बरस किनि मास॥कौन वार को तिथि
सुकवि कौ विचार निवास॥ग्यारह से चालीस इक-
जुद्ध अतुल भर होइ॥कातिक सुदि बुध त्रोदसी सभ
र सांमिला लोइ॥आठ सहस अस वार सजि पर स्थान
नृप कीन॥पूरब दिसि पर गवन किय सुआ बचन
सुनि लीन॥छप्पै॥समद सिखरि गढ़ पर नि राज
दिल्लि य दिस चल्लिव॥पात साहि सुनि खबरि धाय
विच हीरण मिल्लिव॥सकल सिमिटि सामंत चंदक
य मास बुद्धिवर॥लहि वजुद्ध चहूं आन गहिव प्रथीरा
ज अप्पु कर॥रजपूत टूट पंचासरण लुट्टियबर सेना घ
निय॥पट्ठान साठि हज्जार पर जीति चल्यौ संभरि धनि
य॥१॥चौपाई॥राजा दिल्ली दिस चढ़ि आइव॥
चूकी राह वहीर सु भाइव॥घाइल आय महोंवे पान-
हा॥सोपरि माल सुनी इह कानह॥छंदपद्धरी॥वरनी वि
वाह चहूं आन रान॥जब सुने बचन निज कवि भखान॥
जद्दव गंभीर भनि यो वीर॥कंमोद मनी जीती गहीर॥
रण कटिव पंच दस है हजार॥जादौं कमोद मनि करिहु
तार॥सुलतान पकरि लिये नृपति आइ॥रूसमन्त ताप
मिटि गये ताइ॥जुग्गिनि पुरे सदि सरतिय पाइ॥भू
ली वहीर महुवें सु आइ॥घायल पचास रजपूत संग॥
दासी सु मंजरी अति अनंग॥पहुंचे सु महोंवे निकट-

आइ॥ बरसै सु मेघ बूंदन अघाइ॥ भये बिकल लो
ग घायल्ल उताप॥ नृप बाग मान चलि गये आप॥
जहां महल बने अनेक नेक॥ कलमलत जोध च
ढि चढ़ि वनेक॥ वरजियो आय मालीन सोइ॥ वो-
लियो वोल अति क्रोध होइ॥ गारी सुदीन उभ झारि
हत्थ॥ फेंको सु एकु पत्थर समत्थ॥ लाग्यो सु आ-
बू रज पूत सीस॥ धायो सुतेग कटि कटि बरीस॥ दी
नी सुधाय दुहुं हत्थ सोइ॥ ऊड़ि परयो मत्थ धरनी सु
होइ॥ भई कुक सुनी परि माल राज॥ पठाइ जोध करि
हुकम साज॥ चंदेल घैस जाधरा सूर॥ चेरे सहसक
ल मले नूर॥ सो लखी जादव चढ़ि नरेस॥ सजि ग-
हर वार गोडुल असेस॥ बरजियौ बना फल जुद्ध ताइ
कों करत बैर चंदेल राइ॥ पृथी राज लोग घायल ग
हीर॥ आई जुयान भाजी बहीर॥ बैरीजु आइनिज
स रनि लेहि॥ बोलिये नाहि जौ दुक्ख देहि॥ चहुं आन
नाहि आपु कौ सत्र॥ तिन पैन राज बांधिये अत्र॥ प-
रिमाल उच्चरि वसुनों आल्ह॥ विन चूक मारि माली
कराल॥ काल्हि कों आय पृथी राज सूर॥ मारि हैं औ
र काहू हजूर॥ बरजियो बना फल जुद्ध ताइ॥ हरिवा
स वघेलौ बिरचि भाइ॥ आये सुसाजि दर वार सूर॥
रानी मल्हन बोली हजूर॥ तुम इनैं जाद कुन कीं सभा
ज॥ छत्रीन धर्म इन नाहि राज॥ ऊंचे अवास कुजे
स सुद्ध॥ परि माल तहां बैठे बिरुद्ध॥ मालिनि पुका-
रि कीनी नवीन॥ परि माल फौज पर हुकम कीन॥
दोहा॥ पकरि बाग रज पूत सब क्रोध जानि परि माल।

सिर लाग्यो आकास सों पाइ लगे पाताल ॥ छंद मोती
दाम ॥ कियो परि माल हुकम सु गाजि ॥ चले सब रा
वत जंग पै साजि ॥ चंदेल बना फल सुख्ख सु सूर ॥ व
घल वंगोइ रहैं रुक कूर ॥ चले भर आंघर मल्हन सो
इ चले भर जद्दव मद्दव होइ ॥ चल्यौ हरि दास बघेल
सिलिट्ठ ॥ सुचारिय सेनि उच्चारिय दुष्ट ॥ निवाजिय बै-
स चंदेल हुकम्म ॥ सनम्मुख सत्र सु अत्र भिरम्म ॥ सुनी
रजपूत निवात कुढंग ॥ वधे बपु धाइ उताय उतंग ॥
कसैं रजपूत सुन्यो जब घेरु ॥ कही परि माल करो जि
निबेरु ॥ सुनै चहुं आनन छाडि है दाउ ॥ करो मति
जुद्द चंदेल न राउ ॥ करो पृथ्वी राज सुकाज विरुद्ध ॥
भजौ तजि खेत जुरें जब जुद्ध ॥ दूती सुनि बैन कियेरत
नैन ॥ कही नृप मारिहु मारिहु ऐंन ॥ चली सब साजि
चंदेलनि फौज ॥ मिले रजपूत सु सनम्मुख चौज ॥ भई
जब दृष्टि सुदृष्टि करूरि ॥ मिले रजपूत सनम्मुख पूरि ॥
मिले मुख आइ सुछल्ल जुवान ॥ उल्हंन आस खियं
क्रोध अमान ॥ लगे सर साइक छत्रिय आइ ॥ किधौं
बिष आसिय पासिय पाइ ॥ लगें उर सांगि सकत्ति-
य सेल ॥ करैं दुहुं बीर दुही मुख खेल ॥ कट क्कत घाइ
ल खग्गनि खाइ ॥ खट क्कत सेल नि खेल न राइ ॥ क
ट क्कत गोटनि गिद्धि नि दौरि ॥ घट क्कत घाइल दाहि
मरोरि ॥ नट क्कत नाचत घाइ सुछाल ॥ चट क्कत चौं-
प गही कर माल ॥ छुट क्कत सूर धरा पर धाय ॥ जट
क्कत जूथ नि जुग्गिनि चाय ॥ फट क्कत एक नि कोगहि
एक ॥ नट क्कत लुद्धक कुक्कर मेक ॥ ठठ क्कत काइ ॥

रही सत जुद्ध॥ डुड क्कत डौरुव बाद्य बिरुद्ध॥ दुढ क्कत दु क्कत रू क्कत साद्द॥ रूणं कत रुखं खणं कत काद्द॥ तता थेई नाचत बिक्रम मंकी थरत्थर कंपत काइर अंकि॥ दर दर दौरत बीर दुरत्त॥ घरः घर चाल परंन करत्त॥ नरन्नर सूर सरूर रखाय॥ परं पर फुट्टत जुट्टत काय॥ फर फ्फर फौज तरफ्फर मार॥ बरव्वर लाजत घाइल लार॥ भर भ्भर भाजिय फौज चंदेल॥ मरम्मर सुद्धिय निद्धिय खेल॥ बरव्वर छेदिय घाइल घाइ॥ लरे पृथ्वी राज कि सैं मि सु भाइ॥ तबै उमरा वनि पाइल चाल॥ भजी जब फौज लखी पर माल॥ हजार सुती निपरे धर मध्य॥ भजी परि माल की फौज असध्य॥ कटे रण तीस क घायल सोइ॥ रूपे रण बीस कपंदु वहोइ॥ गह्यौ गुन मंजरि पानि य धाइ॥ उठावनि पावति कीन हु चाय॥ लगी सर सेल सुस त्रह गात॥ करे गुण मंजरि जुगि छिवात॥ भिवाजिथ बैस चंदेल नितान॥ वली हरि दास नि पाइ बितान॥ तबै नृप ऊदलि लींयि बुलाइ॥ सुनी जब कान पया दोइ धाइ॥ पठाइर मल्हन दैतर बारि॥ कहो इन घाइल लेहु जुमारि॥ कहै जव ऊदलि बैन मसिद्धि॥ सुनो नृप ए रजपूत अवद्धि॥ नहीं दह राज निको धस ताप॥ करौ इनि की अब चूक सुमाफ॥ कही परि माल दिमान नवीन॥ हनो इन फौज हजार सुतीन॥ हनौं इनि कोंरन उद्दिलि लें इ॥ तवै हग चैंन लहै सब कोइ॥ छप्पै॥ जब ऊदलि सुख उ वरि सुनहु परि माल अरज इक॥ घाइल महा अवद्ध कही परमान व्यास बक॥ होइ चौप चहुं आन रोस मित्तनि नहिं मारिय॥ अ

तुल तेज पृथी राज सुनौ बिनती हित कारिय॥ चंदेल चाहि मान कु अरज आय लगै सोइ कि ज्जियै॥ नन कारहु बैर पृथी राज तें जग ऊपर जसु लिज्जियै॥ चौपाई॥ सुनि ऊदलि की बानी लोइ॥ मल्ला मो पति-बोले दोइ॥ हम दर वार भाइ दुहूं मंडहि॥ रजपूत निप रमा व्रत खंडहि॥ दोहा॥ मल्ला मो पति की सुनी रिस पाई परिमाल॥ दौरो ऊदा मारिये घायल घाइन-ह्माल॥ छंद भुजंगी॥ सुनी बात चंदेल भोपत्ति भाषी। भयो त्यार ऊदल्ल के बेग साषी॥ गहें ते गहल्ल्यं समत्थं सुधायो॥ लहो बाग स्वर्ग तमारौ दिखायो॥ किये राज फुर मान डेरा सिधारे॥ किये कूंच अग्गं निहंगं निहारे॥ दिये पंच हज्जार सथ्यं चंदेलं॥ चले बाग का जैं सभा जैं सुकेलं॥ निकट्टंच बागं वचंनं पुकारे॥ कढौ बेग रजपूत चहुं आन वारे॥ सुनी कानक बानी गुमानी चलाये॥ अभंगं बली बाहु जंगं मिलाये॥ कहें कुंदलं फेरि मन में बिचारी॥ हनें कौं भंजे जो भयं खेल मारी॥ करें खंड खंडं भुसंडं भकारें॥ हथ्यारं धरें जोध ऊदलि हकारें॥ भजौ जाउ ह्यांतें वचैं जीति हारी॥ कह्यौ मानियें आपु सुंदर हमारौ॥ तवे कनक वोल्यो सुम्म्र रास ह्वै कें॥ गिरैं सीस तो ऊलडैं रुंड ह्वै कें॥ सुनौ नंद जस राज के वार वारं॥ पृथी राज कौ लौंन स्वर्गं उजारं॥ हही बोल बानी दलं बीच रूरे॥ दियें आय सेलं किये बोल पूरे॥ चला वंत बीरं दुहूं ओर वांके॥ परें फुटि धरनी दुहूं सेनि घांके॥ चला वंत बीरं सकत्ती कटारी॥ उरं फेरि ही कंपरे फूटि त्यारी॥ चला वंत गु-

रजैं सिरं चूर होई॥ लगें जासु अंग गिरैं भूमि सोई॥ चला वंत मुदगर हुंकारं त सूरं॥ मकारं तभय खात कायर सु कूरं॥ चला वंत बीरं वरछी संभारी॥ परे फूटि न्यारी उरं लागि भारी॥ लगैं सांगि छाती भयं रंद भारे॥ मनो जाव वं माट कीने पनारे॥ लगें ही कअमड़ा ढहै जाति पारं॥ अटारी मनों कामिनी खोलि द्वारं॥ बहैं तेग कांधं परि सीस न्यारे॥ गिरैं टूटितर बृक्ष से मुंड भारे॥ पेट वाज के ते लड़ैं धोप दे कें॥ लगा में सु मत्यं फिरैं मुंड लैके॥ किते ज्वान मुदगर लिये हाथ सीलं। फिरा मैं चला गैं करैं खील खीलं॥ परे रुंड मुंड कहूं हाथ डुंडं॥ कहूं पाद प्यादे कहूं पील सुंडं॥ कहूं कंध बधं कहू रंद हीकं॥ कहूं हैवरं टूट धरनी धरीकं॥ भयो जुद्ध भारी वही श्रोण धारा॥ गये टूट घायल लड़े सो अपारा॥ रह्यो एक सूरं कनक है अमानो॥ लियो सेल हत्थं हिये सोरि सानो॥ कहै उद्द सों बैन किलकार रोसं॥ बलं आपु मैं लो लड़ो आय मोसं॥ सुनैं बैन रन में पिल्यो उद्द भारो॥ गहैं तेग हत्थं समत्थं पचारो॥ इतै कनिक चढ्ढं आन रजपूत धायो॥ वरं बीर रुदल्लि पै कोपि आयो॥ गयो कोपि बीरं जहां उद्द घाती॥ दियो जाइ सेलं कियो साल छाती॥ दई तेग उद्दं भई पार मुंडं॥ गिरयो सीस ओरं भयो बीर डुंडं॥ दियो सो उरं उद्द के एक नेजा॥ भयो पार पेटं अलेटं करेजा॥ इतै सूरमा यो धरनि चाह आनं॥ उतै सूरमा उद्द खाई सु ज्वानं॥ पचासो परे घायलं खेत जानें॥ बरछी लगी तेग जम धर कमानें॥ छप्पै॥ कटे खेत चंदेल सूर दुक सहस म।

मानहु ॥ गिरे बना फल साठि देखि ऊदलि पर मान(
हु ॥ परि परि हार पचास परे चेरा सत दोइक ॥ गहर
वार सत दोइ लोह अंतर सिर होइक ॥ रजपूत घेरे घा
यल कनक परे बीस संज्ञा गइय ॥ कवि चंद कहैं प
रि माल सों पृथी राज सों लगाइय ॥ चौपाई ॥ परे बी
स घायल रजपूतहु ॥ सहस एक चंदेल सुदूतहु ॥ ग
हर वार सत दोइ समानैं ॥ परे बना फल साठि अमानैं ॥
दोहा ॥ परे बीस घायल समर और कनक चहुं आन ॥
परि ऊदलि रन मूरछा कटि द्वासी वपु रान ॥ छप्पै ॥
कटि द्वासी वपु राम लखैं परिमाल अवासहु ॥ सह
स एक चंदेल खेल रणा ही करि बासहु ॥ लगिनदीप
रि माल चाइ पृथी राज तनवरि ॥ कहतु चंद वरदाय
बीस घायल परि संभरि ॥ सन मध्य देस जीतहु परि
न घाइल सो महुवें गवन ॥ हुव बनि बिरुद्ध चहुंआ
न सौं भविष बात मैटै कवन ॥ चौपाई ॥ ऊदलि जगी मू
रछा सूरहु ॥ उठे चले चंदेल हजूरहु ॥ जाइ कही हम
घायल मारे ॥ वे मासी परि सवैं संघारे ॥ दोहा ॥ क-
ही जहजो तुम हुकुम कीनो हम कों राय ॥ सोई हमपू
रे कियो मारे घाइल धाय ॥ बहुत भये चंदेल खुश सु
नि ऊदलि के वैन ॥ वदला पास बुलाइ कें लगे इनाम
सुदैन ॥ हाथी दोइ तुरंग सत मोतिय माल सुदेस ॥ ऊ
दलि कों सिर पाव दे उठि करि आपु नेरस ॥ कियो हुकम
चंदेल नृप मनो सेनि वहु सोइ ॥ देखन गढ़ सुकलिंज
रा चलो आजु सब कोइ ॥ कारो त्यार रणामास कों नवल
नगर कों आजि ॥ आल्हा पास बुलाय कें हुकम(

कियो नृप गाजि ॥ छंद पद्धरी ॥ बुल्लाइ राज आल्हन लीन ॥ सब सूर बीर सज्जत प्रबीन ॥ हाथी निरत्थ सज्ज हु सुबेग ॥ बल वान सूर बा धंत तेग ॥ डोला सुडोल च ढ़ं डोल सज्जि ॥ रण मास काज डंबर सुगज्जि ॥ रब ल प्रबीन अनेक भार ॥ रह कला तोप बंदूक सार ॥ नौ बत्ति नादनी सान बज्जि ॥ घन गरजि मेघ सुर पत्तिलज्जि ॥ कालिंज काज चढ़ि चलि नरेस ॥ आनंद होइ तहँ करि प्रबेस ॥ बुल्लाय पुत्र नृप संग लीन ॥ कदलि बुलाइ करि हुकम कीन ॥ तुम चलौ नगर कालिंज पत्थ ॥ लै सूर बीर सामंत सत्थ ॥ चढ़ि चलिय राज एकंत होय ॥ वहि परस मूढ़ कर बल सजोय ॥ सब चले साजि पर माल संग ॥ पहुंचे सुजाय जहँ वन उतंग ॥ परि माल हुकम कीनौं सुतब्ब ॥ खेलौ शिकार सब सूर अब्ब ॥ खेलत शिकार सब सूर बीर ॥ एकै हुलास सज्जत गहीर ॥ देख्यौ कुरंग वन एक राज ॥ है बरसु आल्ह कीनौं दराज ॥ लल कारि सूर हय दपटि धाय ॥ लिय पकरि निरख जीवत सुभाय ॥ खेलैं शिकार सब सूर ज्वान ॥ फिरि चले नगर कौं करि उठान ॥ पहुंचे सु नगर कालिंज जाय ॥ सब देश मांक पटि गये पाय ॥ लीने सजोय सुभ तिलक नारि ॥ गावंति गीत ढाढी दुवारि ॥ सबही को राज सन्मान कीन ॥ है दै सुदेस सबही कौं दीन ॥ जब गये महल भीतर हिराज ॥ सब सूर बीर डेर निस माज ॥ रण मास साथ मह्ला समेत ॥ भोपति संग दाखिल निकेत ॥ दोहा ॥ करि केली परि माल नृप सब रन मास समेत ॥ मह्ला भोपति भूप को मतौ कुमति

कों देत॥ आल्हा हय दौराय के पकरि लियो मृग जाय॥ सुन के ऐसे पांच हैं नृप के एक न भाय॥ घोड़े पांच मंगाइये देउ आल्ह कों और॥ नाहि करैं तौ घर तजैं जाहि और ही ठौर॥ डोंन हार ह्वैके रहे मिटै न कौं हूं जानि॥ आय गई मन राज के बात कुमति की खानि॥ चौपाई॥ भोपति आल्हा उदृ बुलाइव॥ नृप कहि ऐसे बचन सुनाइव॥ पांच बछेरा घर के दीजे॥ उनके पलटे हय बर लीजे॥ दोहा॥ घोड़े देहु तौ घर रहौ देहु न तजौ सुठाम॥ हैं मेंनी के चोंलेंगे कीजे ताहि सकाम॥ छप्पै॥ आल्हा सुनि इमि बचन बोलि उत्तर नहि दीनो॥ उठि आयो घर सुभट मंत्र माता सों कीनो॥ कहिय आजु उनि चुगल बात मोसों इक भारी॥ घोड़ि घर के देहु राज भागत मनु हारी॥ छांड़िय देश नातर अबे आन देश कीजे गमन तुम कहौ मतौ सो कीजिये मात मंत्र सुनिये श्रवन १॥ माता सुनि यह बात कही आल्हा सों बानी॥ पूत बछेरे न देहु लेहु यह बात सुमानी॥ देहु छांडि या देश लेहु कनवज की गैलह॥ मिलो चलि व जय चंद और छांडहु सबरे लह॥ सुनि मात बात सोई करिये उही बार कीनों गवन॥ सब साजि आपने कटक कों चले आल्ह दुर्जन दवन॥ दोहा॥ आल्ह महोबो छांडि के कनवज कियो पयान॥ मिले जाय जय चंद सों बाजे नगर निसान॥ भोपति की मारत गयौ जागी रीदल पत्रि॥ आगि देत लूटत भगे गाम सबै सब जत्रि॥ छपी राज कानननि सुनी घायल हतत सुजान॥ महुबे ते परिमाल नृप का लिज कियो बयान॥ छप्पै॥ सुनी खबरि चहुं आन वौ

लि सामंत सूर लिय ॥ सोच जाल मद्धि परयो भयो ब-
हु प्रबल दुःख हिय ॥ कौन चूक चंदेल हने घाइल
रण पानह ॥ कौन चूक चंदेल हनी गुण मंजरि जा
नह ॥ कीनी न खूब चंदेल नृप नाइक मारि विरुद्ध-
किय ॥ कबि चंद वाक्य साँची भई मिटै नहीं बिनुयुद्ध
किय ॥ दोहा ॥ यह बिचारि राजा कहत सब सिरदार
बुलाइ ॥ सुनो सरब सामंत हो कीरो मंत्र अब आइ ॥
छप्पै ॥ सुनो सर्व सामंत करिव चंदेल बिरुद्धह ॥ हनि
घायल बे चूक और दासी बपु सुद्धह ॥ सुनो मंत्र क
य मास सुनो गुज्जर राय रामह ॥ सुनो चंद पुंडीर सुनो
जादौं गुन धामह ॥ चामंड राय सुनियै श्रवण सेनि
पज्जून विचारिय ॥ संकि माराय लक्खन सुनो तन्न
सुमंत्र उच्चारिय ॥ छंद पद्धरी ॥ उच्चरि बघेल लक्खन
समत्थ ॥ भंजिये देस महुवो सुमत्थ ॥ उच्चरै वात चहूं
आन कान्ह ॥ भंजिये देश महुवो सुथान ॥ बोलयो चं
द पुंडीर बीर ॥ पक्करि नरेस परि माल धीर ॥ संकि मा
राय वोल्यो बिरंत ॥ चढ़ियें सुभूप कढ़िये तुरंत ॥ सारं
ग बोलि बानी निराट ॥ कढ्ढिये माल परि माल जात ॥ वो
लियो जैन मत सुनो सुद्ध ॥ कीजिये बेगि चहुं आनयु
द्ध ॥ अचलेस बोलि भाटी सुधीर ॥ मारो सुजाय महु-
बे गहीर ॥ चामंड बोलि बिरदै लवंक ॥ धारहु सुतंग
मारहु निसंक ॥ सुनि मंत्र सुख्य निड्डुर नरेस ॥ मारिये
देश महुवो सुवेस ॥ भोंहों चंदेल वोल्यो सुलोय ॥
प्रथी राज कीजिये हुकम मोहि ॥ गोइंद बोलि खत्र
राज ॥ मारो चंदेल कीमैं समाज ॥ विरुराराज करि

ढाव पाज ॥ कोटिं सु जाय परि माल राज ॥ चलिये सुर
राज अति क्रोध होय ॥ सामंत सूर उच्चरत सोय ॥ कय
मास वोलि आगे नरेस ॥ चिंतयो सुमंत्र इह जुद्ध नेस।
जय चंद करै ऊपर चँदेल ॥ कीजिये मंत्र विद्या अमेल।
कन वज्ज और मल्ह वो सु बेस ॥ भंजिये सूर दिन बिनेउ
देस ॥ थापियो मंत्र चहुं आन सुद्ध ॥ धारियो धर्म चंदे-
ल जुद्ध ॥ बुलाय चंद बरदाय सोय ॥ इह भविष बात
तोहि अगम होय ॥ तत्र कहै चंद वरदाय बात ॥ होगी
सु जंग भारी सुजात ॥ फिरि थमें एक द्वै मास जुद्ध ॥ पुनि
मंचै खेत भारी बिरुद्ध ॥ भारथ्थ होइ मह्हेब सुखेत ॥ को-
ई न बचै इहै जानि लेत ॥ पाछैं सुजीत होगी निदान ॥ रा
रै सु खेत तूटी सुजान ॥ इह सुनी चंद की चाहुं आन ॥
पृथी राज आपु कीनी प्रमान ॥ बुलाय राम गुरु रामराज ॥
काढ़िये मह्हरत वोलि साज ॥ रचि कुंड सुंड सचि होम ॥
सार ॥ संकल्प कीन मारन विचार ॥ बन जानि सिष्य सि-
व दास बढ़ि ॥ रविका बिलास कई होम काढ़ि ॥ करि
हस्त माल जपि रुद्र मंत्र ॥ त्रिय लोक बिजै भुगवै सुतं
त्र ॥ केत किय भ्रह्रुप हर पर चढ़ाय ॥ के सूंके फूल हित
करि बनाय ॥ चकोर आइ नृप दरस दीन ॥ खंजन सि
खंडि बिबि परस कीन ॥ बहु दान दान चहुं आन रान ॥
किय जुद्ध चाव मन उमगि दान ॥ अष्टमी वार सुक्र र
अनूप ॥ भादों सु कृष्ण पक्ष सरूप ॥ सामंत सत्त ग्यारह
वरीस ॥ चालीस जानि पृथी राज ईस ॥ सुभ दीन म-
हूरत बिप्र सोइ ॥ चहुं आन राज उच्चरि बलोइ ॥ ग्रह
देख कौंन कौंन लगाय ॥ द्विज कहत खोलि पत्रा सुभाय ॥

रवि जोग पुष्य त्रिय थान चंद॥ पंचमौ सूर आनंद कं-
द॥ सप्तमो सुक्र गुरु दसम जानि॥ नव मौ सुबुद्ध बर
अधिक पानि॥ तीसरौ शनीचर छठौ केत॥ पंच मौ-
भूमिया अरि देरत॥ ग्यार हौं राहु चढ़ि चलि नरिंद॥
पाबल्य जे मिवल बढ़े दंद॥ शुभ सगुन देखि ग्रह सु-
भ लखाय॥ कीनों सु कूंच पृथी राज राय॥ कीनो मुकाम
नृप वाग आइ॥ बत्तीस हंस है बर मंगमय॥ चौपाई॥
वाग आय नृप किंये विनो दह॥ अंकनि राजनि बैठी
मोदह॥ चंद बुलाय कह्यो नृप ही को॥ कवि यह वाग
बरनिये नीको॥ छंद भुजंगी॥ कहै चंद ऐसो सुनो स-
र्बभूपं॥ कहौं वाग की राज सोभा अनूपं॥ चहूं ओर
इंडा सरस रंग रागे॥ बुरज चारि सुंदर बहुत दाम
लागे॥ बन्यो कोस फेरं उभै वाग सोई॥ अनेकं तिवारे ज-
हां हेम लोई॥ बंने गौरख छज्जे अनूपं अवासं॥ लिखे
चित्र तिन में चतुर ने बिलासं॥ जहां फूल नाना प्रकारं
खिले हैं॥ चंमेली सरस मोतिया सों मिले हैं॥ जहां से-
वती और गुलाबं लसें हैं॥ निवाड़ा बबूना जुही सों ग-
से हैं॥ जहां केतु की औमदन वान जानो॥ जहांनूत
फूलं कदं में बखानो॥ गुला दाउदी औ हजारा विराजें॥
जहां माधवी स्वच्छ सुंदर समाजें॥ गुला बास तुर्राज-
हां इपूकपेंचा॥ जहां मोगरा औ कली कुंद सेचा॥ ब-
संती कूजा केवरा गुल सुरोशान्॥ जहां रायबेली जुही
सोम सोंशान्॥ सदा सो गुलाबं असर्फी सुहाई॥ तहां
गोल गेंदा अबरा जा अवाई॥ अनेकं सु फूलं कहां
लों बखानौं॥ अनेकं तरह दार मेवा सुमानौं॥ अंजीर

खेरे सेब आडू जहां हीं ॥ अंगूरे नरंगी खुरट आम
पाहीं॥जहां कोकिला मोर वानी उचारैं॥तहां कूक कोइ-
ल अनेकं हूं कौरें ॥जहां भौंर चहुँ ओर भन्नात डोलें॥त-
हां चिक्कौरें चक्कंवा औ चकोरें॥जहां आय पृथीराजकी
नौ मुकामं ॥ सबै सूर सामंत संगं सकामं ॥ छपै ॥ गेर
महल पृथीराज सीख सब कारन दीनी॥ कुसुम पा-
ट सिर पाग सूर लोह्या कर लीनी॥पहर निसा रहजा
गि कीन करि बिक्रम संगह ॥सीख दीन सुंदरिय बीर
कीन वपु जंगह ॥ कय मास बोलि आगे किय वंके दिल्ल
नाद वजाइयव ॥ सामंत सूर गुरु राम सोहें सबसा
मत आइयव ॥दोहा॥ कियौ नगारौ कूच को सामत ।
लिये बुलाइ ॥ हुकम कियो कय मास सों घोंड़े देहु ब-
ढ़ाय ॥ छंद हनू फाल ॥ नृप जागि बंब कराय॥कयमास
अग्र बुलाय ॥ चहुं आन कान्हर चंद ॥ गुरु राम आन
द कंद ॥ सोहने कंठ हरु बाज ॥ बिल हना बड्डन काज॥
हय मोर कन्ह हुर दीन॥ ऐराख वंश नबीन॥ सिरता-
न आरव सुद्ध॥ कय मास दीन बिबुद्ध॥हयराजचाम
ड काज ॥खंधारि उपज्जि समाज॥ हय रतन चंद पुंडीर।
भुज लक्क हैं बर हीर॥ हय मुकट गोइंदकाज॥मानिक्क
बाज़ समाज॥ हय सुरंग संग सुदीन॥ठट्ठी सु वेसन।
बीन॥ मन प्यार निंडुर राय॥ हुस बरूदरं उपजाय॥ हु
य तेज रूप सुराज॥दिय राम देव निकाज ॥ सम सी मंले
सी काज ॥ संमपि के हरि बाज ॥ असु कुसुम अरु
दल ढेलि ॥ बिल हना भौंह चंदेलि॥ सर सी हहे वर
लीन॥ अचले सकारन दीन॥ सुर खा सुदल मुख सूर॥

दिय आल्ह कारन तूर॥ नव लेख कौं हय दीन॥ नृप हेम सरभर लीन॥ झकुली कारन हीर॥ ताजी सुते जग हीर॥ हंबीर काज सहंस॥ उपजियो तुरकी बं-सागंभीर काज तुरंग॥ रेशमी रंग सुरंग॥ सामंत और कुलीन॥ अनेक है वर दीन॥ घोड़े हजार कलारि॥ दीने सुबांटि बिचारि॥ मंगाय पील नरिंद॥ बकसीस कीनो चद॥ गुरुराम कारन कीन॥ दै संहस हेम सु दीन॥ मंगाय करि वसिंगार॥ मद गलित जनु भरभा र॥ उत्तंग गिर वर रंग॥ जनु सिंखिरी कजरंग॥ सि-र चव चिलाल सिंदूर॥ जनु तड़ित घन में पूर॥ अस वार भय पृथी राज॥ कय मास संग समाज॥ तासमै घुः घूपंछि॥ चौ कीर देखन अंच्छि॥ सन्मुकन खा र सवद्द॥ आइ जाफनो फन मद्द॥ जा सीस बैठी देवि॥ जल जात खंजन सेबि॥ वग देखि ऊंचे पाय॥ सुख में मिल्यौ भख आय॥ जल मांरु चकयिन केलि॥ सजि कंरति पिय सो केलि॥ भय सगुन आनंद कंद॥ हंसि गाठि बांध्यौ चंद॥ दोहा॥ चल्यौ साजि संभरि धनी सा मत सूर समाज॥ बोरन दल चंदेल को जोरन जुद्ध हि-राज॥ छप्पै॥ चलि बराज चहूं आन लीन सामंत सूर भर॥ अतुल तेज भर अतुल सुभट भ्रम सीस सद्धा घर॥ बीस सहस सब संग जंग कंदलि कसि भारी॥ चहु आन राढौ खेस कूर मवड भारी॥ गहलौ तव घे लव गोड़ रिय मोड़िय वड़ गुज्जर मिलिय॥ तोवर पमा र खिची पुंडीर दाहिमा हाड़ा चलिय॥ दोहा॥ चल्यौ सा जि संभरि धनी सामत सूर अभंग॥ लिय व अंग पुन हा

सकर करन सरिस सा जंग ॥ छंद मोती दाम ॥ चल्यौ
पृथी राज सुसाजि हे सैनि ॥ सजे सब सामंत सू
र सतैनि ॥ सजे चहुं आन सु कन्हर सत्थ ॥ सजे क-
छ वाह पजून समत्थ ॥ सजे संग चालुक सारंगदेव
सजे परि हार सु लक्खन एव ॥ सजे संग दाहि माचा
मह सूर ॥ सजे कय मास लिये मुख नूर ॥ सजें कम
धुज्ज सुनि डुर राय ॥ सजे पर संग सुखी विय भाय ॥
सजें संग भोह चंदेल सु बीर ॥ सजे अचलेस सु भ
ट्टी भीर ॥ सजें परि हार सु कूरम पाल ॥ सजे संग सा
मत साखुल लाल ॥ सजे सुब धेल बलक्खन आय ॥
सजें चहु आन सु संकि मराय ॥ सजे अत ताइय बी
र वनाय ॥ सजे संग सामत हाहु ली राय ॥ सजें संग भा
र सुहा डाह ठील ॥ सजे संग जद्दव सद्द स चील ॥ स-
जैं संग चंद पुडीर मरद्द ॥ सजें संग गौर सुगाहनरद्द ॥
सजें हरियंत मले लिय दंद ॥ सजें संग भार अठाय अरं
द ॥ सजें संग माल विसाल सुएव ॥ सजे संग जद्दव जाम-
जदेव ॥ सजैं संग टोक चटा सुं रिसाय ॥ सजे गह लौ त
सु गोइंद राय ॥ सजें विक्रराज सुखेन खगार ॥ सजे संग
उद्दय राय पगार ॥ सजे संग बाग री साखुल सोय ॥ स-
जे संग मल्ह चंदेल सु सोय ॥ सजे संग भट्टिय भीम गही
र ॥ सजें संग सूर पमार सु वीर ॥ सजे निर बान सु वीर
वहान ॥ सजे संग वीर प्रसंग मथान ॥ सजे परि हार
सु पीप मरद्द ॥ सजें संग गौर सगाहन रद्द ॥ सजे संग
मोरि य सेंगर सूर ॥ सजे संग तेज लड़ो गर रूर ॥ सजे
संग तारन मल्ल समाज ॥ सजें सुबली संग सोम समाज ॥

सजैं संग धामर धीर परम्म ॥ सजैं संग रावत राम गर
ज्म ॥ सजी संग फौज सबै पृथी राज ॥ सजी संग सा-
मंत सूर समाज ॥ किये दर कूंच चल्यौ चहु आ-
न ॥ चँदेलन ऊपर कूंच निदान ॥ भजे सुनि यों सोउ
छांड़ि है देश ॥ बसें बन मंदिर कीन नरेश ॥ चलेम-
ग सुद्ध सु ऊबट बाट ॥ पिले दल सामत दारुण ठाट
मिले मग मांहि मरद्द बुलाय ॥ सुनों परि माल को-
श्राम बताय ॥ कही यह एक रहै मलि खान ॥ लड़ै तु
म तें सुनि कै उह ज्वान ॥ इती सुनि बाग लई चहुँ आ
न ॥ करौ चलि जुद्द जहां मलि खान ॥ चली सब फौ-
ज निशान बजाय ॥ जहां मलि खान रहै अकुलाय ॥
दोहा ॥ कासिद सुनि मलि खान को लै सब खबरि ५
सुजान ॥ जलद पंथ पाइन चल्यो सुद्द सरि समाधा-
न ॥ गयो उद्धत मलि खान पर नै करि करिय सलाम ॥
आइव दल चहुं आन के ज्यों रावन पर राम ॥ छप्पै ॥
मल्लि खान सुनि बात मतो बज रंग उपायव ॥ पृथी ५
राज पद्धरै सज्जि चौरै चढ़ि आइव ॥ नहिय आल्ह
उद्दलि सुकरैं ऊपर भर संगह ॥ मह्ला भोपति चुग-
ल चारु परि हारस अंगह ॥ अर सिंह बोलि बिर सिंह
कोंनर सिंह मंत्र यह लिज्जिये ॥ जे सिंह सूर सब्द नि-
सुनों मिली अनी कहा कीजिये ॥ सुनिव कहत जयं सिं-
ह सुनो भाई मलि खानह ॥ आपु हुकुम मुख करौ दही
रो कै चौहानह ॥ लड़ैं धरैं यह टेक करैं खगनि को-
ख्यालह ॥ भरै जुगिनी आइ धाइ खप्पर रन हालह-
जय राज नंद इमि उच्चरत तुरत कहो सोई करन ॥ चं

देल नोन सांचो करै रजपूत निसंगल मरन॥ दोहा॥ हिम्मति है क्षत्री न को आस कौन की पाय॥ कहा आल्ह ऊदलि करै मड़ला भो पति आय॥ आय बनी अव तौ इहां तुम सों जंग जरूर॥ तातें अव ढील न करौ लरौ मंत्र करि पूर॥ सुनी बात जय सिंह की मल्लि खान महा राज॥ सबै सेन को हुकम किय करौ लरन को साज॥ छप्पै॥ कियो लरन को साज सैनि बुल्लाय संग लिय॥ किय केसरि या त्वान ख्याल केसरि घुराय दिय॥ करि तयार सव फौज जुरि यह्हजार आठ बर॥ बान तोप तर वारि तुपक बांधे कमान सर॥ हाथी पचास सज्जे प्रबल कोतल हय आगर अगर॥ पंभियो जाय पृथी राज दल कोस एक वाहिर नगर॥ चौपाई॥ मल्लिखान कासिद्द बुलाइव॥ कहो पियोरा सों तुम जाइव॥ इही ठौर डेरा कर वाओ॥ जुद्ध होय सो त्यारी पाओ॥ इही ठौर जुद्ध करिवे कों॥ आगे नाहि ठौर लरिवे कों॥ मल्लि खान हूं आवै धांई॥ जुरै जंग होइ बड़ी लड़ाई॥ छप्पै॥ कासिद सुनि यह बात चल्यौ पृथी राज पास तब॥ सो बातें सुनि गयो जलदक्षां कहीं जाय सब॥ महा राज पृथी राज करौ डेरह या ठौरह॥ जंग खेत है इही ठौर आगे नहीं औरह॥ कर जोरि सरल बातें कहत लगें अपछरा बर वरन॥ तुम सजो जुद्ध त्यारी करौ मल्लि खान आवै लरन॥ दोहा॥ सुनि वानी कासिद्द की किये न गोर तेन॥ उहीं उतरि डेरा किये सजी सजाई सेन॥ छंद भुजंगी॥ बजें बंव हाथी नपे भूमि लरजें॥ मनों मेघ भादों प्रबल हूमि गरजें॥ सुनी मल्लि

खानं नगारो करायो ॥ सजी फौज चौंजें रणं रोस पा-
यो ॥ चले बीर केते लिये हाथ नेगं ॥ किते लै गुर-
ज्जैं पिले वेगि वेगं ॥ किते मुगद्दरं लै धरै कंधभारी
किते सेल सांगें बरच्छी कटारी ॥ किते हाथ कुन्ती क-
बज पेस लींये ॥ किते खंजरं पंजरं वार कीये ॥ किते
तीर बीरं लिये सोक मानं ॥ किते हाथ फरसा लिये बी-
र वानं ॥ किते हाथ ने जेतबल तोप सज्जैं ॥ किते बी-
र.जोधा करैं सोरग ज्जैं ॥ किते लाल .बाने न ते सूर
न्यारे ॥ किते मूंगिया रंग पहिरे पचारे ॥ किते सर्वती
सेत तूसी हरेई ॥ किते सो सिंदूरी अभोत्मा खरेई ॥
किते बीर आबी सजें बस्त्र अंगं ॥ किते सूर सुंदर स-
जे स्याम रंगं ॥ बसंती सजें बस्त्र जे चाय चोजं ॥ कि
ते अगरई चंपई बीर फौजं ॥ किते सोसनी सूर पहरे
अमानें ॥ किते कासनी रंग सज्जे सुवानें ॥ किते आस
मानी सुनहरी समाजैं ॥ किते बीर के सरियहरि बल
विराजैं ॥ किते सो गुलाबी सजें फांक ताई ॥ नरंगी
किते रंग पहिरे सुहाई ॥ किते सूर सहे सजें बखनी
के ॥ किते बीर प्याजू सजें संदली के ॥ किते सूर सब्रा
सु साजैं बसन हैं ॥ किते बीर लीले बने सोर सन हैं ॥
किते बीर चीरा चर चिचारु पहरैं ॥ किते कोचकीरों
च की रंग गहरैं ॥ सजें पिस्तई किसिसी सूर केते ॥ जें
गाली.रंगे धूमरे वास जेते ॥ बने रंग रंगं लरन चाउ-
कीनो ॥ सबै हाथ हाथं हथ्यारं सुलीनो ॥ सजें अंगजै
सिंह भाई सुपाचौ ॥ करो नोनु परिमाल को आनुसा
चौ ॥ हजारं सजे संग भाई भती जें ॥ सहंसं सजे सूर

सामंत लीजै ॥ बँधे गोल ठट्टं गरट्टं चलाये ॥ सजेकं
गलं अंग ने जादि खाये ॥ मिली दृष्टि सो दृष्टि चहुं आ
न केरी ॥ कियो नंद्द नीसान फौजं सुफेरी ॥ मुखं अ-
ग्र कन्हं कयं आस भारी ॥ नरं नाह चामंड कन केस
धारी ॥ वरं बीर धीरं चल्यौ इंद राजं ॥ इते अग्र सामं-
त सूरं समाजं ॥ वरं बीर सारंग मोरी नहानं ॥ पारीहा
र लक्खन सु अल्हन सुजानं ॥ वरं बीर सामंत संजिंम
रायं ॥ पूजूनं वरं कच्छ वायं सु पायं ॥ जुरे जाम जा-
दौ दिशा दक्षिणी यं इमं साजि सूरं दलनं रक्खिनीयं ॥
धरें धीर पम्मार पुंडीर चंदं ॥ अचल सिंह माठी पहारं
सुदं दं ॥ सजे हाडखीं चीं वघेला विलष्षं ॥ सजे बीर
हाडा सिरं धारि दुष्टं ॥ भरं हाहुली और हंवीर पानं ॥
इते कीन सामंत वाई भुजानं ॥ विंजे राज पृथी राज सज्जे
सयंदं ॥ वंजे नंदनी सान गज्जे गयंदं ॥ लखौ मालि खा
नं दिखौ चाहु आनं ॥ उठी वाग वीरं मसंगं प्रयानं ॥
लखी फौज परि मांल के वीर पिल्ले ॥ धरा धीर धरती
बरा बीर मिल्ले ॥ करे खंड खंडं भुसंडं समारी ॥ छकें
छाक लगें वहें खग्ग तारी ॥ अनो मान खग्गी करें फांक
दोई ॥ गिरे सूर धरनी रकत भूमि होई ॥ चले खूब फर
सा उड्डें मुंड ले कै ॥ दलं छाक मारें लरें रुंड ह्वै कें ॥ सं
टं सांगि लग्गें उरं वीर छाती ॥ धरं फूटि सूरं निकसि पा-
र जाती ॥ घटं कंत धामें नटं वीर नाचें ॥ वरं वीच के औ
सरं वार सांचें ॥ जटं ज्वाल के सी सजाफ्राल लोई ॥ उ
रं मार मारें उभारें सतोई ॥ लगें तीर धीरं दियं लागि
झूमें ॥ परें पार ह्वै के गड़े जाय भूमें ॥ लगें सेलही कं

गिरैं सूर आई ॥ करैं नाहि संख्या परैं मूर छाई ॥ लगैं बीर छाती वरं सो कटारी ॥ मनो दूलही हार खालें अटारी ॥ लिये हाथ खप्पर जोगिन्नि डोलें ॥ बड़े गिद्ध आये गगान माहिं बोलें ॥ वरैं अप्छरा सूर सो-काम आवें ॥ सुरं लोक बिम्मान धरि के सुधावें ॥ भयो बीर खेतं बड़ो जुद्ध भारी ॥ बही सो नदी आगा में लाल सारी ॥ तबै मल्लि खानं सु धायो रिसानं ॥ लिये हाथ तेगं अवेगं अमानं ॥ पिले जाय दलमें भयो वार पारं ॥ गयो फेरि के कन्ह पै तेग मारं ॥ परी तेग खाली लगी पील मानं ॥ तबै कन्ह ने खेंचि दीनी कमानं ॥ लगी सीस सारं सुटो पंक टायो ॥ तबै फेरि मल्लि खान तेगा चलायो ॥ दयो कन्ह कंधं भम्यो सात वारं ॥ दई तेग वेगं भई वार पारं ॥ दई चंद पुंडीर किर वान औरे ॥ गिरो सीस धरनी लियो जाय गोरे ॥ भयो रुंड मुंडं चल्यो कन्ह पैकं ॥ दयो कन्ह ने फेरि मुदगर उठै कं ॥ गिरो टूटि मल्लि खान धरनी गहाई ॥ बरो तास में अप्छरा फेरि आई ॥ गई अप्छ रा ले तहां सूर लोकं ॥ भयो शब्द जै जै दुहूं फौज सोकं ॥ मरो देखि मल्लि खान जै सिंह धायो ॥ लियो हाथ बरछी सनं मुक्ख आयो ॥ दई जोर ते चंद पुंडीर छाती ॥ गई फूटि हीकं भई भूमि राती ॥ भयो मूरछा चंद पुंडीर वीरं ॥ भज्यो देखि चामंड सूधें गहीरं ॥ दई जाय जै सिंह कै तेगरीसं ॥ गिरो रुंड धरनें परो टूटि सीसं ॥ पलटि एक नर सिंह कै जाय दीनी ॥ सम्हरि सूर ने ढाल पैं रोपि लीनी ॥ कमर तें लई हाथ जमधर नृसिंहं ॥ दई रायचा

मुंड केरोस आयो ॥ लियो ढोरि कगद्दर दियो जाइ गी-
सं ॥ गिरे बीर नर सिंह द्वै टंक वीसं ॥ गिरे देखि जै-
सिंह नर सिंह दोऊ ॥ भजी फौज अर सिंह बिर सिंह
सोऊ ॥ गये भागि परि माल पै चालु खाई ॥ लयो स-
रि समा गढ्ढ चहुं आन धाई ॥ दोहा ॥ तोरि सरिस
मानगार नृप हने सेनि रण भाइ ॥ अर सिंह बिर सिं-
ह जुद्ध तजि भजे महो बे आइ ॥ छप्पै ॥ मल्लि खान
रन परे पानि क्षत्रिय अमरकिव व ॥ करि बलोन को
सो चुख्याल सब ही रण लकिखव ॥ परे बीर नर सिंह
परे जै सिंह अमाने ॥ भजि अर सिंह बिर सिंह गये चं
देल सुथान ॥ परि डेढ़ सहस ठाकुर अवनि चारि
सहस संगी कहिव ॥ हज्जार गिरे पृथी राज के लरि
व सूर अंतर रहिव ॥ चौपाई ॥ बे सुमार घायल भ-
ये चंदह ॥ और कन्ह चा मुंड सुदंदह ॥ सो परि माल
सुनी इन कानह ॥ उपज्यो डर अंतर चहु आनह ॥ छ-
प्पै ॥ सुनिव वात परि माल काल आयो पृथी राजह
॥ मल्लि खान लिय मारि मारि जय सिंह सुसाजह ॥
मारि सरि समान गर भागि अर सिंह विरसिंह डर ॥
हनि जय सिंह नर सिंह जुद्ध कीनो विसम्म बर। चहु आ-
न सूर सामंत पति साहि पकरि जिन छांडि दिय ॥ सब
सूर और महिलासु बन भोपति बास बुलाइ लिय ॥
चौपाई ॥ सुत चंदेल बुलाये सोई ॥ महला भोपति प-
रि गह दोई ॥ कायथ सो श्री वास कल्यानह ॥ उच्चरि
बचन राजा परि मानह ॥ छप्पै ॥ बोलि सुत्तन प-
रिमाल बोलि कायथ कल्यानह ॥ बोलि बै सुसुन

रेस गौड सेंगर सब ज्वानह ॥ गहर वार गोहिन्न भार
जगनि कढिग बुल्लिव ॥ मोहित के सब दास राजवा-
नी ढिग खुल्लिव ॥ आइयो सेन चढ़ आन पति सजो
जुद्ध जालिम सबै ॥ तुम कहौ भंतौ सो कीजिये ला
ज रहे हम तुम सबै ॥ चौपाई ॥ तव रानी मल्हन दे इ
हू भाखी ॥ राजा जुद्ध मास द्वै राखी ॥ जग निक पठओ-
आल्ह बुलाओ ॥ पंग काज अर दासि लिखाओ ॥
रानी मत सब के मन आयो ॥ राजा नें जग निक सुबु-
लायो ॥ दोहा ॥ रानी की परिमाल सुनिं जगनिक नि-
कट बुलाय ॥ आल्हा ऊदलि कों अँवे तुम लाओ सु-
मनाय ॥ ह्यांजो तुम आंखिन लखौ सो सब कहियो-
जाइ ॥ सरिस मागढ़ मारयो सबै दीनो देश दहाइ ॥ दु-
तनी सुनि जग निक चल्यो आल्ह मनावन काज ॥ गयो
बेगि कन वज नगर जहां बनाफल राज ॥ चौपाई ॥
रानी बात कही सब मानी ॥ पृथी राज सें अधगति ठानी
॥ जाल्हन पठयो नजरि सु दीजे ॥ मास दोइ ह्यां छामनि
कीजे ॥ यों कहिके कागज लिखवायो ॥ येही लिखि कै
आल्ह बुलायो ॥ पान पचास हजार पठाये ॥ जेम गही
छंद निमें गाये ॥ अतर गुलाब बंदूक बरच्छिय ॥ हैव-
र दोइ चढन कों कच्छिय ॥ ले सह गाति जाल्ह न वच-
ल्लिव ॥ पृथी राज सों नद्ध पर मिल्लिव ॥ दे कागद सव न-
जरि सु दीनी ॥ सव पर मोधि मिलन कों चीनी ॥ कागद
बांचत लै चल्ह आनह ॥ सिद्धि श्री पृथी राज सुजा
नह ॥ जगनि कहम निक नौज पठाइव ॥ जहां बनाफ-
ल रूठि बठाइव ॥ आवे आल्ह जुद्ध तव होइव ॥ इहह

थी राज बांचि खत सोइव ॥ पृथी राज सबन जरि सुरा
खी ॥ विदा किये जाल्हन सुभ भाखी ॥ दोहा ॥ का-
गद दै जाल्हन्न तब चल्यो महोवे धाम ॥ डेरा करि
सरिता निकट पिथ्थल कियो सुकाम ॥ फिरि राजा
बरदाय सों वाचन उचरी रमि ॥ आल्हउ दू परिमा-
लतें रूठि गये सो केमि ॥ छप्पे ॥ कानन सुनि चहुआ
न कहे बरदाय मंत्र गति ॥ प्रथम देस परिमाल रह्यो
जस राज सेन पति ॥ गढ़ा जादु नृप लागि परी गौंड-
न सो जंगह ॥ पर्यो चाल चंदेल उली धरनी धरअं-
गह ॥ रौंकियो सेनि अरि सेनि सब काम मरन धीर-
न धरिय ॥ खेलियो ख्याल बिनसीस धर काम जा-
य फते करिय ॥ चौपाई ॥ गढ़ा नगर चंदेल सुलि-
यो ॥ गोड़ सुमिले जुद्ध तजि दियो ॥ भगी सेन देखी जस
राजह ॥ दीनों सीस स्वामि के काजह ॥ दोहा ॥ चालप-
री राख्यो जने काम आदु जस राज ॥ मारि गौड़ लीनो
गढ़ा सिर दै स्वामी काज ॥ वाके सुत दोऊ सुभट आ-
ल्हा ऊदलि सूर ॥ फौजन मारन अरि हनन बल बिसे
स भुज भूर ॥ चौपाई ॥ राजा जीति महोवे आइव ॥ आ-
ल्हा ऊदलि पाइ लगाइव ॥ दै जस राज भार तमसा
रो ॥ सेना पति धरनी रखवारो ॥ करें प्यार मल्हन देरानी ॥
ब्रह्मा नंद समय सुत मानी ॥ ऐरा किनि घर घोरा जाये ॥
पांच बछेरा लगे सुहाए ॥ मइला भोपति चुगली की-
नी ॥ सो परिमाल मानि सब लीनी ॥ नृपति वाली
जर देखन कीनों ॥ राजा आल्ह बुलाय सु लीनों ॥
पांच बछेरा मांगे दीजे ॥ उनके पलटे हय बर लीजे ॥

ना तरु वास छांडि या ठौरहू ॥ जाउ जहां चाहो तहां औरहू ॥ आल्हा सुनि माता ढिग आयो ॥ कही राज सो आय सुनायो ॥ घर बैठी देवल देखाजी ॥ पूत बकेरा देन न कीजी ॥ बास छांड़ि कन वज कों चलिये ॥ जाग बद्दल पंगुल ते मिलिये ॥ साहुन वाहुन सबही लीनें ॥ कनवज देस पिया ने कीनें ॥ जागीरी मोपति की भारी ॥ वस्ती सबै उजारि पजारी ॥ पबि पाटी परि हार सु चुक्किय ॥ ऊदलि मुख काहू रहि रुक्किय ॥ छप्पै ॥ आल्ह कियो कनवज्ज चाव पृथी राज देसदल ॥ मोपति की जागीर धीर उज्जारि जारि बल ॥ करि आदर जय चर दीन वड देस सुभारी ॥ घोरे पांच मगाय दोइ हाथी हित कारी ॥ मोतीर माल उतंग अति हीरा पहुंची सुद्धरिय ॥ परिमाल सुतन सौंप्यो अधिक मिलिय मान मंगल भरिय ॥ दोहा ॥ चंद कहै पृथी राज सों बिसरयो आल्ह गवाय ॥ मनहुं बनाफल आइ हैं रुंडनि मुंडन चाय ॥ छप्पै ॥ गय बजगन कन वज्जद इय आल्हन कों पची ॥ ऊदलि इंदलि जोगि दई देवल दे मंत्री ॥ पृथी राज पद्दे र सज्जि महुवे चढि आइव ॥ मल्लि खान जे सिंह वती नर सिंह जुझाइव ॥ भरि भंजि सरिस मानगर नृप देश चंदेल दहाइव ॥ पृथी राज थंभि है मास लौं मैं तुम पास पठाइव ॥ चौपाई ॥ जंव तुम आल्हनिकासि करि चल्लिव ॥ मल्हन दे अति दुकव उगिल्लिव ॥ मल्हन बैठी महल निवाट सजोवै ॥ कनवज दिसा देखिकै रोवै ॥ अति दल जोरि पिथोरा आयो ॥ सगरो देश उजारि दहायो ॥ जि चंद्र को अर दास लिखाइय ॥ सो

गुरु आल्ह क हो तुम जाइय॥ कुमक मागि बेगहि सं
ग लीजे॥ स्वर्ग नि खेल बना फल कीजे॥ इतनी बात
जगन सी कही॥ सुनि आल्हा की देही दही॥ छपै॥
सुनि जग निक की बात आल्ह बोल्यो इमि बानी॥ लु-
टो महोबो नगर कुटो परिमाल गुमानी॥ बिनाचूक
परिमाल किय परदेश निन्यारे॥ काम आय जस राज
सबे नृप काज सुधारे॥ परिहार सेन आगें धरो लरें चा
रि करि बान सों॥ सामंत सूर सन मुकव ह्वे जुद्ध करहु
चहु आन सों॥ चौपाई॥ जग निक भाट बचन इमि बु
ल्लिव॥ अब तुम आल्ह महोबे चल्लिव॥ भगि है भरम
चंदेल नु को सब॥ आल्हा सुनि पछिता आगे तब॥
सुनि जग निक यह बात सुमानी॥ हम यह राज कछू
नहिं जानी॥ हम सिर बांधि महोबो रक्खिव॥ नृप चंदेल
चुगल सुख दिक्खिव॥ छपै॥ हम मारे वह गोंडदेव
गर चंदा वारे॥ हम जांदो करि जुद्ध धारि चंदेल उधारे॥
॥ हम कट हरिया काटि दट्टि परिमाल देश दल॥ हम को-
तुक किरवान लूटि लीने सु सबै तुल॥ लीनि सु पील ज-
य चंद के असिय लाख गिनि यो सु तुछ॥ सुनि भाट बात
रजपूत की राज नि जानी नाहि कुछ॥१॥ हम आगे प-
ति साह फौज भागी दस वारइ॥ हमन सतरिया काटि
कियो दल कूटि प्रवारइ॥ हम जीती धर गया और दल
प्रबल पठानइ॥ हम बांध्यो सिर नेत खेत दल विरचि
अमानइ॥ मेवाति मारि पद्धर करिय अंतर बेदद-
हाइयो॥ बंघेल मारि बसुधा हरी गढ़ चंदेल लगाइयो॥
॥ चौपाई॥ राजा दस जीते जस राजइ॥ लीनी धर कंचन

की साजह॥ ताको फल राजा यह कीनो॥ हम कों देश
निकारो दीनो॥ ता पाछे हमरख्याल सु कीनों॥ राजा जी-
ति इक ति कर लीनो॥ सात बार ऊदल जुध कीनो॥ जै-
त पत्र चंदेल हि दीनो॥ छंपै॥ सात वार पर धवल ल-
गे चौरासी गातह॥ जीति राव इक तीसरी स करि से-
नि सु सातह॥ स्वामि धर्म उज्जल करिव दुर्जन द-
ल जोरह॥ गौंड मारि उज्जारि वारि नसतर कर तोरह॥
॥ वज्जाइ लोह तेरह वरस पंचास नि लगि छांह किय॥
चंदेल चुगल मानी कही तीजे पन पर देश दिय॥ १॥
छंद पद्धरी॥ सुनि भाट वोलि उच्चरि व तान॥ आल्हन
नरेस सो सुनि य कान॥ परिमाल छांडि वाल क वप्प-
जय माल धराजस राज चप्प॥ चंद्रा संपर्व लिय उभै
दंड॥ वारीस देश दल कियो खंड॥ रै वास पार की लू-
टि सर्व॥ मानियो वीर जीता सु गर्व॥ जइ वाराय खर्ग-
निखिलाइ॥ मेवाति मारि धर लई धाइ॥ पंजाब देश
पंजाब ध्यान॥ वैराट देश को गर्व मान॥ मालवा देश
लिय पेस मारि॥ उड्डिय-पमार की धर उजारि॥ चंदे-
ल राज बढ़ाइ दीन॥ फिरि गढ़ा मारि गढ़ पेस कीन॥
यह सुनिव वात परिमाल राज॥ आये सु काम जस रा-
ज काज॥ सिर धुनिव आल्ह लीने वुलाय॥ आपनो
देसु दल सव वताय॥ तरवारि वांधि सिर द्वार कीने॥
हैवर मगाय तेहि वेर दीन॥ कय सेव अप्र ठाकुर सु-
सुद्ध॥ वाजियोव ठाकुर नाम सुद्ध॥ वैठंत राज अल्हन न-
रेस॥ मारियो जाइ पूरव्व देश॥ पठान गया के जेर की-
न॥ तहं गर्व कोट इक लूटि लीन॥ जीतियो जुद्ध नि-

स रत्य जाय ॥ सम सह्या वा दरबर्ग नि खिलाय ॥ के हरि
कंढ रिकै मच्च मारि ॥ लीन सु पील जय चंद धारि ॥ हिं
डोन देश जादो दहाय ॥ लूटियो सिद्धि नव निद्धि पाय ॥
पति साह फौज कई बेर मारि ॥ चालु कसि कव को गर्व
गारि ॥ सत बार खेत परियो सु दंद ॥ धरि स्वामि धर्म ज-
स राज नंद ॥ सांकरे स्वामि छंडे सु जाय ॥ अघोर नर-
क गहरे पराय ॥ तुम सही आज कनवज्ज चाव ॥ सां
कर परेकि चंदेल राव ॥ तुहि होत बधाई नृपति की
न ॥ धरि चामर मल्हन दे प्रबीन ॥ करि रुदन मल्हन दे
कह्यौ मोहि ॥ सो मात दिवल दे कह्यौ तोहि ॥ दोहा ॥ दे-
वल दे कानन सुनो कहि मल्हन दे मोहि ॥ भीर परी चं-
देल पैंहै मिलिवे की तोहि ॥ चौपाई ॥ देवल दे तुम बां
ची वंदिय ॥ अरि परि माल धारना संधिय ॥ गढ़ सोंना
नि लग्यो पृथि राजे ॥ आल्हा सीख देहु तुम काजे ॥ बां
चि व्यास बाद्दल सुख गाई ॥ वाचा जग मैं सुकति कहाई ॥
जो कुछ बांचि दिवल दे बुल्लिव ॥ आल्हा सुनत महो-
वे चल्लिव ॥ पृथी राज सों जुद्ध सु कीजे ॥ स्वामि धर्म को फ-
ल अव लीजे ॥ तब ऊदलि यह बोलिब बानी ॥ हो महो-
बे की चूरा घानी ॥ बुरे हाल काढ़े परिमालह ॥ सो सब
भूलि गई अब ख्यालह ॥ जगनि क उद्दलि को समझावहि ॥
कीजे सो जगमें जसु पावहि ॥ माता दीन बचन करि रो-
ई ॥ तैं सब बना फल नि की खोई ॥ स्वामि कान दुनि देख
न कढ्ढिय ॥ हय कर तार कूखि किन फढ्ढिय ॥ छंप्पे ॥
आल्ह उद्दलिय सुनत उद्धि सुरडाय बीर दुहु ॥ मातसु
कव मानि यो जाय हम मरैं कुटुन सुहु ॥ लरैं धरैं सिर-

धर्म कटैं किर वान पान धरि॥ करैं जुद्ध भरि पूर जाहि॥ श्रोणित समुद्र तरि॥ जोगिनिय गिद्ध भायो करिहिं हूर बेरें सूरनि घनिय॥ तो कोखि मात उज्जल करहिं॥ चलि भेंटें संभरि धनिय॥ दोहा॥ चलन महोवे की सुनी देवल दे सुख पाइ॥ अरज करन जय चंद सों चले बनाफल राइ॥१॥ देखि नयन जय चंद बोलि आल्हन सों बानी॥ कों आए दरवार उद्धि इहि बेर गुमानी॥ कसे कवच इक अंग जंग कंदल कसि भारिय॥ बिदा किये कहुं नाहिं नाहिं हंकारि पुकारिय॥ इमि कहत बनाफल जोरि कर लेन सुजगनिक आइयो॥ पृथी राज महोबे जुद्ध कों सुहम परिमाल बुलाइयो॥ चौपाई॥ नैंन रतन करि बोले बानी॥ भरिवे काज महोबे ठानी॥ अवलों नोंन हमारो खायो॥ चंदेलन ढिग मरन बुलायो॥ सगरी नाव जाय बंद कीजे॥ आल्हा ऊदल जान न दीजे॥ छामनि करहु हमारे पासहि॥ छांड़हु अबै महोबे आसहि॥ तब आल्हन्नि रतन किये नैंन॥ सुनि जय चंद नृपति के बैन॥ कनवज लूटि रिद्धि सब हरि हैं॥ पाछें जुद्ध महोबे करि हैं॥ आल्हा पंग क्रोध जब भये॥ ऊदल शस्त्र हाथ में लये॥ तब जगनिक कहि बिरद बिसालह॥ दीनी अरज लिखी परिमालह॥ छंपै॥ गढ़ दुर्गम खल भलत अरहुय परत गिरगिरि॥ तृण वण घन टूटंत धरनि धस संमति हयन भरि॥ सर संभन खल भलत डिडिडिडुाय क रकवय॥ कमट पीढ़ि कलमलति पहुमि परभय रूब रकवय॥ जय चंद पयान प्रसंभरति पुनि ब्रह्म मंड

बिछुट्टिहै ॥ नन चलहु न चलिनन चलिन चलि सु-
मभा चल हतो प्रलय पल ट्टिहै ॥ चौपाई ॥ अरजी
बांचि बिरद सुनिभारी ॥ कछु आल्हा को क्रोध निहा
री ॥ करैं चाकरी सेवा ठाई ॥ पृथी राज पर कुमकपठा-
ई ॥ छंपे ॥ बांचि अरज जय चंद कहे सुख बचन भा-
ट वर ॥ करै चाकरी प्रगट करहु उपर आतुर कर ॥
पृथी राज पल्हैरें सेनि वड़ आय सो किन्निय ॥ कुट्टिस
रि संभा नगर लुट्टि धरनी धर लि न्निय ॥ वुल्लाइकु-
मर संग आंल्ह के जुद्ध सभर भर लि ज्जिये ॥ संभारि
गेन बिजय पाल सुब तुम जुरि पिंगुरि किज्जिये ॥ दो-
हा ॥ बांचि अंरज जय चंद नृप बोलि दिमान हजूर ॥
बिदा करो सेना सजो आल्हा संग जरूर ॥ छंद मोती
दाम ॥ बिदा किये आल्ह सुपंगुल राय ॥ दिये दस-
हय वर साज बनाय ॥ दिये दुय पील सुउज्वल दंत ॥
छहु न्रतु छाय रहै मय मंत ॥ दई दस बीनि कै मोति ॥
य माल ॥ दई कर पहुंचिय रुद्द बिसाल ॥ दिये सिरो
पाय क सब्बि य सात ॥ निरक्खत चंद सुसिक्कत जात ॥
॥ कटारी जराव की दीनी हैं दोइ ॥ रखो तुम आल्ह
छत्री धर्म सोइ ॥ बोल्यो इमि लक्खन सी कम धुज्ज ॥
धरे भ्रम सीस सकज्जिय लज्ज ॥ दई संग फौज पचास
हजार ॥ दये दस डील बताइ जुझार ॥ दिये संग मोरि
य रूप सु सुद्ध ॥ दिये संग चालुक केसव जुद्ध ॥ दिये
सिक्क वार सुकूरम पाल ॥ दिये संग बैस सुबै तत काल ॥
॥ दिये चहु आन सुमंगल राय ॥ दिये संग बाबुल
सेंगर पाय ॥ दिये संग सेंगर राय अमान ॥ दिये सें-

ग ताल्हन बेग पठान ॥ हजार पचास दिये असवार।
धरें सिर सा मत धर्म दतार ॥ दिये नृप आल्ह को पा-
न मगाइ ॥ लई नृप सीख चंदेल सहाइ ॥ जग न्निक-
कारन पील मगाय ॥ समर्प्पिय पिंगुल साज वनाय ॥
दिये सिरो पाय तुरी दुइ सुद्ध ॥ दई द्रवि वीस हजार ।
विबुद्ध ॥ दये दुइ ग्राम सुपत्र लिखाय ॥ सम्र प्पिय भाट
सु पिंगुल राय ॥ उठे जय चंद बिदा किये आल्ह॥ सम ।
प्पियं फौज तबै तत काल ॥ पधारिय आल्ह हवेलिय सु-
द्ध ॥ धरें हिय मांक पियो रा जुद्ध॥ हवेली सु आल्ह चलाव
सु कीन्ह ॥ मगाय कें पाल की पांच नवीन ॥ चढ़ायकै दे-
स चले सुख सूर ॥ दुहूं ठाकुराय लि देअ जरूर ॥ चले
चलि ऊदलि जोध सुवाह ॥ गही सु महोंबे की फेरि ।
कै राह ॥ कगव के पारथि पूजन आल्ह ॥ अगन्नित
आय तिते तत काल ॥ बधे कर वान चढ़े हय सोइ ॥ च-
ले चढि उदलि सुक्कत होइ ॥ चले जगनि क किये जुध
चाच ॥ अवै सुख मानि चंदेल निराव ॥ निक सिक न-
ब्ब जवाहिर सोइ ॥ तहां भयो सोन छत्री भय होइ ॥
सनम्मुख काक करालिय कूक ॥ भयो दिसि जैमनी
ओर उलूक ॥ ठठ क्किय भाट निरक्खि सु गुन्न ॥ ल
खी लरु आल्ह मुसक्कि बदन्न ॥ चौपाई ॥ मुस ।
कि आल्ह फिरि बोलिब बानी ॥ तैं कालु होन हार की
जानी ॥ सामत सूर अटल भर रक्खिय ॥ औ कवि ।
चंद भवानी भक्खिय ॥ उनसों जुद्ध न जीते कोइय ॥
हिंदू तुरक मिलें दल दोइय ॥ पात साह लरि उन सों-
हारो ॥ कनवज पति को गर्व प्रहारो ॥ दोहा ॥ होन हार

ऐसी लिखी कही आल्ह अकुलाय॥ हम सामंत नि-
चूकि हैं राज चँदेल सुजाय॥ छप्पै॥ दुरजोधन प-
रि माल जबै बरज्यौ नहि मान्यो॥ तब घायल मरवाइ
वात हम तबही जान्यो॥ फिरि फिरि ऊदल बरजियो
करी विनती हित कारी॥ चुगल नि चुगली करी बात
बिगरी अति भारी॥ हम देखत तौ परिमाल को जान दु
ख देख्यौ नही॥ सुनि भाट वात रजपूत फिरि हंसि
आल्ह ऐसे कही॥ चौपाई॥ जगनि कहा सुम सबं जा-
नी॥होन हार अबि गति नहि मानी॥ गंगा तट डेरा कर-
वाए॥ कुमक दई सो आनि मिलाए॥ लकतन सी जा-
ल्हन सी होई॥ इनमिलि अल्ह मित्र ता होई॥ दोहा॥
मिज मानी देवल करी संग एक ही साज॥ अन्न घृत्तप-
कवान सत बहुते स्वाद समाज॥ रति रहे उतरे नदी च-
ले मझैवे वार॥ कुमक लिये जय चंद की बिक्रम वीर
जुझार॥ छंद पद्धरी॥ चढ़ि चलिव आल्ह ऊदल्लि सोइ॥
उर आमि धर्म रतें बिलोइ॥ गंजिये गंभि बज्जिय नि-
सान॥ सज्जिय जुवान अति जोर वान॥ धरि पील अ-
ग्गि पंचास पंच॥ चलिये सु ढील करिये न रंच॥ जै
मने शब्द आरस्स कीन॥ भखनील कंठ सुख भकिव-
लीन॥ चम चमिय मेघ पच्छिम दिसान॥ यह चित्र
जानि लखि बिध वान॥ फिक्करिय डोरि आड़ी सु आय॥
जंबूक शब्द बोले कुमाय॥ सुरज्ज मौरु डुंक क-
बंधि दिक्खिव॥ यह चित्र जोर लख्यौ सलक्खिव॥ हंसि
कहिय बेर अब काल लखाइ॥ रजपूत मरन मंगल
बताइ॥ इहि बात सोच कीजे न कोइ॥ रजपूत वान

इक बिकट होइ॥ दर कूँच कूँच कीने पयान॥ किय जुद्ध चाव मन उमग मान॥ कछु एक हीव समर हे न चाय॥ परिमाल हेत करि बंधि भाय॥ ताडंत तुरी मारंत सिंह॥ सुवभव्य वात भुग वैसु हिंह॥ चहुँआन प्रतिज्ञा किये जोध॥ परिमाल पांन लखि कीबिबोध॥ पठ्ठाइ दीन कासिद्द एक॥ आये सु जोध इह वात मेक॥ केसरि मगाय केसरिय कीन॥ सेवा मगांय सुख सों अधीन॥ उत साह हर्ष किय सभा लोय॥ सांकरे स्वामि जाने सु लोय॥ कासिद्द पैठे परिमाल पास॥ बैठियो भूप ऊंचे अवास॥ गुद्दरिय खवरि दरबार जाय॥ आये सु बनाफल दोय भाय॥ दरवार जाय बोल्यो जरूर॥ आये सु आल्ह सेवा हजूर॥ सुनि राज हर्षमन बहुत कीन॥ उच्चरिय बचन चंदेल दीन॥ केती कसेन आल्हन्न लाय॥ बोल्यो सु दीन कासिद्द चाय॥ हैसत सु पील सेना सुभाय॥ पंचास सहस दइ पंगु राय॥ लक्खन भतीज नृप संग दीन॥ सरदार आठ हैं दंभ प्रवीन॥ ताल्हन पठान लाखन कुलीन॥ आल्हन्न काज ऊपर सु कीन॥ दोहा॥ सुनि वानी कासिद्द की किये नगारे बेन॥ साज बाज सब साजि कै सजि आये सब सेन॥ देवल दे जग निक संग चली महोवे धाय॥ मल्हन दे सुनि खवरि को आगे भई सुगाय॥ मिली बाग में आय के अंग सों अंग मिलाइ॥ एक पाल की बैठि कै भूप सुवन घर जाइ॥

देवल दे रानी निकट कहि कनवज की बात॥ बचन कहे जे चंद ने ते सब करे विख्यात॥ जगनि द को हाथी

छ्यो होय गाम अज घट्ट ॥ भाटनि. वाजि चंदेल ने करी वड्डाई भट्ट ॥ असवारी राजा सजी संग ब्रह्मा जीतली नातुरी बैठि परिमाल जू आल्ह मिलायो कीन ॥ आय आल्ह ससु हैं चले लाखन ताल्हन संग ॥ मिले आ-य सब वीच में भेंटे राजनि अंग ॥ छंद हनूफाल ॥ चढ़ि चले आल्ह अमान ॥ परिमाल आदुय-जान ॥ सिर पाय कीन सु अंग ॥ चढ़ि चले आल्हनि सं-ग ॥ मिलि सबै निकट सु आय ॥ परिमाल संग लगाय ॥ मिलि टाकं रूप जवीन ॥ चंदेल आदर कीन ॥ चा लुक्क केशव दास ॥ परिमाल मिलि बकुलास ॥ तोमर सु बोहित आय ॥ मिलि नृपति के लगि पाय ॥ चलि जद्दवंद सु बाल ॥ मिलि हेत करि परिमाल ॥ चक्कु आन मंगल आय ॥ मिलि योन रेस सु धाय ॥ वड़गुज्ज रं सौ निंग ॥ मिलियो सु राजनि अंग ॥ मिलि सिक्कूर-म पाल ॥ उठि अभ्र राज निहाल ॥ सेगर बराय अमान ॥ ॥ मिलि भूप नूपुर वान ॥ मिलि बैस अग्र सु काल ॥ मि-लियो सु उठि परिमाल ॥ ढिग आय ताल्हन वेग ॥ प-ट्ठान मिलिय सतेग ॥ जय चंद कुशल पुछाइ ॥ फुर मान सीस चढ़ाइ ॥ दिय आल्ह कारन राय ॥ परग-ने चारि बताइ ॥ मंगाइ हाथी दोइ ॥ संमप्पि आल्ह-न सोइ ॥ मंगाइ मोती माल ॥ पहुंची जवाहर लाल ॥ सिर पेंच पन्ना पान ॥ मिलि जोति छाई भान ॥ नृप जाल कंधे दीन ॥ सन मान बहु विधि कीन ॥ ऊदलि सु लागिव पाय ॥ नृप बोलि कंठ लगाय ॥ दिय तुरी तर-ह साजि ॥ सुबरंन साज समाजि ॥ रानी सुनिकट सु-

लाय ॥ न्योछावरैं, करवाय ॥ करि अरज मल्हनह ॥ ये बात मोकों देहु ॥ फिरि आल्ह बोले तास ॥ मोसी तिहारे काम ॥ मोतीन आरति कीन ॥ या भांति आदर लीन ॥ सुख मानि सब मिलि भूप ॥ गये सभा सुभग स्वरूप ॥ दोहा ॥ आल्हा की ज़ुबिदा करी नृपति हवेली काज ॥ फौज उतारी पंगु की बाग़न सों रुसमाज ॥ आल्हा आये सात दिन भई खबरि पृथिराज ॥ बोलि कान्ह कै मासभर कियो लरन को साज ॥ छंद ॥ बोलि कान्ह कय मास बोलि सामंत महाभर ॥ बोलि चंद पुंडीर बोलि चामंड मंडवर ॥ बोलि लखन परिहार बोलि पज्जून महा मति ॥ बोलि जंगराराय बोलि कन कंध्र बिरद पति ॥ कम धुज्ज राय निंडुर बुलिव वरदायक अरु बुल्लियव ॥ सब मिलि स सूर सामंत हो तंत्र मंत्र सव खुल्लियव ॥ दोहा ॥ कहै चंद पृथी राज सुनि ढील न कीजि नेत ॥ आयो आल्ह कनौज ते सहस पचास समेत ॥ चौपाई ॥ आल्हा सहस पचास कलायो ॥ पंगभती जो संग पठायो ॥ आय आल्ह सात दिन बीते ॥ कीजे जुद्ध चंदेल न जीते ॥ दोहा ॥ सुनि बानी कबि चंद की पृथी राज महा राज ॥ हुकम कियो कागद लिखो वेगि चँदेले काज ॥ चौपाई ॥ दोइ मास हम छावनि कीनी ॥ क्षत्री धर्म कारने चीनी ॥ अब चंदेल जुद्ध वर मंडहु ॥ नातर नगर महोबो छंडहु ॥ सुवा मंजरि सोहि सालति दासी ॥ घायल हने अनाहक नासी ॥ पहिले जोम लरन को कीनो ॥ अब चंदेल कहा बल हीनो ॥ दोहा ॥ पहिले तुम ने यों लिखी जग

निकनौज पठाय ॥ आल्हा ऊदलि रूठि गये लावैं ता-
हि मनाय ॥ मास दोइ हम थंभिगये मानि तिहारी बा-
त ॥ अब आये आल्हा भये और रीति दिन सात ॥ कै
जु जुद्द बेगी करौ कै भाजौ तजि ठाम ॥ कै जु हमारे ह्वै
रहौ बसौ आपने गाम ॥ या प्रकार कागद लिख्यौ का
यथ चतुर सुजान ॥ जुद्द करौ छोंडो नगर दोऊ
बात सयान ॥ छप्पै ॥ लिखि पत्री पृथी राज जोगि चं-
देल सु कीनी ॥ क्षत्री धर्म धरि सीस सूर लोहा तन
लीनी ॥ करैं जुद्ध पद्धरो धार चंदेल रेवल कुल ॥ नात-
र धरनी ठाम रहो आधीन सबै तुल ॥ धरियो सुधीर
जस कार ने कारत ता सब छंडिये ॥ बुल्लाय कुमकज-
य चंद की सिंहन आदर मंडिये ॥ चौपाई ॥ क्षत्री धर्म
धरौ परि मालह ॥ करौ नरेश्य खर्ग न कौ ख्यालह ॥
कै तुम नगर महोबो छंडहु ॥ कै अब साज लरन को
मंडहु ॥ दोहा ॥ पत्री लिखि कासिद जबै बोल्यो राम
स्वरूप ॥ जाउ चंदेले पै जहां पत्री देहु अनूप ॥ या प-
त्री को आज्ञुही आवै जलद जवाब ॥ जुद्ध करौ छोड़-
हु नगर रहो हमारे ताब ॥ पत्री ले कासिद चल्यो गही
महोवे वाट ॥ गयो बेगि परिमाल पै जहां चंदेले ठाट ॥
॥ दिय कागज नृप नाथ कर देहु जवाब लिखाय ॥
ढील करौ मति तनक अब बांचि लेहु सुख पाय ॥ चौ-
पाई ॥ सुनी दूत की बानी राजा ॥ बांच्यो खत्त लिख्यो पृ-
थी राजा ॥ जे ब्योरे लिखि भेजे रातें ॥ ते परि माल बांचि
सब बातें ॥ तब सिर दारी सबै बुलाई ॥ राजा उर
चिंता बहु छाई ॥ दोहा ॥ बांचत ही राजा मह्रां परयो सो

च के कूप ॥ महला भोंपति आदि दै सबै बुलाये भूप ॥
छंद रघुन राज ॥ बुलाय राज आल्हयं ॥ करंत मंत्र
ख्यालयं ॥ बुलाय उद्दली नयं ॥ कुमार है प्रवीन यं ॥
बुलाय प्रोहितं लियं ॥ करंत मंत्र जे कियं ॥ बुला-
य कायथं कला ॥ सु चार बुद्धि में भला ॥ बुलाय रा-
जहित्रयं ॥ अनेक जुद्ध जित्रयं ॥ बुलाय भाट लीन
यं ॥ नरेस पाप की नयं ॥ बुलाय साह सुंदरं ॥ करं
ति बात इंदिरं ॥ चंदेल बीर धीरयं ॥ गहर वार हीर-
यं ॥ बुलाय राज इंद्रिरं ॥ मल्हन राति मंदिरं ॥ तहां
सु मंत्र कीनयं ॥ अनेक भर्म चीनयं ॥ पिथौरा दूत
आइयो ॥ तुरंत जुद्ध ठाइयो ॥ सिताव जुद्ध मंडिये ॥
नहीं तौ ठाम छंडिये ॥ कहै चंदेल आल्हतें ॥ करो सु
जुद्ध काल्हतें ॥ बुल्यो सु आल्ह नूपुरं ॥ सुनो चंदेल
नूपुरं ॥ करो सु जुद्ध दीन में ॥ दिवस्स दोय तीन में ॥
बिचारि लोग आपनो ॥ लरिद्दलं हना पनो ॥ पमार
मोरि गोढलं ॥ पमार जोर तोहिलं ॥ कमद्ध कूर मंझि
लें ॥ उमंडि सिंह लों चलें ॥ जहां सु चंद खीचियं ॥
भदौरा खेस धीचियं ॥ सुसीरव सोढ जारयं ॥ बनाफ-
लं जुझारयं ॥ गरूर गेह लोतयं ॥ बडी सुभीर होत
यं ॥ सुयेन बाल नोतयं ॥ भिरंत डोल होतयं ॥ छ-
पाल मंद वानियां ॥ कठेरि लोह जानियां ॥ पुंडीर दा-
हिमा मिले ॥ राठौर बीर हैं भले ॥ मिलंत परि हार-
यं ॥ चंदेल सेल मारयं ॥ चले बघेल आवयं ॥ अ-
नेक जाति वाइयं ॥ संभारि हाजिरी लई ॥ कितेक से-
नि हैं भई ॥ कही चंदेल आल्हयं ॥ कितेक सैनि भा-

लयं ॥ इंछे बना फलं कही ॥ हजारि साठि हे सही ॥ पचास पंग की भली ॥ करी सु दोईसे चली ॥ गयंद तीनि से इहां ॥ दलं दलं परें जहां ॥ कियौ हुकम्म जुद्धयं ॥ करो हथ्यार सुद्धयं ॥ चंदेल चेत की नयं ॥ निकस्सि डेरा दीनयं ॥ करें सु जोध मंत्रयं ॥ गुरू विसेष जंत्रयं ॥ दोहा ॥ एक लाख हज्जार दश सेना सब चंदेल ॥ करी पांच से सो सजी कियो बना फल पेल ॥ चौपाई ॥ सहर वाहिरे डेरा कीये ॥ मनमें करि करि करें हीये ॥ पांछें मस लंनि करो कराओ ॥ प्रथी राज कौं खत लिख वाओ ॥ दोहा ॥ लिखी पिथोरा कारनें सुनि संभरि के राय ॥ रेत वार दिन द्वादसी करें जुद्ध हम आय ॥ चौपाई ॥ लिखि पत्री का सिद्द पठायो ॥ जुद्ध चाव चंदेल करायो ॥ सव दल डेरा वाहिर कीनो ॥ यह परिमाल लिख्यो कर दीनो ॥ दोहा ॥ लिख्यो वांचि संभरि धनी कियो लरन को साज ॥ मानो रावण परि वहुरि को प्यो रघु कुल राज ॥ सुक्र वार नोमी निकट संभरि वीर नरिंद ॥ घोरन दल चंदेल को कियो नगारे नंद ॥ छंद चामर ॥ कीने निसान नंद पान वहसि सामंत सूरयं ॥ मरदन कराये अंग न्हाये पान खायं पूरयं ॥ उत सुनी अच्छरि खरी उच्छरि अंग मंजन कीनयं ॥ वहु फिरें हरषी वाल सुरषी नैन अंजन दीनयं ॥ हर्षे कपाली खुली ताली रुंड माली पूरयं ॥ चौसट्ठि अगन वधि उछंगनि हौरें अंगनि तूरयं ॥ पर चारि धामें चित्र आवें गीत गावें मंगलं ॥ चहु आन चंदेलं खुले खेल मेलं उच्छलं ॥ चौपाई ॥ सामंत सूर चढ़े

जुद्ध चावइ॥ सारस भारि संभरी रावइ॥ इतै सुभट्ट
कवच्च करलीने॥ उत अप्छरा सिंगार सु कीनें॥ दोहा॥
सूर कवच्च वाने बने मंगल भवन सु भाठ॥ उतै अप्छ-
रा तन सजें बरन बरन की चाव॥ छंद भुजंगी॥ इतै सू-
रन्हाये करैं ग्यान ध्यानं॥ उतै अप्छरा अंगमंडै सुभा-
नें॥ इतै टोप टंकारि ससि सूर मंडं॥ उतै अप्छरा कंचु-
की धारि अंगं॥ इतै सूर मोजा बना वंत भायं॥ उतै अ-
प्छरा नूपुरं पहरि पायं॥ इतै सूर सांगं बधें ताड तंपं॥
उतै अप्छरा जांधिया पहरि जंघं॥ इतै पांग पेचं सभा
रंत सूरं॥ उतै सीस फूलं गुह्या वंनि नूरं॥ इतै सूरिमा पा-
ग पैकिलस डोरें॥ उतै रुदु रंभा सु मांगें संभारें॥ इतै सू-
र सबै खरे रवर्ग तेजें॥ उतै अप्छरा अंजनं नैन अंजें॥
इतै सूर जस डाढ़ कै वाढ़ दीनें॥ उतै अप्छरा कंकनं पा-
न कीनें॥ इतै सूर सांगं लिये हाथ न्यारी॥ उतै अप्छरा
हाथ परमाल धारी॥ इतै सूर तुलसी न की माल नाई॥
उतै अप्छरा माल मोती वनाई॥ इतै सूर किरवान
कम्मान नाई॥ उतै अप्छरा चौंकि आंदै न चाई॥ इ-
तै सूर वीरं लिये हाथ नेजा॥ उतै अप्छरा आननं चंद
तेजा॥ इतै नंग सामंत घोरे न लीने॥ उतै अप्छरा मा-
जि बिम्मान कीने॥ कहै चंद ऐसो निबक्खोन सोई॥ क-
रन्यो समानं परी वीर दोई॥ चोपाई॥ परी सूर घरने
कबि ढोऊ॥ उत परि माल सजे दल मोऊ॥ दोइ कोस
को वीच सु कीनो॥ दुहुं दल आय पयामो लीनो॥ दोहा॥
नौमी तिथि सुक्र हि दिवस चंद्दे सकल सजि सूर॥
दोय कोस अंतर रहिव गहिव मुकाम जरूर॥ छप्पै॥

करि मसलति परि माल आल्ह ऊदलि ढिग बुल्लिक
अरु कायथ कल्यान धर्म धरि प्रोहित तुल्लिव ॥
बोल्लिव जगनिक भाट बोलि लकवन कभधुज्जह॥
बोलिव लाल्हन तुरक बोलि भोपति जम जुड्डह॥रा-
नी सु बोलि परदा रखिय देवल ढिग बैठारियव॥ प-
रिमाल कहैं सामंत सों तत्र सु मंत्र उचारियव॥ चौ-
पाई॥ बोलिव माला सहज सुजानहु॥राजा आल्हा
को मत मानहु॥ देवलि रानी ढिग बैठारो॥ पाछे
लरन को मंत्र विचारौ॥ राजा उठि भीतर को आयो॥
वाढी ढिग आल्हा बैठायो॥ रानी मल्हन दे अति बु-
ल्लिव॥ पाछे बात मंत की खुल्लिव॥ तेज पिथौरा को
अति कहिये॥ तासों जुद्द कौन विधि लहिये॥ हारें
नगर मकोवो छूटै॥ डंड दंहिनो आप जस फूटै॥ फि-
र देवल देवो लिव वानी॥ सुनो श्रवण राजा अरु रा-
नी॥ नीको होय करो सु विचारो॥ परि गह बोलि मंत्रो सु
उच्चारो॥ देवल कही सबै यह भाखों॥ रामायण भा-
रत की राखों॥ स्वामि सां कौं छांडन कहैं॥ चंद सूर
लों नर्क हि रहैं॥ अपनों स्वामि सांकेर छांड़ै॥ आपु-
न आय फेरि घरु मांड़ै॥ पौन नीर नौलों नर्क हि परई॥
ताकी साखि व्यास जन भरई॥ खाय खाय पर लोक
निछौरै॥ अपनो अंग जोम सों टोरै॥ तासों जार जाति
को कहिये॥ असल बीज रजपूत सु लहिये॥ खावि-
द राखै आपु सु मरै॥ छत्री धर्म सीस पर धरै॥ माया
धर को दूरि जु खेधै॥ वेनर सूरज मंडल वेधैं॥ मोहि
आसरा जा की भावै॥ वेटा की कछु याद न आवै॥ वे

जीवत सत करियें नारी ॥ पारवती के अंश निहा-
री ॥ बोले आल्ह सुनौ हो माता ॥ कलि जुग में राखो
इहि बाता ॥ संभरेश की फौज बिभारैं ॥ सामत खंड
खंड करि डारैं ॥ तो कुल काज चढ़ाऊं पानी ॥ भुव
मंडल में चलै कहानी ॥ इंदलि की रख वारी कीजो ॥
देवल दे की लाज निवाजो ॥ मल्हन दे बोली तव वानी ॥
आल्हा सीख हमारी मानी ॥ सामत सूर विषम अति
सुनियै ॥ राखौ देश डंड दे गुनियै ॥ उदलि बैन तम-
कि करि बुल्लिव ॥ अब इन बातनि काहे खुल्लिव ॥ घा-
इल भारत मैं वर जानें ॥ अब कौं माता भये सयाने ॥ दो-
हा ॥ चारि वार विनती करी मानी नहीं लगार ॥ अव कौं
राजा समझि यो लखि सामंत नि भार ॥ हम होते निर-
खें नहीं बुरी तिहारी नरेस ॥ कास आय जब विगरि
है महुवो नगर सु वेस ॥ तुम आगें परिमाल जूम-
रि हैं दोऊ भाय ॥ वरे अपछरा रंभ जवहि राज चंदे-
ल सु जाय ॥ हैन हार को मेटि है कही दिवल दे सुद्ध ॥
नोन सीचि चंदेल को पूत सुधारहु जुद्ध ॥ ससत नि क-
रि वाहिर कढे आल्हा उद्द नरेस ॥ उते मारि पज्जारि-
कैं चामड धायो देस ॥ जारि गांव उज्जारि कैं लूटी रि-
द्धि अचेत ॥ छैरिलैरी चंदेल जूथो रो जोरी खेत ॥ इत-
नी सुनि, आल्हा सुभट उठ्यो लाल करि नैन ॥ चलौ स-
ङौ ढील नं करौ कहै तेज हो बैन ॥ तव वरजे परिमाल
नृप आजु शनीचर वार ॥ काल्हि करौ पृथी राज सौं
चौरें जुद्ध विचार ॥ जा धरती को खाय कैं धूआं देखैं
कोइ ॥ कहैं आल्ह परिमाल सौं ऊंची धर्म न होइ ॥

रवा इंद की देखे बुरी अंग रखावन सूर॥ कहै आल्ह रजपूत को दीजे नर्क जरूर॥ रवा इंद को घर ताकि कै इंद्री रस हि कराय॥ कहै आल्ह रजपूत सों गहरे नर्क पराय॥ चेरी सों हांसी करे प्यार नृपति सों युद्ध॥ कहे आल्ह रजपूत सों कीजे पान विरुद्ध॥ आल्हा कही सबै सुनी तन की मन की बात॥ सूरज मंडल बेधि हैं ते छत्री छिन छात॥ राजनि आगें पैज करि कही वना फल सोइ॥ प्रात करों पृथी राज सों जंग विरुद्ध इ होइ॥ सबही को नृप सीख दै गेर महल फिर आय॥ रानी सों मसलत करै मन धरि चिंता लाय॥ चौपाई॥ बोलि चंदेल सुनो हो रानी॥ अब तो दोष पाछिलो मानी॥ आइ चढ़ेो चहु आन हकारे॥ करता विन को है रखवारे॥ रानी कहै सुनो हो राजा॥ करो सबेरें सैनि समाजा॥ प्रात जुद्ध कीजै आभूतं॥ मिलि है राज दुहूं दल दूतं॥ आल्हा गयो हवेली आपुन॥ ऊदलि इंदलि मिलिन समातुन॥ भोजन कीनो एकहि होइ॥ इंदलि सहित मिले सब कोइ॥ गेर महल वहां कंदप खुल्ले॥ अधरामृत अमृत सम तुल्ले॥ छप्पै॥ पहर निशा पिछिलिय जागि उठि नीर मगाइव॥ करि व न्हान दै दान ध्यान गोरख को लाइव॥ कियो बभाफल होम नव ग्रह पूजा कीनी॥ हनू पताका जंत्र धारि सोभित भुज दीनी॥ आइयो तुरी पाछिले पहर तापर असवारी कियव॥ सजि चले लरन चहुं आन सों हत्थ वीर लोहा लियव॥ तवहि उदलि लिय बोलि कही बातैं समझाइव॥ पृथी राज चहु आन

पैज करि करि चढ़ि आइव ॥ लेइ वार कर तेग देकु दुर्जन के धाइव ॥ लरो करोरन आजु अवनि पै सुजस चलाइव ॥ धरि योन पाउं पाछें अडटि सूरन सों संग्र मस च्यो ॥ राखियो नाम जस राज को सीस छांड़ि रुंड-हि न च्यो ॥ चौपाई ॥ इह सुनि उदलि वचन उचारि व ॥ भाई तुम नीकी सु विचारि व ॥ सामंत नि सों खर्ग नि-खेलइ ॥ पृथी राज सों ठडु न ठेलइ ॥ देवंल कहै सुनो सुत दोई ॥ नैंन हलाहल करो तुम सोई ॥ खांड़ं दके आगें सिर दीजे ॥ निर्भय राजा स्वर्ग को लीजे ॥ नव ठकु रानि ऊदलि की बुझिव ॥ सुनि हो सासु बचन इमि सुझिव ॥ निहचै वेद नरक हित भाख्यो ॥ पीवम-रत तिरियातन राख्यो ॥ दोहा ॥ पी असृत तिरिया रहै करैं पूत की आस ॥ सो रानी निहचै लहै महा नर्क को बास ॥ पीय सुर नमाही मरें रानी सती न होइ ॥ अगति जाय भटकति फिरें कहै गोरिजा सोइ ॥ पिय साथे तन आदरे सौंपें सकल शरीर ॥ उह रानी रज पूत नहि परें नरक की भीर ॥ भयो प्रात परि माल उ-ठि न्हान दान दे भूर ॥ कियो नगारो फौज में भयो त्या-र सब सूर ॥ चौपाई ॥ राजा जागि नगारो कीनो ॥ आ-ल्हा काजे आय सु दीनो ॥ सही नाद बाजी सहनाई ॥ बजी पाखरैं हैं वरठाई ॥ छंद पद्धरी ॥ बुलाय आल्हा ऊदलि इ राज ॥ कीनो सु नगारो वंव साज ॥ बुलाय पुत्र नृप संग लीन ॥ विलहना सूर वाठे न कीन ॥ चंदेल कही सुनि आल्ह सूर ॥ घोड़े सु बांटि दीजे ज-रूर ॥ तब सुनी आल्ह विधा नि धान ॥ घोड़े मगाय

बोले जु वान ॥ दल ठेल तुरी कदलि हि दीन ॥ कुम्मे-
दरंग सुंदर नवीन ॥ बोदलाढियो नव लेस काज ॥ तु-
रकी तरेर सा हर समाज ॥ हरि पाल के हरी वाजिह्या-
ल ॥ चंचल सुचित्त सुंदर सुचाल ॥ भोपत्ति काज (
दिय जंग जीत ॥ सुरखा सुरंग सुंहे अबीत ॥ नारे
न काज दिय तेज रूप ॥ ऐ राकि जाति लिय नृप (
अनूप ॥ जग निक्क भाट बोल्यो हजूर ॥ दीनो अनू-
प हय राज सूर ॥ ताल्हन्न बोलि आगे नरेस ॥ दी-
नों कुरंग वाजीं सु वेस ॥ सासंत और अन्नेक नाम ॥
अन्नेक वाजि दीने सकाम ॥ पाइगा तुरी इक सतह-
जार ॥ दीनी सु बांटि करि करि विचार ॥ परि माल से-
नि हज्जार साठि ॥ साजियो सूर चंदेल घाटि ॥ पंचा-
स सहस जय चंद रौल ॥ ते किये सूर आगें हरौल ॥
हाथी सु दोय प्रात पंच फौज ॥ तीन सै पील जय चंद
चौज ॥ हय पीठि आल्ह अस वार होय ॥ परि माल राज
उच्चरिय सोय ॥ सब फौज आपु सिर ढार ईस ॥ सबजुध
लाज तेरे जुसीस ॥ उच्चर्यौ वनाफल सुनि चंदेल ॥ हे-
वर भगाय दल करि व पेल ॥ परि हार उच्चरि व सुन-
ह राज ॥ आसरे आल चढ़िये समाज ॥ पांच सै पील
आसंग पूर ॥ परि है सु भारता सीस चूर ॥ दूत सुनी वा-
त पृथ्वी राज पेल ॥ कीनी सुजुद्ध त्यारी चंदेल ॥ सुनि सूर
वीर चंडु आन रान ॥ वाजंत वंव समुहे नयान ॥ सुख (
थग कन्ह पुंडीर चंद ॥ विहसे सु सूर सुनि कन्ह दंद ॥
दिक्खियो फौज चंदेल राव ॥ कापंत देह डग मगात पा-
वाहग मूंदि वैन किल कार कीन ॥ आल्हन्न पास बुलवाइ

लीन ॥ मोपरन जुद्ध हे हे सुजान ॥ प्रथी राज फौज भारी भमान ॥ कीजिये आल्ह कछु अब उपाय ॥ संकट निवास मेरो मिटाय ॥ दीजिये दंड प्रथी राज काज। छांड़िये आल्ह संभरि समाज ॥ दीजिये सुता अध राज छांडि ॥ चढहु आन संग नहिं जुद्ध मांडि ॥ चौपाई ॥ कंपि कह्यौ परि माल नरेसह ॥ आल्हा आधो दीजे देसह ॥ लाख पचास दर्बि औ कन्या ॥ ले चढहु आन मिलाय सुधन्या ॥ छप्पै ॥ सुनिव आल्ह इमि बचन नयन रातें करि खुल्लिव ॥ दीन बचन रन चंढे राज ऐसो मति खुल्लिव ॥ एक लाख दस सहस सेनि मंडित चहूं ओरहु ॥ आपु राज देखिये मारि सामंत न तोरहु ॥ लडैं एक ते एक है देहि दंड प्रथी राज तब ॥ रण चंढे पाउ पाछे धरत क्षत्री धर्म घटि जाय सब ॥ कौं जगनिक सु पठाय मोहि कनवज ते बुल्लाव ॥ कैं राखौ प्रथी राज मास द्वै तब कौं सुज्जिव ॥ कांहे कों सजि सेन किये डेरा सन मुक्खहु ॥ कांहे रवत भिज बाय स्वरन की त्यारी रुक्खहु ॥ पहलेन दंड दीनो समुझि अब बानी कातरता करत ॥ तुम सिद्धि करो गढ़ कों अबै प्रथी राज सों हम लरत ॥ दोहा ॥ मलखा भोपति संगले दल ते कढे चंदेलापिली फौज प्रथी राज की खिली बनाफल सेल ॥ ब्रह्मजीत संग बाप के गयो करन गढ़ मांहि ॥ इते बनाफल ने करी चारि फौज रन मांहि ॥ छंद मोती दास ॥ लखि राजनि फौज चंदेल चले ॥ तिहि ऊपर कान्ह अमान पिले ॥ तब आल्हनि रोकि लिये सबही ॥ करिरवे हम जुद्ध खड़े अबही ॥ नृप की खुसी देखन कों गढ़ सें

हम जुद्ध करैं तुम सों अड़ैं॥ तंबकान्ह कही नृपभा
मि गैंगो ॥ तुम चाकर नें कहा जुद्ध रत्यो॥ जिय में प्र
भु हारि गयो जिन को॥ दल जीति सकै काहु कों तिन
को॥ तब आल्ह कही चहुं आन सुनों॥ तुम और
न में हम कों न गिनों॥ जिनि चाखि चना भ्रम सों नि-
रचैं॥ करि है-सब की फिर चैं फिरचैं न करौ अब
ढील घरी पल को॥ लखि यो तुम जुद्ध बनाफल को॥
इत लक्खि विलोकिय कौन धनी॥ चहुं आन बनाइय
चारि अनी॥ मुख अग्र सु कन्ह अमान कियो॥ भर
चंद पुंडीर सु संग दियो॥ तिन में परिहार सु लक्खन
यं॥ संग संकि मराहु सु अबल नयं॥ अचले सहरी
सिंघ सो गुरयं॥ जहं जादव राय सुर्भी स्वरयं॥ इतने
सिर बार अगो धरियं॥ फिरि दाहिनी बाजु कसो करि
यं॥ कछ वाह पज्जून सु पाल्हनयं॥ सिकवार जुझार
सु जाल्हनयं॥ नरसिंह पज्जार सु तोरनयं॥ संग
धामर धीर अमोरनयं॥ विभराज समाज सबंधर-
यं॥ संग दाहिमा सामत दावरियं॥ जहां खिच्चिय
देव सुजैत मिल्यौ॥ संग दाहुली राय अमार चल्यौ॥
दिशि दाहिनी सामन एकरियं॥ हनुमंत समानबली
बरियं॥ दिसि बाइय भीह चंदेल किये॥ अचलेसम
ले सिय संग दिये॥ दोइ दीन सुधीर गंभीर नरं॥ अत
ताइय संभर ईस बरं॥ जहां मल्ल चंदेल सु पूरनयं॥
दिय बाईं दिसा मुख नूरनयं॥ जहां सींनग मल्ल कमच्छ
मिले॥ परिहार सुनाहर संग चले॥ सल सामल सामंत
संग दिये॥ जहां खेत खगार निसंक लिये॥ कयमा

सक मध्धज्ज बिक्रमुयं॥ जहां गौर सु छत्रिय सो भूमि यं॥ हल कारिय सेन नरेस लियं॥ दिस पच्छिम सामत ये करियं॥ चतुरंगिय सेन बनाय लियं॥ मन सी मन में आवजुद्ध कियं॥ उत लक्खन फौज सु दोय कियं॥ हल कारिक मध्धज लोह लियं॥ कम धुज्ज सु लक्खन ताल्ह कियं॥ चहु आन सु मंगल संग दियं॥ सिक्र वार सु तोमर पाल्हनयं॥ जहां मोरियं रूप सुजा ल्हनयं॥ जहां अद्दव राय सु रूप धरं॥ तहां चालुक सारंग बीर वरं॥ तहं ताल्हन वेग हरोल कियं॥ दल बीस हजार सु संग दियं॥ विच तीस हजार सु गोल रची॥ सिर दार सु लक्खन संग सची॥ हय पीठि सु आल्हवना फल यं॥ तिहि अग्र सु ऊदलि है सु गयं॥ दिसि बाइय मोहन दास किसं॥ सुर कासिय जुद्ध को वर्न लियं॥ आर सिंह सु सिंह समाज वरं॥ गज राज सु साजि चलो अभरं॥ तहां सैंगर राय आमानभयं॥ जिन बाईं दिसा भरने अस्यं॥ दिसि दाहिनी ओर संचे सुरयं॥ दुनियं दल रोकि अनेक हयं॥ वरमें अति तोमर मोहन ये॥ परि माल सवै दल सोहनयं॥ महि कर्म सिवागर आगरयं॥ दलने भट दाहिनी ओर भयं॥ दल वानिया के सब संग चलं॥ मकरंद सु कायथ भूरि वलं॥ लखि देव करन्न सुरज्ज नयं॥ काम चंद सु हाय गुरज्ज नयं॥ बड़ गुज्जर वाग री पच्छिमयं॥ सब फ़ौज बनी सु भलच्छनयं॥ चौपाई॥ पंग पचास हजार चले पिलि॥ और पचास चंदेलन को मिलि॥ चारि फ़ौज आल्हा लखि सारद॥ थ

थी राज सों बीस हजार जू ॥ दोहा ॥ देखि फ़ौज परि मा-
ल नृप कांपि चल्यो तन पान ॥ दश हजार भट संग
ले गये महोबे थान ॥ मल्हन वे आवत लखे ब्रह्म जीत
परिमाल ॥ महा दुक्ख दारुन भयो बाढ़ो कोप करा-
ल ॥ छंद भुजंगी ॥ कही बात रानी महा राज ऐसे ॥ अनी
छोड़ि आये इहां आप कैसे ॥ सुनी बात राजा कही रा
जा रानी ॥ पृथी राज कों देखि कें भीति मानी ॥ सुता रा-
ज आधो विचारो सु मैंने ॥ मिलों लाख पंचास लै द्रव्य
वैंने ॥ नहीं आल मानी कही आजु मेरी ॥ कही जाउमो
सों कलिंजरकानेरी ॥ करैंगे पृथी राज सों जंग भारी ॥
कहो जो बाकू सो करें आजु प्यारी ॥ कही नागडेरो सु
चंदेल बानी ॥ ब्रह्मा जीत की ओर रानी रिसानी ॥ अरे पूत धिक्कार
मो कों महा है ॥ किदु कर्ण पक्ष सी न जाने कहां है ॥ नहीं जानती बीजचंदे
ल का को ॥ कहा या सुम् वोरिया पूत जाको ॥ भयो कु-
खि मेरी बड़ो दुःख मो कों ॥ परे कूप क्यों नाहीं ठौर तो-
कों ॥ सुनी मात कीयों ब्रह्मा जीत वानी ॥ भयो दुक्ख
मन में सु धिक्कार मानी ॥ अरी मात मो सों कहे वैन कै-
से ॥ हनों चाहु आंन करी सिंह जैसे ॥ कह्यो कौं नमा-
निये सासन पिता को ॥ लगे दोष भारी कहों मैं हिता-
की ॥ भयो वृद्ध राजा गई बुद्धि जाकी ॥ भयो का जो भ-
ई दसा हीन ताकी ॥ लये जीति कै देश अन्नेक जानि ॥
परवासों सही सिंधु में खर्ग नाने ॥ दिना फेर की वात
माता न जानी ॥ बली स्यार तें होत कातर सुमानी ॥
इन्हें देखि व्याकुल सु आयो करन में ॥ अबै जाउं गोमा-
तहां ई लरन में ॥ करों गोधरा में बाकू नाम ऐसो ॥ लरों

गां सुनोंगी भवण मांहिते सो ॥ करों ऊजरी को रिव ते-
री मल्हा ही ॥ सुजंस को लहों आजु रन में लहाही ॥ पि-
ता की करो सेव चिंता न कीजे ॥ पति व्रता ही को महा
धर्म लीजे ॥ छपै ॥ सुभट सूर ब्रह्मा जीत वचन जिमि
दुभि प्रचारिव ॥ संभरेस की मारि फौज सव सूर विता
रिव ॥ हरहुं गर्व चहुं आन लरहुं विन सीस धरापर ॥
करहुं सुजस जग माहिं भरहुं खप्पर जुगि निवर ॥ गि
द्धनि अघाइ पूरन करहुं शिव माला हरण वरहुं ॥ श्रो-
णित समुद्र तरि जाहु मा मल्हन दे उज्जल करहुं ॥ दो-
हा ॥ ब्रह्मा जीत आयो वगदि छत्री धर्म विचारि ॥ लर-
न परन मन में करन पृथी राज सों रारि ॥ जुरी अनी
सूरनि दर्पटि लरन हुं कारि हुंकारि ॥ दुहूं दलन के वी-
च में होत भार ही भारि ॥ छंद भुजंगी ॥ दुहू सेन मिल्ली
दुहूं वाग लीनी ॥ दुहूं धारि धर्म वरन अष्ट कीनी ॥ दु-
हूं सोग कड्डी दुहूं कोर वड्डी ॥ दुहूं वाक वानी सव दूंव
चड्डी ॥ वजैं भेरि नीसान जंगं तवल्लं ॥ वजैं शंख तुरही ह-
थंलं मुसल्लं ॥ दुहूं नाद कीन्हे सुरं शंख भारी ॥ दुहूं नामहे
के सु हैहै हुं कारी ॥ कहै चंद ऐसे सुनो चाहु आनं ॥ च-
ला ओ सुने जासु वाई भुजानं ॥ मुखं मंत्र जंपे सुदुर्ग भवा
नी ॥ मिलाओ वलं बांधि धावे जमानी ॥ आगे की नसे-
ना सु चंडोल हाथी ॥ रहैं पुट्ठि असवार विलहंत साथी ॥
नचायं तुरी कान्ह पट्टी उठाई ॥ किधों राम पै राम भौंहे च-
रुढाई ॥ आगे आप हाथीन पै हाथ वाहैं ॥ वरं दंत रवैं-
चे उपारें उमाहैं ॥ उपारें दंत वली वाकु जोरैं ॥ गहैं सु-
न्ड सुडाव गासें झकोरैं ॥ कान्हं डाल सुंडान पै तेग लावैं

गहैं कोपि दस्सं धरन्नी मिलावैं ॥ कहूं अंग घायं कहूं
कीन रौरैं ॥ कहूं मारु मौरैं कहूं सूरं दौरैं ॥ कहूं पील सुं-
डं पकरि खैंचि मारैं ॥ कहूं सूर सीसं सिरं तेग झारैं ॥ कहूं
कायरं खाय भै जाय भाजैं ॥ लरैं सूर केते रनं लाज लाजैं ॥
कहूं बीर बाने तराने तराजैं ॥ कहूं युद्ध के आयुधे हाथ
साजैं ॥ कहूं कोकि हीकं कटारी चलावैं ॥ कहूं भल्ल नारा च सुंडी
बहावैं ॥ कहूं कंध वंधं कहूं रुंद हीकं ॥ कहूं घाव जुन्नी कहूं पीक ली-
कें कहूं हक्क धक्कं दुहूं सेनि सोई ॥ वज्जा मेंघरं लोहनि मोह
होई ॥ करैं खंड खंडं अखंडं असवारे ॥ किते एक जोधा-
न के सीस फारे ॥ बरं सांगि लागे उरं फार होई ॥ गिरैं न-
हू वासे काला चूकि सोई ॥ लगैं तीर हीकं हियं होस भा-
जैं । गड़ैं धार हूं के धरन्नी समाजैं ॥ किते मारु मारं किते
हाय हायं ॥ किते पाय प्यादे लरैं चाय चायं ॥ गिरैं सीस ए
तेगं गुहैं गौर मालं ॥ मनों भांस फांसी उतारं कुलालं ॥
चलैं बीर बैताल हालं भचंडं ॥ लरैं पंड वासे करैं खंड
खंडं ॥ भुसंडैं वडैं सो भुजा जंघ अंगं ॥ अखंडं बली धीर
धारं अभंगं ॥ वहैं कंधरी वाम बेधं खुलामें ॥ परैं मुंड-
धरनी सु रुंडं नचामें ॥ गुरंजं वहैं सीस मानी भवानी ॥
वरच्छी तिरच्छी लगा में अमानी ॥ वहैं खंजरं मारु मा-
रंत तारं ॥ परैं पील धरनी समानं वितारं ॥ करैं वार हूं-
का कटारी करूरं ॥ परी मारु मित्रं पेर चक्र चूरं ॥ ऐसी-
भांति कान्हं कियो जुद्ध भारी ॥ मिट्यो ध्यान अंवा खुली
रुद्द तारी ॥ दोहा ॥ कन्ह कटक कीन्हो कहर हटक परी म-
न माहिं ॥ भटकि भीर भाजि वली को रुव गादतु नाहिं ॥ छंद
रसावली ॥ कन्ह कोप्पो जवै ॥ कीन जुद्दं तवै ॥ घाय स-

धै घली ॥ सर्व फौजैं दली ॥ धाय सूरं गहैं ॥ डारि धर
नी रहैं ॥ सार वाणं कियं ॥ खाय सेलं लियं ॥ राय राजं
दुखं ॥ खाय रारैं सुखं ॥ वीर नादं रचैं ॥ चाय केते मचैं ॥
वीर वानं धेरे ॥ खाय सूरं भेरे ॥ फौज कंपी जवै ॥ कन्ह र
हे ख्यो तवै ॥ छप्पै ॥ देखि कान्ह को जुद्ध आल्ह लक्ख-
न सी वुझ्झिव ॥ ताल्हन वेग पठान रूप मोरी रघ खुझ्झिव ॥
सो लंखी वीर के सरी वीर कल्याण वीर वर ॥ तोमर वो
हिंत वीर धीर वोले सु पीर पर ॥ चढ्ढं आन कन्ह भांरि
मघल्ल जुद्ध करी सव एक है ॥ दल थंभ आपु हय कं-
ढ्डि कै संभारो सेना सबै ॥ ताल्हा हय दौरा इकै संभारी
सव सेन ॥ लेहु लोह सव हाथ में लरौ करौ दिय मन ॥
छंद पद्धरी ॥ धामंत ताल्ह संभारि सेनि ॥ सिरदार आठ
वर गहे तेनि ॥ गोइंद राय हरि पंद सोन्ह ॥ इक्कलवला-
इ दल सल्लख लोन्ह ॥ मोरी सरू सेंगर अमानि ॥ जादों
सु दंद वर गह्यो पानि ॥ मंगल्ल चौहान तोमर जुवान ॥
चालुक्क के सरी सुवल मान ॥ वड़ गुज्जर राना महावा-
हु सुज्जान वैस संभरि सुचाहु ॥ नर हरि यं वैस कामथ
कल्यान ॥ सेंगर वराय जाल्हन जुवान ॥ वघेल सूर पू-
रन अमोर ॥ लोधी सुसीस रामं सु जोर ॥ गोकुल सु व-
घेलो रूप राज ॥ गोतम जुझार इंदलि समाज ॥ पाल्ह-
न पमार भग वान सूर ॥ निंडुर हराय डोंगर जरूर ॥ जा-
गनि कू भार जाल्हन जुवान ॥ दिनियां सु वैसुवा सुव-
ल वान ॥ कादुल्य कर्म चंदं वलिष्ट ॥ मकरंद जालु श्री
धास दुष्ट ॥ हरि यंद देव कान दुरित जोर ॥ किरपा सु-
गौर जुद्धं अमोर ॥ मंदोर भूपनि नराज सूर ॥ कच्छ वा-

हू राम खींनि सु नूर ॥ गंभीर तेग खंज्ञान नाह ॥ अनु
म्हू सिंह सेंगर सु नाहु ॥ विर सिंह बीर सुर रवी सु मूर ॥
जदूं वा राय कम नेत पूर ॥ परि माल सेंनि इतने हजू-
र ॥ नवरंय राय रघु वंश सूर ॥ प्रथी राज सैंनि सामंत
दंद ॥ कयं मास कान्ह पुंडीर चंद ॥ निंडुर हराय पज्जू-
न मोन्दु ॥ वीरं वलिष्ठ नर सिंह लोदु ॥ हाहुली राय हं-
मीर धीर ॥ लक्खन पमार सज्जोग हीर ॥ रावन्न राम तोंव-
र पहार ॥ संकिमां राय विर सिंह सार ॥ वर अत्त वायं
चहुं चान बंक ॥ नर नाह कान्ह आगें निसंक ॥ चामंड
राय धामर सु धीर ॥ खेता पमार पाल्हन सु वीर ॥ प-
रि माल मेन लक्खन सु धाय ॥ प्रथी राज सेंनि निंडु-
र हराय ॥ धाये सु दोऊ सुक मेल कीन ॥ धरि धर्म हा-
थ किर वान लीन ॥ दोहा ॥ लक्खन सी परि माल दल
निंडुर दल चहुं आन ॥ आहुरि यो सामंत रनत सें ।
वीर समान ॥ चौपाई ॥ लक्खन पंग भती जो इत में ।
प्रथी राज निंडुर दल जित में ॥ एहे वीर आहुरे जंगा-
ह ॥ लाल चंदेल संभा रयो संगाह ॥ छंद तोटक ॥ लखि
लक्खन निंडुर सी भरन्नं ॥ चहुं आन चंदेल निरक्खि
भवन्नं ॥ कम धुज्ज सु दोऊ अकोर अरे ॥ वह लाज
ज जीर नि सों ज करे ॥ हल कारि दुहूं जन लोह लियं ॥
निरखे चहुं आन चंदेल लियं ॥ लगि तीर सना हनि
पार कियं ॥ मछुरी मनो जाल में मुक्त लियं ॥ लगि सेल
वरक्खतर पार भये ॥ सुख पन्नग वारि में काढि ल-
ये ॥ किर वाम चहें भुज दंड मयं ॥ तरबूज मनो हर
कंत मयं ॥ तरवारि चलें दुहुं ओर लरं ॥ विन सीस लरें

सिर टूटि परं ॥ गहि लेत गयंद नरिंद करं ॥ पकरें क-
र सुंड फिराय तरं ॥ उच काय के पुच्छव नील हिवं ॥
हनु वंत दौना गिरि लौं गहियं ॥ हय के गहि पाय पर-
छि धरं ॥ नर वारि दई अस वार मरं ॥ इक सस्त्र लरैं
भर वथ्थ वली ॥ तहं श्रोणित की सरिता उच्छली ॥ इ-
हि भांति दुहूं जन जुद्ध कियं ॥ तजि संक निसंक समा
नि हियं ॥ जुरि लक्खन निंडुर वीर महा ॥ इनि दोउन
नें घड़ जुद्ध गहा ॥ दोहा ॥ लक्खन सी पारि आल दल निंडुर द-
ल चहुं आन ॥ आहुरि यौ सामंत ए सरसे वीर समा-
न ॥ छंद पध्धरी ॥ विरचियो लोह लक्खन सु धाय ॥
ता समैं कोपि निंडुर हिराय ॥ वाजंति जंब पील न सुधी-
ठि ॥ सैना सु जान की तेज डीठि ॥ इल कारि सेनि
किल कारि आय ॥ अप अप्प जीति चाहंत सु भाय ॥
लक्खन जुटंत वजरंग वीर ॥ निंडुर बराय सज्जंत
गहीर ॥ हं कारि शब्द वल करत हंक ॥ दल दप दृिस्स-
र दौरैं निसंक ॥ चिफरंत वीर वंरने त सूर ॥ सुद गल
उतंग मारत जरूर ॥ लगि खील खील ह्वैं जात सीस ॥
दश पांच आठ द्वे चारि वीस ॥ गहि सुंड सुंड फेरंत पा-
य ॥ हय फेंकि देत पूछैं फिराय ॥ मारंत पील तोरंत
सुंड ॥ वाहंत तेग डोलंठ रुंड ॥ गहि लेत एक कों एक
धाय ॥ गहि कमरि ज्वान मारत फिराय ॥ काकरं कि-
तेक कों पत डरात ॥ केतेक सूर वीरं लरात ॥ केतें-
क तेग लगि होत रुंड ॥ केते क हाव विन सीस मुंड ।
घायल कितेक धर पर अचेत ॥ सुहुं ओर जोर भयो
वीर खेत ॥ लक्खन हि संग ताल्हन पठान ॥ निंदुर

हसंग सेंना सुजान ॥ हज्जार संग, पंचास भीर ॥ लक्ल-
न हिसंग सज्जति गहीर ॥ सिर दार आठ कमधुज्ज-
संग ॥ दौरे सुगोल करिकें अभंग ॥ निंडुरह राय पर
हल्ल कीन ॥ ताल्हन पठान आगें नवीन ॥ इक लौजु दे-
खि निंडुर हराय ॥ आयेजु सूर परि माल धाय ॥ खोलि
यो आंखि पट्टी सु कान्ह ॥ ले करि गुरज धायो अमा-
न्ह ॥ सासु हैं आय ताल्हन्न वेग ॥ दीनी सु कन्ह के आ-
य तेगी ॥ दीनी गुरज्ज तालन्ह सीस ॥ है गये मूंड़ के-
टूक वीस ॥ रुंड हकारि फिरि हल्ल कीन ॥ कय मास
सीस में गुरज दीन ॥ फिरि दयौ कान्ह मुदगर फिरा-
य ॥ टूट्यो पठान धरनी पराय ॥ तव दई तेग कय मास
दौरि ॥ ह्वै गये टूक धरके वितौरि ॥ सौनिंग देखिता-
ल्हन्न काम ॥ चलियो जु साजि सेंगर सु ठाम ॥ इनमें
पज्जून कूरंम धाय ॥ सौंनिंग उतै सैंगर वराय ॥ लई
हाथ सांगि सेंगर सु सूर ॥ दीनी पजून के हीज-
रूर ॥ हीकं अपार चोटं लगाय ॥ पुनि लई तेग पज्जू-
नं धाय ॥ दीनी दुहत्थ सीसं उड़ाय ॥ गिरि परे धरनि
सेंगर वराय ॥ इत लगी सांगि हीकं अपार ॥ भंये अति
अचेत पज्जून सार ॥ फिरि पिल्यो रूप मोरी मरद्द ॥
केतेक सूर वरधे जरद्द ॥ चंदेल फौज के सूर धाय ॥
मंगल चौहान नौरे नराय ॥ केसव सुदा समरून अमा-
न ॥ सिर दार आठ सुंदर सुजान ॥ मच कंति धर-
नि लच कंत सेस ॥ कस कंत कूर चंदेल देस ॥ वा-
जंत वज्र करि सभरि सार ॥ मानों करंत परवत्त पा-
रव्वत रपी रज्ज के सूर धाय ॥ सिर दार आठ भांजे सुभा-

य॥ छप्पै॥ हनि ताल्हन पठान कन्ह नैं काटे प्राणह। सेंगर सो निग पेरे घाउ कीन्हे वहु ज्वानह॥ लड़े एक तें एक रुंड खेले विन सीसह॥ कन्ह गुरज्जह मारि कै ताल्ह सिर कीये वासह॥ और हजार रजपूत कटि हाथी पंच पचास गिरि॥ चहुं आन हांक सामंत करि चली पंग की फौज फिरि॥ दोहा॥ पृथी राज दल मैं परे हाथी मस्त पचास॥ अरु हजार रज पूत कटि घायल सूर प्रकास॥ कछ वाहि पज्जून के लगी सांगि वहु सोइ॥ परी मूर्छा धरनि पै है सामंतन खोइ॥ भजी फौज ला खन लखी वाल्हन आये काम॥ हांक मारि कम धु- ज्ज नें वल करिकें दल थाम॥ चौपाई॥ जुरी सेनि भा- जी सब सोइय॥ फिर रज पूत एक तन होइय॥ जुरी सेनि छत्तीस हजारह॥ भये अगारी फिर सिर दारह॥ निंडुरह राय फत्ते सिर बुल्लिव॥ वीर वीर तन में रस फु- ल्लिव॥ जुरी जंग फिर सामंत धाये॥ आयुध लये क्रो- ध वर छाये॥ छंद मोती दाम॥ हजार छत्तीर जुरे रन जुद्ध॥ सजे कमधुज्ज सु लक्खन सुद्ध॥ हुते भर- लक्खन नामिय जुद्ध॥ उतै रुप्यौ निंडुर राय सों जुद्ध॥ भये भर लक्खन नामिय सुद्ध॥ वहैं फिर वान सु ज्वान न हत्थ॥ करैं दल हंक सवे समरत्थ॥ भभ क्कति से नि चट क्कति तोप॥ कर कवत बान दुहूं दल कोप॥ भन क्कय वान सु पंजर वेधि॥ कर कवैं कमान दुहूं कर छे- द॥ लगैं उर सांगि सु पील गिरंत॥ सनं मुख सूर उपा रत दंत॥ धरैं कर खप्पर जुग्गिनि जोर॥ हंकार डिडो- लति वोलति सोर॥ लगै सिर लेग नि सूर परं॥ तव-

ही सु वरं गल्ला आय वरं ॥ लगैं लरै खंजर पंजर पार॥
करैं किलकार सु जुग्गिनि लार ॥ झट झत एकन कों
गहि एक ॥ पट झत जाय धरापर टेक ॥ लुट झत सी-
स छुट झत सूर ॥ चट झत तोप भट झत भूर ॥ सट झ-
त तेग नट झत निद्ध ॥ पट झत वीर गट झत गिद्ध ॥ ठ-
ठ झत कायर धायन देखि ॥ छट झत सूर धरा पर
पेखि ॥ वहैं फिर वान परैं सिर सूर ॥ करैं वपु रोस-
दुहूं दल पूर ॥ मिले दल लक्खन निंढुर राय ॥ भये
हग चारि फिरे लिय आय ॥ लई कर लक्खन तेग स-
हाय ॥ दई सिर निंढुर के सुख पाय ॥ कढ्यौ लगि टो-
प लगी सिर आय ॥ परैं धर मूरछि निंढुर राय ॥
लख्यौ जब लक्खन कन्ह सु धाय ॥ लये सु कमान
दिये सर आय ॥ उठ्यौ जब निंढुर लीयें गुरज्ज ॥ द-
ई वर लक्खन सीस सुरज्ज ॥ हजार कढूवा भये सि-
र सोइ ॥ परे धर लक्खन लक्खन होइ ॥ भयो फिरि
मूर्छा निंढुर राय ॥ गह्यौ धर लक्खन अंत सु पाय ॥
लई फिर वान सु कन्हर कोपि ॥ चले कय मास लये
मुख ओपि ॥ हुते सन मुक्ख सु बाबुल सज्जि ॥ भये
भगवान हरोल सु गज्जि ॥ चले दल पत्ति लिये कर-
वान ॥ चले नर बद्द नरायन ज्वान ॥ मुकंद सु का-
यथ छप्प सु होइ ॥ हुते जुर पंग की फौज में सोइ ॥ हु-
ते भय चंद पुंडीर जुमान ॥ उतै भय बाबुल औ भगवा-
न ॥ लयौ खग चंद पुंडीर सु कोपि ॥ दयौ भगवान
के सीस में रोपि ॥ लयौ सिर पार धस्यौ धर धीर ॥
तवै उत आइय बाबुल वीर ॥ नरायन दास नर व्वद को-

पि ॥ मिले दूत कन्हर आय सु रोपि ॥ मुगदर कन्हपे-
तीनि सुडारि ॥ लगे नहि नैंक सनं मुख चारि ॥ गहे
जब कन्हर तीनों चरन्न ॥ पटक्कियले करि पीन धर
न्न ॥ भये धर चून गये जम लोक ॥ भगी जय चंद की
फ़ौज स सोक ॥ दोहा ॥ भजी सैंनि सिर ढार है यां भी-
दल पति दौरि ॥ जात कहा भाजे करो पृथी राज़ सों रौ
रि ॥ छंद भुजंगी ॥ पिल्यो बैस दल पत्ति संन मुकव
सूरो ॥ गहें तेग हत्थं समत्थं गरूरो ॥ पिल्यो जंपि यो-
जो धमक रंद वीरं ॥ अखारे पडे लैंप चारे अधीरे ॥
धरें नौंन सीसं मरें खेत ढेतं ॥ फते स्वामि रद्दैं भये
जो अचेतं ॥ वजे नाल गोला हयं सीस रक्कें ॥ किते का-
यरं अंग जंगं करक्कैं ॥ मिले हत्थ हत्थं समत्थं सुवा-
नी ॥ मनो ध्यान खेलंत हेरी रमानी ॥ फुलें फूल फूलें
मैं की ले करक्कैं ॥ किते कायरं भाजि न्यारे फरक्कें ॥
इते चंद पुंडीर मकरंद धायौ ॥ दुहूं हत्थ तेगं हयं
सो न चायौ ॥ तवे चंद बोल्यो सुनौं कायथ ढहो ॥ करो
जाय लिखनी कहा जुद्ध कढ्ढो ॥ सुनी चंद मकरंद
मुक मेल कीनो ॥ लयें हाथ तेग अवेग नवीनो ॥ दई
चंद पुंडीर के सीस जानी ॥ मनो वीज आकाशतें झिल
मिलानी ॥ लटक्कें सु चंदं धरा मूरछायौ ॥ तिही ऊपरं
दौरि कय मास आयौ ॥ दई आय कय मास मकरंद
ईसं ॥ गई अंग संगी भई पार सीसं ॥ भई लागि न्या-
री सिरं पार दोई ॥ मनों वाटिये फांरि तर वूज सोई ॥
परौ कायथं सो धरंनी धरासें ॥ नरौ अपसरा लै-
गई लै वरा सैं ॥ गिरौ देखि मकरंद दल पत्ति धायौ ॥

लये हाथ कुत्ती हयं सो दवायौ ॥ दई आपही कंकयं मास पीकं ॥ भ्रमी सात वारं गिरौ सूर सीकं ॥ लख्यो कान्ह कय मास सो सूर आयौ ॥ दले पत्ति पै आय मुगदर चलायौ ॥ भयौ चूर चूरं दलं पत्ति खेतं ॥ भयौ चंद पुंडीर दल में अचेतं ॥ चौपाई ॥ कहैं आल्ह उदलि सुनि भाई ॥ कनवज कूम क काम सब आई ॥ लाखन तल्हन बचन निवाहे ॥ पृथी राज दल खर्गन गाहे ॥ दोहा ॥ कही बात कनवज्ज में मो सांचो कर दीन ॥ लंडे अरे मारे बहुत छत्री धर्म सु चीन ॥ [illegible] जीत बुलाय कैं कहे आल्ह इमि बैन ॥ जाउ आपु परि माल पै करौ महोवे चैन ॥ छप्पै ॥ उचरि आल्ह इमि बचन सुनौ ब्रह्मा जीत सु कान्हह ॥ आपु जुद्ध रण छंडि जाउ जीवत घर मानह ॥ हम मरि हैं सब सुभट काम आमें धर काजह ॥ तुम कालिंजर जाउ मिलौ चंदेल समाजह ॥ कीजियौ बैन अज्ञान तजि दंड दर्वि सुखभक्खियौ ॥ मिलियौ सुराज चहुं आन सौं नगर महोबो रक्खियौ ॥१॥ सुनिब आल्ह की बात कही ब्रह्मा जीत कुमारह ॥ पृथी राज सौं करें जुद्ध कीजे नहि बारह ॥ लरैं धरैं इह टेक करौं खर्गन कौ ख्यालह ॥ आपु जुद्ध मन नाहिं कहौ मो सौं दर हालह ॥ खंडौ सु फौज पृथी राज की गम साखि ऐसें कहत ॥ देहुं सांगि चहुं आन कै डारिदेहुं आसन सहित ॥ छंद पद्धरी ॥ उच्चरे ब्रह्मा नंद सुनौ आल्ह ॥ चलिये जु सूर सामंत चाल ॥ लीजिये बाग निर मोह होय ॥ करिये न दूसरी बात कोय ॥ किज्जिये जुद्ध अब मोह छंडि ॥ चहुं आन रान कै गर्व खंडि ॥ सुनिं

आल्ह बेन ऊदलि बुलाय ॥ दीनो सु बोरु भारत्थ भाय॥ सामंत पास बुल्लाय लीन ॥ सब सों सु नाय करि बेन कीन ॥ सेना सु साठि हज्जार तोलि॥ उच्चरे आल्ह जिय संक बोलि ॥ कनवज्ज नाथ दिय कुमक युद्ध ॥ आये सु काम सामंत जुद्ध ॥ कमधुज्ज लखन, ताल्हन पठान ॥ पहिलें जुटंत परि है जिठान ॥ परिमाल सूर सव हीस लाल ॥ चंदेल नोन कीजे हलाल ॥ लीजिये लोह निर मोह होइ ॥ चाहो सु जीव घर जाउ सोइ ॥ चौपाई ॥ याबिधि आल्ह बनाफल कही ॥ सब रजपूत एक तन सही ॥ छत्री धर्म काज सिर दीजे ॥ जो चाहै सो रस्ता लीजे ॥ दोहा ॥ आल्हनु मंत्र सुनाय यो सबनि चित्त दिय खेल ॥ अवहिव रो सुर अपछरा नोंतु उजारि चंदेल ॥ छंद भुजंगी ॥ कही बात आल्हा सुनों ब्रह्म जीतं ॥ करो मन्त्रि चिंता लहौ बात मीतं ॥ अतुल जुद्ध सामंत देखे न भारी ॥ करो जुद्ध परिमाल नंद विचारी ॥ तजो जुद्ध सामंत नृप पास जाहू ॥ करो जाय निर संक सेवा पिताहू ॥ लरेंगे-मरेंगे करेंगे न लाचों ॥ करेंगे सु परिमाल को लोन सांचो ॥ टरे नाहि छत्री करें जुद्ध भारी ॥ सबे एक ह्वै केल-ड़ें तेग धारी ॥ मरें जांय छत्री विजे पाय कैकें ॥ सबै जाउ घर को यही बात लैकें ॥ कहो जाय चंदेल सो बात येही ॥ मरे कै विजय पाय वग दे सु वेही ॥ विजे पाय कै आय तो ते मिलेंगे ॥ मरे तो सुजस ए अम निपै चलेंगे ॥ सबै दीजियो दंड ऐपी राज रंजे ॥ मिलो आय आगें रहौ राज लाजे ॥ महोबो सुनो रक्खियो दंड दैकै सुता दीजि यो राज निर संक ह्वैकै ॥ सुनी सूर बानी ब्र-

ह्मजीत सारी ॥ तबै आल्ह सों बैन बोल्यो हंकारी ॥ ध-
नी होय धरती न कों भोग भोगै ॥ मरै नाहिं जातें हँसै
सर्व लोगै ॥ नहीं बीज रजपूत को जाहि जानो ॥ लियो
नारि फिर ताहि सकरै बखानों ॥ सुनी ब्यास बानी ब-
ड़े सुकख गाई ॥ सबै लोग मन में सुरानंद जताई ॥ दो-
हा ॥ जा धरती कों खाय कें मरैन ता पर कोढ़ ॥ अंतका-
ल नर कढ़ि परै जग में अपजस होइ ॥ राजा धर जीतें सु
मरैं करैं स्वर्ग को भोग ॥ चहूं चक जस बिस्तरै हँसै ग
दुर्जन लोग ॥ चौपाई ॥ जा धरती को भोगै भोग ॥ जातु
सु नाहि मरतहि लोग ॥ सो रानी ने फिर तौ लीनो ॥ ब-
ड़ो ब्यास यह निर्नय कीनो ॥ जो रजपूत नगति कों (
पावै ॥ जम को दंड सीस पर लावै ॥ चौरासी जोनन में
भटके ॥ फिर कत्तीर नरक में पटके ॥ धरती जीति
न राजा मरई ॥ नाम जार जात सब धरई ॥ सुरगुरु
बेद पुरान बसाखी ॥ ताकी साखि ब्यास मुनि भाखी ॥
ताही मारग हम कों चलनौं ॥ जुद्ध जुरैं दुर्जन दल द-
लनौ ॥ तातें आल्ह बात यह करी ॥ चहूं आनन कें गर्व
हि हरी ॥ छप्पै ॥ अहुटि महोबें जाउ आप शिक्षा हिय
धारैं ॥ देहिं दंड पृथी राज सुता अध राज बिचारैं ॥ जग
में अपजस होयहोय बैरिन को हासह ॥ नास धरै सब
कोढ़ नरक कों पावै बासह ॥ पृथी राज फौज ठाढ़ी (
लरन तुम अब हुनि बात नि करत ॥ सजि चलहु कर-
हु रन आल्ह अब सुजस होत जीत न मरत ॥ १ ॥ फिर
सुकाहत ब्रह्मा जीत आल्ह बानी सुनि लीजे ॥ करौ पै-
ज परि माल मारु सामंत नि कीजे ॥ बरहु स्वर्ग अछरा

हरहु चहुं आन गर्व सव ॥ भरहु जुग्गिनी पत्र रुधिर सों सुकर सुंड भव ॥ परिमाल नंद इमि उच्चरत टूक टूक ह्वै कै लरहु ॥ कांटों सु दंत हस्तीन कैं मल्हन देउज्जल करहु ॥ छंद मोती दाम ॥ कहे ब्रह्मा जीत सु वैन हुलास ॥ सुनो सव फौज चंदेल निवास ॥ सुनो उच वानिय ऊदलि आल्ह ॥ सवै चलो सूर छत्री धम चाल ॥ बुलाइय केशव दास चंदेल ॥ करो अरि सों अब फौज अमेल ॥ लियो राय सिंह सु गौर बुलाय ॥ सज्यौ सँगलौ धिय ईश्वर राय ॥ बुलाय बभूपति मल्हन पूर ॥ बुलाय बवेसनर व्यद सूर - मिल्यौ चहुं आन सुरूप गहीर ॥ दिये दिस वाइय भारिय भीर ॥ बुलाय बखान पठान चंदेल ॥ मिल्यौ शत्रु साल सु मल्हन मेल ॥ सकत्तिय सिंह सु सौमम रह ॥ लिये जगते ससु स्याम सरह ॥ सज्यौ पर मानंद पूरण राय ॥ दई दिस दक्षिन ओर बताय ॥ भये हरि बल्ल सु ऊदलि आप ॥ लिये सँग जाल्हन भाट मताप ॥ लियौ चक्र पान बघेल सु सूर ॥ दलंग हुलोत भुजा भरि पूर ॥ जग निक दाहिमा डाहर कीन ॥ इतें सरदार हरौल सु कीन ॥ विंचै ब्रह्मा जीत कुमार सु सूर ॥ दलं सिर सौल सु अल्हन पूर ॥ अमान सुराय पमार परम्म ॥ चले सिर धारि सो क्षत्री धर्म्म ॥ सवै दल जोरि हजार पचास ॥ धरे सिर धर्म करै हियहास ॥ चौपाई ॥ दश हजार वाई दिस दीनी ॥ आठ हजार रौल सो कीनी ॥ द्वादश सहस दाहिनी तोलहु ॥ वीस हजार वीच में गोलहु ॥ दोहा ॥ सहस वीस के-

गोज में ब्रह्म जीत अरु आल्ह ॥ आठ सहस सेनात वे हं कारी तत काल ॥ छंद पद्धरी ॥ इल कारि आल्ह सेना सु पूर ॥ सब भये सूर आगे हुजूर ॥ इल कार ध्यल्ह किय कार कीन ॥ अपु अप्प जुद्ध रण भार लीन ॥ कंगल सु अंग सिर टोप लोह ॥ सामंत उद्द आगे सु होह ॥ हज्जार आठ असवार संग ॥ दौरे सु गोल करि के उतंग ॥ बारह हजार दक्षिण दिसान ॥ दौरे सु हाथ लै वीर वान ॥ हे गई एक सेना मिलाय ॥ हज्जार बीस हरि वंस सुभाय ॥ उत पांच सहस सेना हमील ॥ सिर दार आठ सुंदर सु डौल ॥ नर नाह कन्ह पुंडीर चंद ॥ गोइंद राय गढ़ लौंत ढंद ॥ पज्जून जैतभौ हां चंदेल ॥ कनकेस बीर पम्मार पेल ॥ तोंवर पमार हाडा हमीर ॥ संकिभा राय झाडुली हीर ॥ इतने हरौलसिर दार कीन ॥ लै तेग सुभर हय छांड़ि दीन ॥ ऊदलि सु संग सिर दार इत्त ॥ सक तेस सोल बैसी सुमित्र ॥ बाढिभा सूर ओपन्नि पास ॥ जाल्हन राय जंग हुलास ॥ अम्मान राय . परिहार सोह ॥ वीर बलिष्ट नर सिंह लोह ॥ मोहित्त परम नंद सुचाल ॥ भूना भढौरिया छत्र साल ॥ तोंवर पहार भुज धरा रुद्ध ॥ अचलेस अजय उमगे सु जुद्ध ॥ नव लेस अल्ह मन रन उमंग ॥ कूदे सो एक ही वार जंग ॥ इतने सुकूदि धरि युद्ध लाज ॥ हज्जार वीर ठाकुर समाज ॥ उतरे जु सूर दुअहू दिमान ॥ अप अप्प इष्ट वर कारत पान ॥ दोहा ॥ चाउ आन कन्हर प्रबल उदलि सुभर प्रताप ॥ जुद्ध करन को सासु हे भये वीर कर जाप ॥ छंद-

त्रोटक ॥ तजि कै हय ऊदलि कन्ह लरं ॥ गहि कै किर
वान सु ढाल करं ॥ अभंगे चलुं आन चंदेल दलं ॥ अ-
प अप्प सु सेन कराय हलं ॥ गज ऊदल सौक हरौल
कियं ॥ गज सौक छूटे उत पेलि दियं ॥ अति सुंदरपी-
ल नि पंति लगी ॥ भर भाद्व जानि घटा उमगी ॥ उ-
त उज्जल दंत लसंत सधें ॥ वगुला घन में अनु पंति
वधे ॥ अति लाल बिशाल ध्वजा रम की ॥ तड़ि ताम-
नो वद्दल में चमकी ॥ हसनी सत दोइ हरौल दियं ॥
तिन ऊपर कान्ह सकोप कियं ॥ गहि दंत उपारत भं-
त बली ॥ मनु मालिनि तोरति फूल कली ॥ हसती
पात दोइ जमाति भली ॥ तहां श्रोनित की सरिता
जो चली ॥ परके गहि सुंड गयद करं ॥ हनु वंत गि-
रावत पानि गिरं ॥ बिरझ्यो बर कान्ह अमान बली ॥
हग देखि चंदेल की फौज हली ॥ पिलि यो उत ऊद-
लि तेज कियं ॥ सब सेनि समाज सु एक जियं ॥ पु-
नि बाग लई दल ऊपर यं ॥ चलुं आन बना फल भूप-
रयं ॥ दोहा ॥ लरत सूर सन मुख जहां धरत धर्म सि
र भार ॥ परत टूटि धरनी तऊ करत मारुंई मार ॥ छं-
द मोती दाम ॥ गहे किर बान सु आन न हत्थ ॥ परै-
धर ऊपर सीस समत्थ ॥ कर किल कमान कर क्क
र छुट्टि ॥ खर क्कत बान सना हनि फुट्टि ॥ गनं गन
जुत्थ पल प्पल धाय ॥ घन: घन घायल होत प-
राय ॥ नरं नर लोह सु लोहुन पूर ॥ चरं चर उड्डय
सीस य चूर ॥ कुल क्वाल खेलत मेलत मार ॥ जरं-
त सु बान दिलैं दल भार ॥ कल क्कत तेज कला करन

झेल॥ करैं दल सूर दुहूं दिसि पेल॥ डरडुर कायर कांपत देखि॥ रुणां कय रुंड रहनं कय पेखि॥ ढरक्कत मुंड निरक्कत नैंन॥ करक्कत तीर चरक्कत बैंन॥ थिर क्कति सैंनि मुरक्कति नाहि॥ दरव्वर दौरि परैं दल माहि॥ परं परं फुट्टत पापर पूर॥ फर प्फर फैलत फैं फट॰तूर॥ खर क्कर खात रूपे दल दोइ॥ हरीहर नाम उच्चारत सोइ॥ पिलि इत संजि मराय सहाय॥ उतै गहलौत दल प्पति राय॥ पिल्यौ मुख आयस रहनं मेल॥ तजी करवान लिये कर सेल॥ लगाय वसं किम कैं हिय सार॥ रह्यौ सधि सूर भयौ लगि पार॥ दई दल पत्तिके सीस में तेग॥ सदा सिव गौर लियौ सिर बेग॥ लख्यौ तब भोपति की निहरीस॥ दई उनिदौरि कै संकि मसीस॥ भम्यौ सत बार सु सूर छ मानि॥ चल्यौ नर सिंह सहा इक तानि॥ दई नर सिंह गुरज्ज सु सीस॥ पर्यौ गिरि भोपत्ति सो धर नीस॥ चले चक्र पानि इते नर सिंह॥ मिले दोऊ बीच परी मन बिंह॥ थलब्बल होइ लरे मलसार॥ गिरे दोउ संग भई भरमार निकासि जंमद्दर चक्रय पानि॥ दई नर सिंह के हीकमें आनि॥ दियौ नर सिंह सुखं जर आंत॥ मरे चक्र पानि उबेरे दांत॥ दोहा॥ चक्र पानि मरि जुद्ध तजि अछुटि फौज परिमाल॥ तबै आल्ह बानी कही ब्रह्मा जीत सौं हाल॥ छप्पै॥ मरन धार मंगा लिय वीर ब्रह्मा जीत सु आख्व॥ भजे न्रपति परि माल देखि दल धर्म्म लजाइव॥ कुद्धि कुटम पंग को काम धल कवन जुरि जंगह॥ तिल तिल तन कटि गयौ मरन छांड्यौ नहिं (

अंगरह॥ताल्हन पठान बिन सीस रूपि अतुल परा क्रम कम धकिय॥भाजंत सैनि जीवत महि उह मांहि दुख सालंत हिय॥ छंद पद्धरी॥ परिमाल नंद हलका रि आय॥बिरचि यौ कुंबर मंगल मनाय॥हलकारि सेनि सब एक कीन॥ आल्हन्न सीस पर भार दीन॥ ऊदल्लि साथ दिय संग सूर॥फिरि चले जुद्ध कों हैलजूर॥सकते ससोम बंसी जुवान॥बकसी सुदेव ऋन सज्जि समान॥बर गहर बारसन्न साल सूर॥ डोंगर सु दल नदेवा हजूर॥ तोमर अमान गज्यो रराय॥सिक्र वार सूर के सब सुधाइ॥बड वंत गोड़ जद्दव सुझील॥सुरखी बसंत सुंदर सुसील॥जाल्हन्न भाट अति तेज तानि॥कायत्य कर्म चंदं वखानि॥वनियों सुभारमल्ह सरह॥ऊदल्लि संग एते मरह॥हज्जार षोड़स असवार दीन॥गज राज दोय सैमद मलीन॥ पंचास तोप धरि हेस अंच॥गोला सुखाति मन पंच पंच॥हज्जार पंच दिय वान भूर॥ऊदल्लि संग सजि चले सूर॥इत कान्ह चंद पुंडीर जैत॥ कन केस सूर उत्तम सुचेत॥भौंहा चंदेल परिहार पीय॥अतताइ गोपि सो अरि समीप॥संकि साराय धरि धीर जुद्ध॥गूजर अनेक मन किये सुद्ध॥लक्खन पमार हाडा हमीर॥सजि चले सूर सामंत धीर॥चहुं आन टोंक चाटा सु सज्जि॥लक्खन पमार नौ वत्ति वज्जि॥तोवर पमार भुज धरा रुद्ध॥अचलेस अजय उमंगे सु जुद्ध॥पज्जून मलय सीपि ना पूत को पंत जानु रघु नाथ दूत॥लै हाथ शस्त्र अस्त्रं कराल॥फिं कंत ज्वान रनं बिसाल॥ दोहा॥ पांच सहस पृथी

राज के हरि बल कन्ह सुभार ॥ उतै बना फल सैनि जु-
रि ऊदलि बीस हजार ॥ ढोक बीर रिसाय कैं अस्त्र ।
लिये कर माहि ॥ बाग उठाइ सगा गहे चले मझा तन त्राहि ॥
छंद हनूफाल ॥ बजरंग बीर उसंग ॥ चले साजि के बहु
जंग ॥ उत कन्ह हैं बर डारि ॥ आये सु बीर हंकारि ॥ दस
सहस हैं वर लोइ ॥ उतरे सु हैं वर सोइ ॥ दस सहस है
वर पुट्ठि ॥ जिन तोप बान न छुट्टि ॥ हय छंडि तीनि हजा-
र ॥ चहुं आन कन्हर लार ॥ अस वार दो य स हंस ॥
रहे पुट्ठि राखय हंस ॥ ढिसि पिले पेले ताहि ॥ फेल सु
कन्ह सुभाय ॥ कढि दंत मंत नि पानि ॥ घल बील ।
कंबल तानि ॥ गहि सुंडि फेर तगाहि ॥ हनु वंत गिर
वर बाहि ॥ भुज तुंड पट कट तानि ॥ हनुवंत दुति जिहि
जानि ॥ हय पकरि बाहत फेरि ॥ अस वार जूथ न हेरि
अग हंत पील न कोपि ॥ भानियो कन्हर जोपि ॥ पर ।
दल सुदल सुख मूय ॥ जिमि लंक बंधन जूय ॥ सुर
की जु फौज चंदेल ॥ दल देखि कन्हर मेल ॥ मारे सु
पील मतंग ॥ धर परे पर वत अंग ॥ छप्पै ॥ कन्ह कौ-
पि चहुं आन हने हाथी मत वारे ॥ काढ़ि दंत बढ़ि बाहु
डोलि हूंकर से डारे ॥ हैं वर हत्थ समूह ढाहि दल दयो
सु सैन ह ॥ भजी फौज चंदेल देखि सामंत सुनै नह ॥
सुर कियौ फौज ऊदलि लखी भयौ बना फल कोटि र-
न ॥ सय लोट करिय दुर्जन चमूं सैं भेटत सामंत घन ॥
छंद मोती दाम ॥ मिलि लाखन फौज बना फल बीर ॥
चल्यौ सन मुक्ख भरन्न सु धीर ॥ करी पर दक्खिन आ-
ल्हन काज ॥ लिये सब सामत संग समाज ॥ चल्यौ ।

सोम वंस सुसत्रिय धीर ॥ पिल्यौ वर देव करन्न गहीर। पिल्यौ दल डोंगर देव दुवार ॥ पिल्यौ सु रूपमान है। तोमर तार ॥ पिल्यौ राय रल्ल रल्यौ रम रह ॥ पिल्यौ सत्र साल सु बांधि जरह ॥ पिल्यौ सिक्रवार सुरज्ज न सिंह ॥ पिल्यौ दल के सब गौंड सु धिंह ॥ पिल्यौ दल दुरजन जह-वजोर ॥ सुर क्खिय वीर वसंत अमोर ॥ पिल्यौ दल जाल्हन भार हुलास ॥ पिल्यौ क्रम चंद सु कांय थ पास ॥ पिल्यौ भर मल्हन वैस वरिष्ट ॥ इते पिलि कदलि संग सरिष्ट ॥ इते हय छंडिय कदलि सत्य ॥ सते हय छंडिय कन्ह समत्थ ॥ भुजव्वल आयुध सायधु नालि ॥ उगमग कायर त्रासहि पाडि ॥ करक्कि कमान लई कर सैनि ॥ मर क्किय कुंडली कीजिय मैंनि ॥ चला वत सेलहि ठाय पगेंन ॥ मनो अहि वाविय होत मगेंन ॥ चला वत हैं वहि दंत दुवाह ॥ करैं वर भारा सु बब्बर राह ॥ वहैं गड कर्ण सु लाग तहीक ॥ मनो अहि मत्रियं जीय सु लीक ॥ वहैं वहुतैं सरना वक नेह ॥ वर क्खय बूंद सु अंतर मेह ॥ दई कर डारिक मान कुतैन ॥ गहैं कर सेल लहैं दोउ सैन ॥ करैं दुहुं ओर अन्यो अन मार ॥ दुहूं घर होत हैं पंजर पार ॥ लगावत तोवर जौ भर जोर ॥ वहैं रुधि छी छि दुहूं दल ओर ॥ लगें वर आय सक्त्रिय सूर ॥ मनौ विषया सिय लागि करूर ॥ अन्यो अनि सेल निघप्पर मार ॥ तवै दुहुं ओर गही तर वार ॥ लगें वर कंध सवंध बुलाय ॥ मनो जम राज जनेऊ वताय ॥ लगें सिर ऊपर कट्टय योप ॥ मनौ किय गंग सर खति लोप ॥ वहे दिर वान सु कंधनि झोक ॥ रुपैरण रुंड

करैं सिर हांक ॥ वहैं शिव सूर निके सिर नेत ॥ ईं कारत-
राह्न कध ब्बिय केत ॥ तजी कर मानं लई जम डाढ़ ॥ ल-
गावत हक्क करी वल गाढ़ ॥ वखत्तर पार करै भुजजोर ॥
मनो घन वेधि उठी रज कोर ॥ लगावत खंजर पंजर पा-
र ॥ किधौं किय कालिका दंत निवार ॥ चलावत संक-
र फेरि जु शान ॥ छुवावत अंग निहंग कृपान ॥ चला-
य गुरज्ज सु पील नि सीस ॥ मनो गिरि फोरि पुरंदर री-
स ॥ लगायब मुंड निसा सनि तास ॥ मनौं दधि फोरि
यखालि नि स्याम ॥ लगं यव के हरि के न खपेट ॥ व-
खत्तर पार भये चर चेट ॥ लगा इव रंजक वंद निदास ॥
किधौ कढ़ि पुच्छ सुना गिनि तास ॥ दुहिं विधि उद्दलि
कान्ह लरंत ॥ मह्ला उर क्षत्रिय धर्म धरंत ॥ वडो करि
जुद्द बनाफल राय ॥ गये धुकि सूर अनेक लराय ॥
ठठक्किय सेनि जतें चहुं आन ॥ मिले दोउ वीर परः घर
आन ॥ दोहा ॥ दौरैौ संभिम राय रण ऊदलि ऊपर आ-
य ॥ सकति सोम वंसी मरद झेल्यो बीच रिसाय ॥
छंद भुजंगी ॥ पिल्यौ संभि माराय ऊद्दल्लि कानी ॥ ध-
रैं खर्ग हस्थं समत्थं गुमानी ॥ लख्यौ सक्कते राय सं-
भिमु राजं ॥ लियो वीचही आय जुद्दं समाजं ॥ दुहुं वी-
र गज्जे वजा मंत वाहं ॥ दुहुं सूर मरणं सुमं डौ उमाहं ॥
करं काटि खंगा उमंगा चलावैं ॥ कर्यौ धर्म सीसं नि-
कट्टं मिलावैं ॥ गटं गट्ट जुगिन्नि लोहू गटक्के ॥ घट-
क्कें विहू सो धरा में पटक्के ॥ नटं जैं मिना चंत वारं उ-
धारं ॥ चटक्कें तुरी छांडि हैं जाति पारं ॥ छल्ल ब्बल्ल सूरं
सभारं सजोरं ॥ जरी जंजरैं ज्वान अम्मान तोरं ॥ ६८

ढैं किने कुकिनै रष्क ज्वानं ॥ नटं कें किंत वीर षेंचे-
चें कमानं ॥ टटं आय केते कसूरं हकारें ॥ ठठं कें गदा
जंग कायरं लारें ॥ डडं कन वाजंत ढोल दमामें ॥ ढढं कं-
त डाढं धरें लेंग मामें ॥ नरं आय केते लरें चूर चूरं ॥
तना थेई नाचंत साचंग रूरं ॥ थब्द रथ हूर कांपंत का-
तरं केते ॥ दलं में लरें धाय कें सूर जेते ॥ धरें मल्ल द-
स्यं करें जुद्ध मारे ॥ नरं नेह छंडे भए नेह न्यारे ॥ पंग
सूर वीरं धरा देह कढें ॥ फिरै नाहि दोऊ फते स्वांमि-
हूं ॥ वली वीर के तेग हैं सुंडि पीलं ॥ फिरा में पकरि-
खेंचि भारं तडीलं ॥ भभक्कंत खः पर करं मास लींये ॥
मैरं सूर जुग्गिनि सुखं श्रोन पीये ॥ जुरे आय दोऊ द-
लं दारि वीचं ॥ ररैं राम रामं करें रुधिर कीचं ॥ लरें राज
राजं धरें सीस धर्मं ॥ बरें अप्छरा जंग छांडें अधर्मं ॥
हुते सूर चहुं आन संकिं मरायं ॥ उंते जइ वीरं वना
फल्ल सुभायं ॥ वरं सोम वंसी अगारी अमानों ॥ ल-
ख्यो संकि मानेद्द कै मोषि मानों ॥ हुते सूर चहुं आन
संकिम रायं ॥ सुते जइ वीरं वना फल्ल सुभायं ॥ लियें
सेल हस्सं दियो जाय ज्वानं ॥ हने वीर सकते सदी
नी कृपानं ॥ लग्यो संकिमा सल्लही कंस तापं ॥ रह्यो
जाय धरणी पर्यौ देह कापं ॥ लगी तेग संकिम
के अंग भारी ॥ गई अंग संगा पर्यौ भूमि धारी ॥ प
र्यो अंत सेजं सकन्नी लखायो ॥ तहां गहर दार छत्ता
कोपि आयो ॥ हते चंद पुंडीर तेनं लखायो ॥ तेवे का-
पि करि वीर चंदं सुधायो ॥ हुते चंद पुंडीर ढेनी मुजानं
तजें संकरं अंग किल कारि आई ॥ लखी भद्र माल

विग्रान्ने वरिष्टं ॥ चल्यौ पीय परिहार मीर गरिष्ट ॥ गिल्यौ देव करनं करै जोर छन्ना ॥ जंपै मंत्र मु:ख सभी कोध मत्ता ॥ हुते देव करणं छमा गह्वर वारं ॥ उतै चंद पुंडीर पीपा पहारं ॥ हुते दोय परिमाल के सूर ढाये ॥ तिन्नी ऊपरं चंद पुंडीर आये ॥ हयं पीठि परिहार गाढे सहायं ॥ लिये आय दोऊ किए चाय चायं ॥ लई कोपि करि मच्छसालं कमानं ॥ धस्यौ बाल सुरं दुहू खैंचि नानं ॥ लग्यो पीयपरिहार के तीर आई ॥ भयौ वार पारं परे भूर छाई ॥ परयौ पीय परिहार रवेत अचेतं ॥ उठ्यौ संकिसा राय धायौ सुचेतं ॥ उठ्यौ संकिसा राय कै करवा धायौ ॥ सु संकिसै आय रवर राच लायौ ॥ लगी सीस तेगं सिरं पार होई ॥ दुहू हाथ फांकें गहें वीर सोई ॥ कमानं छला खैंचि सीसं बिधायौ ॥ दुहूं फार भेदी सुसं जुक्त धायौ ॥ दोहा ॥ देव करन दई दोरि कं संकिस सीस कृपान ॥ लटकि फांक द्वै गई धायौ चंद अमान ॥ दुहूं हाथ फांकें गहदिदयौ तीर करि कूत ॥ जुर्यौ सीस धायौ लरन भयौ फरिस कूत ॥ छप्पै ॥ देव करन दोरि कें सीस संरू संकिस कें दीनी ॥ लटकि फांक द्वै भई चंद नें गहि कर लीनी ॥ दियो तीर करि कूत जुर्यौ मथ बूत रूत गन ॥ भयौ फरि सा बूत पर्यौ फिरि वीर जायरन ॥ सब कहत धन्य धनि सुभट नरकलि प्रमान कीरति रहिय ॥ फटि सीस तऊ रण संभरि के फिरि हु तेग हाथैं गहिय ॥ छंद पद्धरी ॥ संकि सागाय ऊनि सोभ चंस ॥ रोकि यौ धाति उत्तंग तेस ॥ स कंत सदई किन सान धा-

य ॥ परि यौ सु धरनि संक्रिम राय ॥ धायौ सु चंद पुंडी-र पीप ॥ आयौ सु साजि चंदेल दीप ॥ जहं सत्र माल आये सु संग ॥ सब सूर कोपि करि करि उमंग ॥ कमा-न पकरि सत्र साल सूर ॥ दीनों सु पीप कें हीं करूर । लाग्यौ सु तीर धर फूटि लोइ ॥ परि यौ सु धरनि परि हार सोइ ॥ ता समें उठ्यौ संक्रिम नरेस ॥ मिटि गई मूरछा सर्व तेस ॥ दौस्यो सु देव कन गहें रीस ॥ दी-नी सु तेग संक्रिम सीस ॥ करि गयौ सीस द्वै फार होय गहि लीन चंद इक हत्थ सोय ॥ ले तीर वधि फारं जुवान ॥ भयौ सीस फेरि साबूत ज्वान ॥ फिरि परयौ सूर दल में रिसाय ॥ लै तेग हाथ दई करन धाय ॥ करि दोय मुंड धर कमर सार ॥ पाखर सु जीन द्वे धरत ता र ॥ गिरि परे धरा द्वै भाग होइ ॥ लखि सत्र साल आ-डो जु सोइ ॥ कम्मान खेंचि सत्र साल सीर ॥ दीनों सु कन्ह कें जाय तीर ॥ उत चंद आय मुक मेल कीन ॥ सत्र साल सीस में गुरज दीन ॥ परि यौ सु दृष्टि रनग हर वार ॥ फिरि भयौ आय आड़ो अवार ॥ रान्यो रा-य ले सांगि संग ॥ दीनी सु चंद पुंडीर अंग ॥ हीकं आ-पाम नीकं लखाय ॥ गिरि परे चंद धरनी धसाय ॥ तव लख्यौ कन्ह ने चंद हाल ॥ दीनों सु जाय मुद गल विसा-ल ॥ लगि सीस खील खीलं कराय ॥ डुत परे खेत रा-न्यौर राय ॥ चौपाई ॥ परि संक तेस सोंस बसी रन ॥ गहर वार राठौर परे तन ॥ डोंगर सीदें वारन कढ्ढिव ॥ सामंत सूर सासु द्वैं दढ्ढिव ॥ चंद पुंडीर गिरे सुर छाड्ड य ॥ अरु परिहार पीप गिरि ठाड्डय ॥ संक्रिस राय फते. सि-

र जुज्झिय ॥ वीर वीर तन में रस पुल्लिय ॥ दोहा ॥ इंते
कन्ह मत्ति आदु यो उत्त ऊदलि संजि आय ॥ आप
आप नृप जे हुई मंगल मरन सुभाय ॥ छंद तोटक ॥
इत वाव्हर निंडर जैत दले ॥ कन कंवड गुज्जर संग
चले ॥ लखि भोंह चंदेल पजून बली ॥ इननें संग साम
तरंग रली ॥ लखि ऊदलि जोध सनं सुबयं ॥ संग
तोमर वान बली रुषयं ॥ कमधुज्ज सुराय सला पि
लियां ॥ सिकरवार सु सज्जन सों मिलियं ॥ वड वंड सु
को मव गौड पिले ॥ जहं जद्दव राय उमंगि चले ॥ सु
रंक वर वीर वसंत वनं ॥ संग आल्हन भाट समानत
नं ॥ वकसी जदो कायथ कर्म चंदं ॥ उमग्यौ वनि
यां भर मल्ह दंदं ॥ पिलि यौ तहं ऊदलि पायनि सौं ॥
भर रुलि वनाफल चायन सौं ॥ मुख अंग पचास
क तोप करी ॥ ठह राय जें जीर नि सोर भरी ॥ अरु पां-
च हजार सु वान सजे ॥ अपनें अपनें कर लेत गजे ॥
दल कारिय गौल सु सैनि दलं ॥ जिकिर सुज जीर-
न सार मलं ॥ अव वान सुज्वान दई चिनगी ॥ दल
सामंत ऊपर हैंसि लगी ॥ तव तोप न जा मिगी दै जु दई ॥
चहुं आन दलं वड भै जु भई ॥ अरराहट भौ अति सो
र सह्यौ ॥ वल कादिस अंवर छाय रह्यौ ॥ लगि वान अ-
नेक नि ज्वान परे ॥ तहं तोप निगोल अनेक मरे ॥ धु
कि कें धर संकिस राय गिरे ॥ रन पांच हजार तहां जि-
किर ॥ हसती परे तीस सवै रन में ॥ कितने डर काय-
र डी गन में ॥ फिरि कै सोडु उहलि वाग लई ॥ संगवी
सडजात सु भार लई ॥ वल वंड कर किवय खंड तने ॥

खंड खंड प्रचंड गयंद करं॥ विचरे दल पिष्य लिने जतरा॥ सव भार दुं कदलि केलि लगा॥ चहुं आन हरोल अनी सुरकी॥ लखि संकिम रायगिरे धर की॥ जहां चंद पुंडीर रुपी पपरे॥ सुरकाय सु लक्ख धरंनि धरं॥ तव कन्हर कोप कियो रनमें॥ सुरकाय सु सेन दई गनमें॥ कर मान लई हय छांडि दिये॥ सनमुक्ख सु कन्हर कोप किये॥ इन वीर वसंत रु कम्भ चंदं॥ उमग्यो वनियां भर मल्ह ददं॥ मिलि डोंगर देव नरेस सवली॥ मंग जाल्हन भाट प्रताप कली॥ परि साल सुनैं नृपगासि वलं॥ चहुं आन सवै दल नासि हलं॥ सुर भोग लहो इह उद्द कही॥ मृत लोक के भोग तजो स वही॥ छप्पै॥ डिगी फौज पृथीराज तोप वानन की मारी॥ पयौ जु संकिम राय चंद पुंडीर सुधारी॥ पयो पीप परि हार पेर गुज्जर रन सोई॥ परियो तीस गयंद सहस्स हे वर कटि लोई॥ रजपूत सहस डेढ़ह परे फैज विचरि पाछे हुइय॥ चहुं आन हथ्थ हाथ्यो हुमकि सेकि वीर दारुण दइय॥ चौपाई॥ विचुरी फौज लखी चहुं आनह॥ पेलिव हाथी आगे कान्हह॥ कन्हरजे तहां झुलियो वीरह॥ नर सिंघ राममलय सीधारह॥ छंद त्रोटक॥ नृप झाथिय पिथ्य लिये लिवरं॥ सव सेनि संकेलिय एक करं॥ कय मासरु कंन्ह पजून मिले॥ जुरिकें सव राय हमीर चले॥ जहां खिंचिय देव प्रसंग नरं॥ विक राज सुधा भर धीर वरं॥ जहां खेत सु पूरन मल्ल चले॥ भर मल्हन ऊपर भार मिले नृप ऊदलि ऊपर कोप किय॥ इतने उम राय नु संग

दयं ॥ इत दखि वना फल भूर मथं ॥ नग डोंगर देव
मयंग मणं ॥ आम धीर दसंत रु आल्हनयं ॥ मिल चा-
र सु रज्जन मालनयं ॥ जहां भोज वना फल भार मलं ॥
वखता अज वा नर कोपि दलं ॥ मदु कंभ मिले भर मा-
ल तये ॥ इतनें मिलि ऊदलि संग भये ॥ उत कान्ह च-
चलाइय कोप कियं ॥ इत ऊदलि वीर अपार दियं ॥
विफरे चढ़ आन वना फलयं ॥ धरि हत्थ नि लोह वली
वलयं ॥ चढ़ आन दवाय हरी ललियं ॥ जल ऊदलि दी-
र समाज कियं ॥ पिलि यों कछ वाह पजून वली ॥ ड-
रु मानि चंदेल की फौज चली ॥ पट कें गहि हें वर भू
परयं ॥ मस कंत मयंदन कवलयं ॥ कहु हक्कहि ध-
क्कहि सूर सुखं ॥ कहुं मारत सायक लाय रुरुखं ॥ क-
हुं सेल चलावत वाहु वरं ॥ धरहुटि वखत्तर फूटि स-
रं ॥ सिक वार सुरज्जन आय इतै ॥ विफरे कछ वाह प-
जून जितै ॥ सिक वार चलाइय नेग वरं ॥ उर लागि प-
जून के फहि धरं ॥ संधिराय पजून ने कोप कियं ॥ कर
नान सु रज्जन कंध दियं ॥ गिरियं सिर टूटि धर न्निप-
रे ॥ तत काल वरं गनि आय वरं ॥ भ्रम पाय पजून
गिर धरनी ॥ फिरि आइय गौंडर सी मरनी ॥ तिहि ऊ-
पर आय के जास अखौ ॥ कटि में तर कस्सनि लाय र-
ख्यौ ॥ लई खेंचि कमान सु ज्वान नरं ॥ दिय वान र
सु कान्हर लागि धरं ॥ फिरि नेग लई कर कोप कियं ॥
रुपराय सु जैत के सीस दियं ॥ लगि टोप कट्यौ सिर र
आय जगी ॥ संभरयौ फिरि जैत असान तगी ॥ किय क-
पर डोंगर नें जवही ॥ सजि जाम पै कोप कियो तवही ॥

धुकि कें दई डोंगर सी पग में ॥ धर घूंमि कें जाम गिर
मग में ॥ फिरि चेति कें नेग दई सिर में ॥ पुनि डोंगर दे-
व बलं बिर में ॥ सिर डोंगर टूटि क बंधन च्यो ॥ सिवमा-
ल में सीस सुहाल सच्यो ॥ वक सी कम चंद सु आय
गयो ॥ खग धारन बीच दुधार लयो ॥ नर सिंह इनेस
क मेल कियो ॥ कम चंद दुधार सु जाय दियो ॥ लखि
कन्ह धम्यो नर सिंह सगं ॥ रिस कै कम चंद सु खेंचि
लयं ॥ गहि पाय सु धीर पछारि धरं ॥ धर चून भयो सि-
र टूटि परं ॥ लखि साहि सु धीर पछारि बलं ॥ पिलि यो
सु तहां पृथी राज दलं ॥ नर सिंह सु साह कों देखि चखं ॥
हय दावि सु आय प्रहार लखं ॥ नर सिंह लई गुर जे
कर में ॥ इत साह सु सांगि लई कर में ॥ कर सांगि लै साह
चलाय दई ॥ नर सिंह लगी उर आय सही ॥ धुकि मूर
छ खाय नृसिंह पयो ॥ तिहि ऊपर पूरन मल्ल अयो ॥
लइ तेग दई सिर माह तवे ॥ धर जाय पयो सिर टूटि
वे ॥ तव देखि सुरज्जन आय अयो ॥ तव पूरन मल्ल
ते जाय लयो ॥ दई तेग सु रज्जन सीस तपं ॥ भई पार
धरा सिर टूटि मथं ॥ लखि कन्हर आय गुरज्ज दई ॥
लगि सीस सु रज्जन मारि मही ॥ भय टूक अनेक प-
रयो धरनी ॥ तवही लखि फौज सबै करनी ॥ फिरि ऊ
दलि कान्ह को जुद्ध भयो ॥ सु सुनो कवि चंद बनाय
कयो ॥ दोहा ॥ आल्हन मार निराट लखि मरन सुनि
यरो आय ॥ सुनियो सुत जम राज के स्वर्ग भोग मन
लाय ॥ जैत कान्ह सजि आइयो इत ऊदलि सजि आ-
य ॥ चहूं आन चिंहन्न के लडे सूर सब धाय ॥ छंद ॥

जंगी ॥ मिले ऊदलं कन्ह दोऊ अभंगं ॥ निरच्चे सुजो-
धा दहूं स्वामि संगं ॥ जपे इष्ट सुंकल उच्चारंत सोई ॥ भ-
वानी धरें ध्यान धारंत होई ॥ उचारंत मंत्र सुचारंत
धाये ॥ विचारंत दोऊ सनं सुकल आये ॥ मिली दृ-
ष्टि सों दृष्टि वानी उच्चारी ॥ अहो कन्ह धीरे मड़ौ ॥
जुद्ध भारी ॥ दलं पात माही सबै आय जीते ॥ अबै जु-
द्ध कीजे सरस उद्द होते ॥ घने घाम पट्टी सु आंखैं ब-
धाई ॥ अबै ऊदलं सों परयौ काम आई ॥ लरें सूरके
ते नते आप जंग ॥ हने वा पुरे जाय ले सूर संगं ॥ प-
रयौ जुद्ध मोसों अबै त्यार हूजे ॥ भरो सेन औरै लरौ जं-
ग जूझै ॥ तबै कन्ह बोल्यौ महा रोस होई ॥ सुनो नंद
जामराज के बात सोई ॥ इहां गौंड नाहीं गढ़ा मारि
जानों ॥ अबै कन्ह चहुं आन सों जुद्ध ठानो ॥ हने सो-
ग घायल विचारे सदाहीं ॥ परयौ सूर क्षत्री नतें काम
नाहीं ॥ सुनी सूर वानी तबै उद्द धायो ॥ बुते कन्ह वी-
रं रनं रोष पायो ॥ दुहूं ओर तें वीर निरच्चे अमानैं ॥ कि-
ये जंग राग लरैं मीनि बानैं ॥ चला वंत वीरं सका-
न्ही करारी ॥ लगें वीर छाती गरे फूटि न्यारी ॥ चला
वंत वीर दुहू ओर बाँके ॥ परे फूटि धरनी दुहूं सेनि
घां के ॥ चला वंत मेल दुहूं हाथ जोरैं ॥ सना सं सु-
फूटंत फूटंत भोरैं ॥ चले नेग वेगं सु सरं हंकारैं ॥ म-
नों पात्र चक्रं कुला लं उतारे ॥ चला वंत फरंसा सिरं
फार होई ॥ मनों बांटिगे फारि तरबूज सोई ॥ लगें सी-
स गुरजं परे खील है कै ॥ मनो कुस्समदु की दही डा-
रिकै ॥ लरे मुगदरं भी हुभारी मुसीसं ॥ लटकै अ

नेकं पर कें सु दीसं ॥ लगें जाम डाढे स नाहं स फूरें ॥
दयं अंत लैकाल जैपाल खूटें ॥ लगा मैं तहां के हरी
न कच सारं ॥ वरं कं गलं अंग जंगं सफारें ॥ ऐसी भां-
ति कन्हं लड़ें उद्द दोऊ ॥ कटं कें घटं कें दुहूं कोप हो
ऊ ॥ इतै कन्ह की भीर काय मास आयो ॥ वरं टोक
चाटा सिरं सूर ठायो ॥ लख्यो जाल्हनं चाट कै मा-
स दोई ॥ भयो आय आड़ो महा राय सोई ॥ इतै टोक
चाटा सु कं मेल कीनो ॥ वली जाल्हनं तानि कें वीच
लीनो ॥ दई तेग दोऊ दुहूं वार कीनो ॥ लगी संग दो-
ऊन के अंग कीनो ॥ लगी जाल्हनं हाथ की तेग चा-
हो ॥ पर्यो सीस धरनी सु चाटा न हाली ॥ वरं टोक चा-
टा सिरं रुंड वाही ॥ लगी जाल्हनं कें गिर्यो भूमि मा-
ही ॥ तहीं जाय काय मास सेलं चलायो ॥ वली जा-
ल्हनं खेत धरनी मिलायो ॥ पर्यो जाल्हनं खेत उद्द-
ल्लि धायो ॥ तुरंगं करें त्यार लल कारि आयो ॥ उभै सु-
भहम्य नें धेर मुंड पीलं ॥ कमर तें लई तेग उद्द असी-
लं ॥ दई कन्ह कें कंध वंधं खुलायो ॥ अचेत गये ते-
भयो भूर छायो ॥ करा म्यान तेगं लई वीर वांकें ॥ त-
वे कन्ह चेत्यो लख्यो उद्द घांकें ॥ नहीं तेग लीनी गुर
ज्जं न हत्थं ॥ पकरि उद्द कों हाथ हील च्छ यत्थं ॥ लड़े
मल्ल जैसें दुहूं पीठि पीलं ॥ हटैं नाहि दोऊ दुहूं ओर डी-
लं ॥ लखै फौज दोऊ सकै जाय कोंहे ॥ कहे चंद ऐसें
महा जुद्ध होहे ॥ भये लथ्थ पथ्थं गिरे पील पेंते ॥ भये
लोट पोटं दुहूं वीर हेंत ॥ तरें उद्द ऊपर सु कन्हं वलिष्टं
तवै जुद्ध भारी भयो खेत गिष्टं ॥ तहां चंद वोल्यौ चकं आ-

नडीलं॥ लगा ओ सु तेगं करैं कद्द ढीलं॥ तवै का-
न्ह चेत्यो सुनी भाट वानी॥ गयो पक्ष कय मास आ-
सं ममानी॥ वली दूसरो वीर कय मास आयो॥ उरं
उद्दकै आय सेलं लगायो॥ गही तेग कन्हं सिरं वार
कीनो॥ पर्यो उद्दलं टूटि धरनी न वीनो॥ रुप्यो रुंड धर-
नी सिरं ह्वा कमारे॥ भयो सेर ऊदल्लि वैठ्यो हकारे॥ तवै
ऊद्दलं रुंड धायो हंकारी॥ वली तेग कय मास कैं कं-
धकारी॥ पर्यो मूरछा दाहिमा भूमि आयो॥ कट्यो टो-
प मुंडं धरां मूरछायो॥ पर्यो कन्ह दल में वना फल हं-
कारी॥ किते सूर मारे परे सो अगारी॥ किते रुंड कीये
लिये कारि मुंडं॥ हने पील केते किये सुंड डंडं॥ कि-
ते डारि दीनि धरनि ये तरंगं॥ वढी मारु मारी करी उ-
द्द जंगं॥ भयो कन्ह दल में हहं कार भारी॥ परैं सूर
जितमें भजें फौज सारी॥ नचै रुंड तेगं लिये हाथ
न्यारी॥ ऐसी भाँति उद्दं करी जंग रारी॥ करी म्यान
तेगं अवेगं समाई॥ गिर्यो सूर धरनी भयो मूरछा-
ई॥ गई अप्छरा लै तहां सूर लोकं॥ भयो प्राव्द जैजै
दुहूं फौज सोकं॥ दोहा॥ उद्दलि को नाच्यो कमध प-
र्यो सीस धर सूर॥ हनी फौज पृथी राज की एक ह-
जार हजूर॥ चौपाई॥ पहले ऊदलि कन्ह धुकायो॥
पाछे कन्ह उठ्यो रिस लायो॥ लरा सूर दोऊ मलसा
रह॥ भए मूरछा दोऊ मारह॥ फिरि चहुं आन चेत
किय चंदह॥ तव कय मास आय ढिग वंधह॥ सेल
सांधि ऊदलि कैं मारिव॥ ऊदलि खैंचि दई तर वारि
व॥ भयो रुंड खेल्यो धरनी मह॥ दई तेग कन्ह र के

सी सह ॥ फेरि दई वाय मास सु कंधह ॥ भरा मूरछा दे-
ऊ दंदह ॥ फिरि ऊदलि दल माहिं हकारिव ॥ आगें
परे सबै सो मारिव ॥ पहर द्वैक कीनौ बहु जुद्दह ॥ पा-
छैं भयो मूरछा उद्दह ॥ दोहा ॥ तीनि सु मिल के मारि-
यो नृप जस राजा कुमार ॥ मारे भट पृथ्वी राज के सिर-
विन एक हजार ॥ छपै ॥ सुनि ब्रह्मा जीत सु बात का
म उद्दलि रनछा इव ॥ दै ह वली सब दूरि सार सा मंत
निषद्दव ॥ सत्र साल सकते स परे दर करन अमान
ह सुरजन डोंगर परे परे आल्हन रन पामह ॥ धर परे
पील सै दोय सन दस हजार है बर वहर ॥ सुख बाह-
वाह अल्हन कही कन्ह कटक कीनों कहर ॥ चौपाई ॥
ऊदलि कटे वीर रन माहीं ॥ छत्री धर्म धसौ सिर माहीं ॥
ब्रह्मा जीत बोले इह बानी ॥ स्वर्ग भोग भोगे सुख दानी
छंद रघुनराज ॥ कियौ कुमार हल्लयं ॥ सबै सु सूर म-
ल्लयं ॥ हरी लपील की नियं ॥ अरि व पुद्दि दीनियं ॥
स्वामी ति धर्म चीनियं ॥ तमं कि वाग ली नियं ॥ व-
नाय वेस फौजयं ॥ विचारि आल्ह चौजयं ॥ मिले
मरद्द मारि कें ॥ अनेक दाव धारि कें ॥ बंध्यो गरद्द गो
लयं ॥ विचा कुमार सोमयं ॥ चढ्यौ सु अल्ह हाथियं ॥
लिये सु भाट साथियं ॥ इतै चौहान चल्लियं ॥ मरद्द मे
ल मिल्लियं ॥ सामंत सूर साथयं ॥ हथ्यार हाथ हाथ-
यं ॥ कै मास कन्ह जैतयं ॥ हमीर युक्त ने तयं ॥ उतै सु
आल्ह साजियं ॥ लरैवे सु काम लाजियं ॥ चल्यो परि
माल नंदयं ॥ मनौ द्वितीय चंदयं ॥ सुर गय भोग आ-
इयं ॥ खिलंत स्वर्ग ताइयं ॥ बुल्यो सु आल्ह बोचयं

सुनो चहुं आन संचयं ॥ धरम जुद्ध कीजिये ॥ वच न व्यास लीजिये ॥ बुलाय जोध जोधयं ॥ करैं ह-प्यार सोधयं ॥ सु धर्म जुद्ध मंडिये ॥ अधर्म जुद्ध छंडिये ॥ सु जंत्र मंत्र कीजिये ॥ प्रलोक जीति ली-जिये ॥ दोहा ॥ ऊदलि काम सु आइयो दई खबरि मति हारि ॥ अब सु धीर धरि माल के सब तेरे सिर भा-र ॥ छंद भुजंगी ॥ परो ऊदलं खेत सो आल्ह जान्यो ॥ करो क्रोध अंगं रनं मरन्न ठान्यो ॥ लिये बान हत्थं बु-ल्यो वीर बानी ॥ करी पैज मनसें महा सुक्ख दानी ॥ धरैं ईश मुंडं गरैं आज भैरो ॥ उधारों सबै नैन चंदे-ल तेरो ॥ ऐसें बोलि आल्हं न सब कों सुनायो ॥ धरैं स्वामि धर्मं कूदि बीच आयो ॥ चलाये दुहूं वीर बांधे गरिष्टं ॥ चले साथ सूरं जपैं सुक्ख इष्टं ॥ करैं खंड खं-डं भुसंडं पछारैं ॥ परैं वीर जोधा करी कुंभ फारैं ॥ अभ-कैं भुसुंड नि सुंडें वरछी ॥ किधों नागिनी सिंह लागैं तिरछी ॥ सुदंडं घय जानि गाजं त बाजं ॥ वछी बा दु जोरं न तोरं समाजं ॥ घटा सैंनि बंधी दुहूं वीर धाये ॥ मनों मेघ दोऊ दिसांतें घुमाये ॥ रुमं कै धवा आगि लग्गी घेमारैं ॥ उरं फूटि सेना ह फूटंत धारैं ॥ मिले सू-र सूरं अपूरं अखारे ॥ किते एक जोधान के सीस फारे ॥ गहैं सुंडि दंती सुमंती चिकारैं ॥ कढे तेग वेगं मनों रेखि कारैं ॥ इते कन्ह चहुं आन कै मास धाये ॥ अखारे करे तेप चारे मिलाये ॥ कहूं कै भुजा जोरि तोरंत पाटैं ॥ कि-ते एक जोधान के सीस काटैं ॥ किते डील गहि पील कों ले फिरामें ॥ किते फूटि मुंडं परैं सो सभामें ॥ कूदि दे

वरं पुच्छ गहि तानि वाहैं ॥ कहूं पाय प्यांद गहैं धर निमाहैं ॥ कहूं सांगि वाहैं कहूं कीन रौरैं ॥ कहूं वान छांडें कहूं सूर दौरैं ॥ कहूं वीर गुरजं सिरं खेंचि मारैं ॥ कहूं सूर वीरं सिरं तेग झारैं ॥ कहूं पर गला वीर वाहंत जोरैं ॥ कहूं काटते सीस सूरं सजोरैं ॥ कहूं संकरं सार वांदें । झमानें ॥ कहूं पेल खेलें नवें लें कमानें ॥ कहूं कंध बंधं सुबंधं खुलावें ॥ कहूं किंनरा विंदरी लै वजावें ॥ कहूं तेग संभारि कैं खेंचि लेते ॥ कहूं खंजरं ले हियं मांहि देते ॥ कहूं वीर वाहैं भुसुंडैं निहारी ॥ कहूं डंकिनी संकिनी कूक भारी ॥ कहूं भीलिनी भेष भ्यानक्क गाजैं ॥ कहूं जोगिनी हाथ खप्पर विराजैं ॥ कटारी लियं अंग उर जात नामी ॥ खुले द्वार मानों अटारी सुवामी ॥ कहूं खंजरं पिंजरं मारि फारैं ॥ कहूं रंजकं मारि दीकं सुधारैं ॥ कहूं वीर कम्मान वानं चलासैं ॥ परैं सुंड धरनी सु रुंडन्न चासैं ॥ कहूं सूर धरनी परैं काम आसैं ॥ वरैं अप्छरा सूर लोकं सिधासैं ॥ भयं काम भारी भयौ फौज फौजं ॥ किते सूर धरनी परे टूटि चौजं ॥ ऐसी भांति कय गास कंन्हं चलाई ॥ धनी सेन चंदेल धरनी मिलाई ॥ भगी सेन देखी चखं अल्ह सोई ॥ भय आन आगें महा राय सोई ॥ तंवे कन्ह सों वैन वोल्यो पतीजे ॥ सवै सेंन कों दुक्ख कौं वादि दीजे ॥ चौपाई ॥ आल्ह भये सेना अंग रूरे ॥ वचन कन्ह सों वोलि गरूरे ॥ सुनि कन्ह आन आपु रण कीजे ॥ सवै सेंनि कों दुःख न दीजे ॥ आल्ह सकति को मंत्र उपायव ॥ सोइ अर्जुन कोई भवजाद वनिद्रां अस्त्र प्रयोग सु कीनो ॥ ओघतं सामत सूर न ली-

नौ॥ छंद पद्धरी ॥ उच्चरे मल्ह वानी निराट ॥ सुनियें सु-
कन्ह कय मास पाट ॥ सब सेंनि काज इख देह काय ॥
कीजिये जुद्ध मो संग चाय ॥ जंपियो मंत्र तारा सुभाय ॥
कीनों सु ध्यान उरमध्य आय ॥ हंकार कियो देवी व-
लिष्ट ॥ छिल कारि कीन छल कारि दुष्ट ॥ निद्रा भयोग-
कीनौ सु वीर ॥ ओघंत सर्व सामंत धीर ॥ कय मास क-
न्ह पुंडीर चंद ॥ ओघंत सर्व सामंत दंद ॥ तोंवर पहार
सु संलख सोइ ॥ भौंहां चंदेल नर सिंह लोइ ॥ परिहार
पीप हाडा हंमीर ॥ खीची सु डोड धामर सु धीर ॥ खे-
तां खगार अनेक फौज ॥ छांडी सु जंग सामंत चौज॥
ओघंत इते सामंत सोइ ॥ छांडी सु जंग उन मत्त होइ॥
ढीरे सु जोध चंदेल सेन ॥ वल वंत वीर निर मोह तेन॥
केतेक सीस टूटंत मार ॥ केतेक अंग लगि होत फार॥
केतेक चरन टूटंत जंग ॥ केतेक सीस विन लरत अं-
ग॥ केतेक सूर रण कटिहु लास ॥ केतेक गये चढ़ि
आन पास ॥ नर नाह कन्ह पुंडीर सोइ ॥ वीरं वलीनर
सिंह लोइ ॥ भारंत आल्ह सजि सैन सूर ॥ चलियेन
रेश ऊपर जरूर ॥ अंवरज्ज पाय पृथी राज देखि ॥
वर दाय चंद वोल्यौ विसेखि ॥ सुनि चंद वैन आयो सु-
तीर ॥ उच्चरौ तवे पृथी राज वीर ॥ कीनौ सुमंत्र आ-
ल्हन असंग ॥ ओघंत सूर सव छांडि जंग ॥ उच्चरौ
चंद सुनिये नरेश ॥ कीनौ भयोग आल्हन सु वेस ॥
तारा सुहल्ल कीनो सुपाय ॥ दीनौं सु मंत्र शंकर सहाय॥
पंडव सु कीन कौरोन निद्द ॥ सो किया आल्ह तुम प-
रम सिद्द ॥ अव नार उहीं अव भयौ आय ॥ दीनौ सु-

मंत्र गोरिख बताय ॥ यह सुनी बात पृथी राज भूप ॥ बोले सु चंद सौं इंद्र भूप ॥ दोहा ॥ पृथी राज पूंछत भ गदि कबसु मिले रिखि आय ॥ किहि प्रकार विद्या दई किहि विधि मंत्र बताय ॥ छप्पे ॥ कहहु चंद बर दाय आल अवतार सलभ्भय ॥ गये सिकार इक बार पति उद्यान भूलि गय ॥ गिरि ऊपर जहां गयो तहां गोरिख रिषि बैठव ॥ कियो दरस तव आल्ह आल गोरिख चरव दैठिव ॥ लग्गयो पाय जस राय सुं हाथ जोरि बिनती करिय ॥ मोहि संग लेहुं जंप देश कं रित जी भवन संपति भरिय ॥ १ ॥ तव गोरिख मुख उच्चरि बरष सेवा करि सारह ॥ तव तारी सग खुले देंहु जो मांगे बारह ॥ करैं बना फल से वरैं नदिन एक चित्त करि ॥ हाथ पाय ध्वावंत मात उठि धीर नीर भरि ॥ या विधि सु सेव कीनी प्रगट एक चित्त करि आल्ह ये ॥ वीतो सु वरष तारी पुली वहुत खुसी गोरिख भये ॥ चौपाई ॥ तव गोरिख मुख वोलि व वानी ॥ आल्हा मांगि कछू मन मानी ॥ वरष एक लग धाय व मो कों ॥ जो मांगे सो देंगो तो कों ॥ दोहा ॥ अस्त्र शास्त्र सिखये प्रदे कीनी अमर सु देह ॥ कहल लगि गृह में रहो पाछें जोग सु लेहु ॥ सो कदलि जूं को अभें गोरिख आवतु होय ॥ आल्हा संग सिधारि हैं बचन कह गये सोय ॥ अव यातें यह मंत्र है औरन करो उपाउ ॥ गोरिख आवत होयगो भलो वन्यो है दाउ ॥ चामड को कीजे विदा कद कारन चंदेल ॥ अपता ताय कों आग्र करि करो लरनि को खेल ॥ चंद वदन पृथी राज सुनि लोचन भये वि-

माल ॥ विद्या करी चामंड की पकारन को परिमाल ॥ चलौ सहस रजपूत लै चामंडराय सहाय ॥ अतताय को अग्र करि कियो जुद्ध मन भाय ॥ छंद त्रोटक ॥ करि कोपत वै पृथी राज मनं ॥ अतताय सु अग्र किये सजनं ॥ मुख मंत्र उचारत आपु नृपं ॥ करिकें रुपजूथ निदूह रूपं ॥ गिरिजा हर शंकर ध्यान हियं ॥ अतताय नरेश सु लोह लियं ॥ मह कालिय ध्यान धरुपैज वही ॥ आतताइय सिद्धि करी तवही ॥ वर वीर अराधन चंद किये ॥ रवि कौ करि ध्यान समान हियं ॥ विफरे वर वीर पिलि वल में ॥ आय लै तिर सूल चले दल में ॥ मुख मंत्र उचारत सो हल में ॥ मंत्र सिद्धि किये कल सों पल में ॥ किल कारिय कालि का आगन की ॥ सुधि भूल गई उठि जागन की ॥ विन सुंड विहंड गयंद करै ॥ खंड खंड प्रचंड नरेश हरै ॥ लगि लोह सपूरन छूर वरं ॥ उमगे सब सूर चंदेल धरं ॥ अग वानिय के सब आय गयो ॥ रणसध्य के मास उठाय लयौ ॥ तवही अतताइय गेल कियं ॥ वर कै सब के तिर शूल दियं ॥ लट कौ तन के सव भूमि परयौ ॥ तत काल वरंगनि आय वरौ ॥ तवही जगनिक प्रताप वली ॥ कर तेग लई अगरे जतली ॥ जगनिक पै लाय र कन्ह रखं ॥ किरमान सुदी यरकन्ह मुखं ॥ भर म्यौ नर नाह धरन्नि परयौ ॥ तहि ऊपर दाहिमा आनि भरयौ ॥ कै मास लगाइय तेग तनं ॥ लगि सीस सही कविराज भनं ॥ जगनिक लयौ कर सेल गन्यौ ॥ काय मास प्रकास सही जाय हन्यो ॥ काय मास दई फिर तेग सिरं ॥ भर मार धरा सिर टूरि गिरं ॥ धरनी

धर दौरत सीस विना ॥ किर आन लये कर धार मना ॥
बिन सीस जगन्निक पील हन्यो ॥ भट सूर मह्रा चहुं-
आन गन्यो ॥ दोहा ॥ जगनिक परौ सु सीस बिन उठौ
रुंड करि रोस ॥ पील हन्यौ देख्यौ नृपति करी कीर जनु
जोस ॥ छप्पै ॥ रुपि जगनि करन महि हत्थ ग्राहे वर
हत्थिय ॥ हनी सेन हज्जार रुंड धायौ सम रुथ्थिय ॥ ह-
ली फौज चहु आन रुंड खेल्यौ बिन सीसह ॥ मानि जो-
र पृथ्वी राज पील मारौ करि रीसह ॥ कीनौ कहा वर्नन
माहि वढ़ि लोल लहरि वाहु मसुहर ॥ जंपियो चंदवा-
नी वरनि भट्ट ठट्ठ कीनौ कहर ॥ दोहा ॥ आता ताय आल्ह
ऊपर हांकि चल्यौ वलवान ॥ उते वना फल आय कै
वोल्यौ वीच विहान ॥ छंद पद्धरी ॥ विरच्यौ सु अता तायं
वलिष्ट ॥ उत आल्ह वीर मन धारि इष्ट ॥ दौरे जो सूर
चंदेल फौज ॥ इत में सु वौरि चहुं आन चौज ॥ छूटंत
वान सननं सनात ॥ तोपं बलिष्ट भवनं भनात ॥ विफरंत
वीरं धीरं हंकारि ॥ उच्चरंत दुहुं दल मार मारि ॥ वा-
हंत सेल हेलं समारि ॥ लागंत अंग हीकं सुफारि ॥
खेंचत कमान मारंत तीर ॥ लागंत पार फूटंत पीर ॥
वाजंत तेग वेगं अनेग ॥ टूटंत मुंड रुंडं वनेग ॥ मारंत
ज्वान मुगदर फिराय ॥ लागंत सीस चूरं कराय ॥ वाहंत गु-
रज गहि सभरि सूर ॥ कापंत देखि कातर सु कूर ॥ खंज-
र सुखेंचि हीकं लगाय ॥ पारं प्रवेस सारं समाय ॥ फें-
कंत चक्र अर्कं फिराय ॥ लै जात सूर सीसं उड़ाय ॥
मारंत वीर वानैत वांक ॥ लागंति अंग फोरंति कांक ॥
वाहंत अंग जम धर जुवान ॥ फाटंति हीक लीकं प्रमा-

न॥ कैंने न हाथ नहिं मार भाय॥ फैंकंत एक कौ एक धाय॥ याभांति अता तायं लरात॥ आल्हंन नीर मारं सरात॥ ले अता ताय बीरं त्रिसूल॥ दीनौ सु आल्हहीकं प्रसूल॥ अल्हन सु खैंचि तेगं लगाय॥ धुकि पसौ धरनि सूरं समाय॥ आल्हा अचेत उत भयौ जुद्ध॥ भयौ विषम खेत भारी विरुद्ध॥ दोहा॥ भयौ मूरछा आल्ह नृप अता ताय के दंड॥ ता समये पृथीराज सौं वानी बोल्यौ चंड॥ चौपाई॥ आल्हा गिरौ मूरछा खाइय॥ दोऊ वीर गिरे मुरझाइय॥ ब्रह्माजीत कौं वेग ही मारौ॥ ना तर उठि आल्हर न हारौ॥ दोहा॥ ब्रह्मा जीत सौं जुद्ध करि संभरि राय संभारि॥ जो जगिहै आल्हा नृपति तौ हारौ गेरारि॥ छप्पै॥ पेल पील पृथी राज चल्यौ चंदेल सनं मुख॥ ईश्रा मंत्र उच्चारि वीर वर धारि मंत्र रुख॥ नृपति आपु हंकारि वान कंमान पान किय॥ खैंचि राज करि रोस तीर चंदेल हीक दिय॥ भेदंत तीर खेदंन हुय फूटि अंग सन ना लगय॥ पाखर सु फूटि हय वरस छित औ तुरंग असवार भय॥ १॥ लग्यौ तीर चंदेल धरौ पृथी राज सनं मुख॥ लये वीर कर सांगि आगि चरख भरे वान दुख॥ आन आन पृथी राज चाय खगन सौं खेलह॥ करैं जुद्ध पर सुद्ध वीर सामंतन ठेलह॥ सुनि चाहु आन पील उतरि हय मगाय असवार भय॥ आये सु वीर दुहुं ओर तैं रास जोरि घम साय हय॥ छंद भु०॥ चले सो चंदेलं सु खं चाहु आनं॥ मिया मान जंगं उमंगं उठानं॥ लई सांगि हत्थं हनी राज हीकं॥ भई पार अंगं भ्रम्यौ सूर सीकं॥ भ्रम्यौ कंगलं अंग जंगं धुकायौ॥

अचेतं हयं तें धरा मूरछायो ॥ लख्यो चंद वरदाय राजा
धिराजं॥ गुरु मंत्र कीनौ बिरुद्दं समाजं ॥ जगी मूर्छा
चालु आनं जहां हीं॥ गयौ रोस है ब्रह्म जीतं तहांहीं॥ल-
ये वान कंमान हत्थं समत्थं ॥ हयौ खैंचि तीरं चंदेलं सु
मत्थं ॥ लई खैंचि तेगं सिरं वार कीनौ॥परौ रुंडलं खे-
त धरनी नवीनो॥भजी फौज चंदेल्ल की सर्वसत्थं॥ उ-
ठ्यौ तास में आल्ह वीरं समत्थं॥भयो चेत आल्हा इते
अन्त ताई॥ लिये खग्ग हत्थं मिले बीच आई॥हनी आ-
ल्ह तेगं इतै अत्र तायं॥ गिरयौ वीर धुकिकें सु धरनी.धं-
रायं।करी पैज आल्हा चलौ राजसुक्कं॥धरौ स्वामि धर्मं
हियं सूर सुक्कं ॥ पृथी राज धरनी अचेतं परायं॥ आगा-
री कयं मास ठाढ्यो रिसायं॥ इतै आल्ह धायं किये रो-
स रुक्कं॥ उतै दाहिमा तेग दीनी ससुक्कं॥दई आल्ह के
धाय कंधं खुलायौ॥दई आल्ह तेगं सु धरनी परायौ॥
कियौ ध्यान गोरिख सु विद्या पसारी॥ प्रयोगे रहे सूरसा
मंत भारी॥ गुरु चंद वरदाय आल्हं धरायौ॥तुलायं स-
रा और लक्खी फिरायौ॥वली आल विद्या अनेकं उपाई।
गुरु चंद आगे सुजानं न पाई॥ भई स्वर्ग वानी अनंदं
उपाई॥अहो भट्ट गुर राय जीते न जाई॥ इतै में गुरु गो-
रिखं आप आये॥ अगारी करारं किये जानि पाये॥भई स्व-
र्ग वानी अनंदं उपाई॥ अहो भट्ट गुरु राय जीतं न आई॥
तवै गोरिखं आल्ह सों वैन भाखे॥रहो धर्म पै कर्म विद्या भि-
लाखे॥ चौपाई॥भये मूरछा सब वरदाई।गोरख कीव सुधा
फैलाई॥बोले गोरख सुनरे भाई॥ब्राह्मन भाटन जीते जा-
ई॥ संभरि छांडि जोग पथ लीजे॥ कया कीजे अमर सुकी

जे ॥ फिरि यौं आल संभर तजि सूरे ॥ गोरिख नेम नहीं ये पूरे ॥ देह अमर कर वन को धाये ॥ छांडे भोग योग मन लाये ॥ जंग सो छोडि योगरंग माहीं ॥ मकल काम नाम लते ठाहीं ॥ दो॰ ॥ आल्ह चले तजि संभरि कौं छांडि भोग को वास ॥ गोरख संगी हुय चले किये निरंजन आस ॥ छप्पै ॥ लोह लागि चहुं आन परे धरनी सुर छाइय ॥ गिद्धिनि बैठी आय चोंचि चाहत हग लाइय ॥ देख्यो संभिरराय नृपति पेखनि हग गच्छन ॥ अपने तन को मास कारि दीयौ भय पच्छनं ॥ उड़ि गई मास लै गगन कौं चाहुं आन हग छंडतव ॥ धनि धन्य संभिरा राय को अंत समें भ्रम सिज्झियव ॥ दोहा ॥ गिद्धिनि कौं फल मास दियो नृपके नैन बचाय ॥ देह सहित बैकुंठ को पहुंचे संभरि राय ॥ छप्पै ॥ चामंड राय चलाय जाय कालिंजर बैठिव ॥ दरवाजे करि बंद राज गढ भीतर पैठिव ॥ पाछे लखि हाहिमांग गो घाय लरन सूरह ॥ पकरि लिये परिमाल लूटि ले चले हजूरह ॥ परिहार संग साथी सहित कर बिशेष रण रिझियव ॥ तिसरे दिवस मध्यान धरि चहुं आनतें मिज्झियव ॥ छंद पद्धरी ॥ चामंड जीति परिमाल लाय परिहार साथ सब ही सिपाह ॥ भयेच कियतिलक पग पठक भूमि ॥ लीने सुने जे रु बासु भूमि ॥ लीनें सु लूटि अनेक दाम ॥ अन्नेक बाजि अन्नेक गाम ॥ अन्नेक पील डील विशान ॥ अन्नेक शस्त्र अन्नेक कमान ॥ भूषण अनेक नगरव चित लोल ॥ अन्नेक बसन लीन्हें अमोल ॥ अन्नेक बान अन्नेक तोप ॥ अन्नेक खजाने लिये गोप ॥ पंचास कोर रोकंत दाम ॥ पंचा-

सक्कोर पाषान पाम॥ मुक्का सु वास भूषन सजोर॥ पं-
चास क्कोर को भौर जोर॥ हाथी पचास गाजंत मस्त।
घोडा हजार हक्की स हस्त॥ कर हासु तीनि हज्जारली-
न।पाल की तीस सुंदर नवीन॥ रथ साठ सात घुर वहल-
संग॥ खाटक अनेक बाटक प्रसंग॥ सत कोटि दर्विक-
हुं नहिं संभार॥ चामंड जीति दाहिमा सार॥ धरि माल
माल सब संग सूर॥ प्रथी राज जाय पहुंचे हजूर॥ की-
नी संग्राम चहुं आन काज॥ लीनो सु पकरि चंदेल रा-
सव सूर माल बागद वताय॥ चंदेल राय कौले मिला-
य॥ चहुं आन राय के पारि पाय॥ उन पकरि बाहु उर-
सों लगाय॥ बुल्लाय दाहिमा हुकम कीन॥ घायल न ढुं-
ढि लावौ सजीन॥ के मास राउ आय सु प्रमानि॥ देखं-
त खेत मारंत मानि॥ सव देख सूर सामंत वीर॥ जेस-
जी सिमाये घाव धीर॥ जिन के सु देह छुटि गये प्रान॥
तिन की सु काज किरया समान॥ सब सूर मेघ डंबर
निहार॥ घुर वहल रथनि में चढि विचार॥ जरखमी अंन-
क घायल जितेक॥ जिन की जु करत सेवा अनेक॥ केमा-
स कन्ह पज्जून जेत॥ भौंहा चंदेल चामंड चेत॥ लक्ख-
न बघेल सारंग सूर॥ अचले स चंद पुंडीर पूर॥ गोइंद
राय गहलौत साज॥ नवलेस और विंझरा राज॥ हंवीर वी-
र गंभीर पाय॥ विलहना सूर हाहुली राय॥ धामंद सुधार
नरसिंह सार॥ पाल्हन पमार खेता खगार॥ सामंत सूर
जे नाम लीन॥ जरंद सूर सारन सजीन॥ जितनेक सूर आ-
ये सु काम॥ सुनिये वराज तिनके सु नाम॥ संग्मि राय-
परिहार पीप॥ निड्डर हु राय सारबुल समीप॥ अना राय

होक चाटा नरेस॥ वीर सिंह वीर चामंड सुदेस॥ हरि चं-द मलय मी रूप राज॥ खीची सुरेख तारेख साज॥ पूरण सुमल्ल सुरखी वसंत॥ केतेक और जिनमें अनंत॥ सत्तह हजार धरं परी फौज॥ हज्जार तीन घायल संचौज॥ जेरहे सूर तिन कोच नाम॥ धन धाम तुरीरथ करी गाम॥ जे परे सूर रन करि हुलास॥ तिनके सुतादि तिय राख पास॥ अनेक लूट कों माल सांटि॥ सब दियो राज तिन्हकों सु वांटि॥ सब गाम पर गने बांटि दीन॥ तेरहे सूर समर निस जीन॥ परमाल राज को छांडि दीन॥ तुम रहो जाय कनवज कुलीन॥ दीली जो चले रण विजय पाय॥ सब सूर वीर देसनि वताय॥ दोहा॥ कछु वाहे पज्जूनको राखि महो बे थान॥ दंड छांडि परि माल को कीनो नृपति पयान॥ चाह्लं आन दिल्ली नगर कीनो नृपति प्रवेस॥ घर घर मंगल गावहीं आयो जीति नरेस॥ संक्रिम राय कुमार को बोलि हजूर नरेस॥ हय गय मनि मानिक व्रकस अध आसन अध देस॥ और सूर सामंत सब घर दनाम पहुँचाय॥ हुय प्रसन्न वैठौ तखत सो वह संभरिराय॥ याको सुनि कछु कीजिये यथा शक्ति सनमान॥ कवहुं ख्यारन आवही पांच पचास प्रमान॥ जो नंदय कछु सुनि बिथा होय न कवहूं जीत॥ बढ़ कलेश पीडा वढ़े रचै ने चंद सुगीत॥ आल्ह खंड पूरण भयो कह्यो चंद कविराय॥ पढ़ै सुनै सीखै रहै तांको सुभट सहाय॥

इति श्री कवि चंद विरचित आल्ह खंड: संपूर्ण: संवत १९३१